मौला अ़ली के फ़ज़ाइल

कुरान व अहादीस की रौशनी में

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

मौला अ़ली के फ़ज़ाइल

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

मदार बुक सेलर
मकनपुर शरीफ़ (कानपुर)
9695661767

नाम किताब- मौला अ़ली के फ़ज़ाइल

मुअल्लिफ़- डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

इशाअ़त- जनवरी-2025 (1446) हिजरी

कम्पोज़िंग- अमन & ज़ैनुल आ़बदीन

क़ीमत-250 रुपये

नाशिर- सय्यद ज़हीरउद्दीन (मदार बुक सेलर)

-: मिलने का पता :-

मदार बुक सेलर
मकनपुर शरीफ़
कानपुर (U.P)
Mob- 9695661767

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

–: बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :–

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊजू बिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सय्यिआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादिया लहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू ०

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है जिसने अपनी रह़मत और मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ व तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं है जो उसकी ह़म्दो सना न करता हो और हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है।

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला और हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और दुरुदो सलाम हो रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैह वसल्लम) पर जो ज़ाहिर

व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐ़बो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो आ़लम में उजाला है अल्लाह तआ़ला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे व जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब को औसाफ़ व अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है

अल्लाह तआ़ला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अहले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अहले बैत की निजात का ज़रिया होंगे व हर आफ़त व मसाइब के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुतह्रात और आपकी आल व असहाब और तमाम औलिया -ए-किराम व सूफ़िया-ए-इ़ज़ाम पर और उन पर जो अल्लाह तआ़ला के मुक़र्रब व मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

अलह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन अल्लाह तअ़ाला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसकी तौफ़ीक़ से मुझ ह़क़ीर सरापा तक़सीर को ये किताब लिखने की सअ़ादत हासिल हुई हालाँकि मैं इसके क़ाबिल न था मगर मेरे रब ने अपने महबूब सरकारे दो अ़ालम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के नालैने पाक के सदक़े व ज़ेरे इ़नायत और अहले बैत अत्ह़ार की मुहब्बत के सदक़े व ज़ेरे इ़नायत हमें इस शरफ़ से बहरेयाब फ़रमाया व अ़ताये मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम व करम हज़रत ग़ौसुल आज़म अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु व फ़ैज़े रुहानी ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ व तमाम आले रसूल व नज़रे करम पीरो मुर्शिद हज़रत सय्यद फैज़ हसन सफ़वी साहब सफ़ीपुर शरीफ़ व बरकात जुमला औलिया-ए-किराम, सूफ़िया-ए-इज़ाम व बुजुर्गाने दीन की इ़नायते करम से मुझे इस किताब की तालीफ़ करने की सअ़ादत हासिल हुई।

इस किताब की तालीफ़ का मक़सद व सबब ये है कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की क़दरो मन्ज़िलत व मक़ामो मरतबत को बाअ़ज़ लोग तख़फ़ीफ़ करते हुये कम दर्जे के ज़िमन में लेते हैं और दिलों में उनकी मुहब्बत व शानो अ़ज़मत को वो मक़ाम नहीं देते कि जिस शायाने शान के वो सज़ावार हैं हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की पाक व ताहिर ज़ात अ़ज़ीम शानो अ़ज़मत व क़दरो मन्ज़िलत व आअ़ला सिफ़ात की हामिल है ये शराफ़त व अ़ज़मत के बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं इनकी सीरते तय्यबा ऐन सीरते मुस्तफ़ा थी

इनके तमाम आअ़माल हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सीरत व सुन्नत के बेहतरीन नमूना थे व इनके अक़वालो अफ़आ़ल हिदायते मुस्तफ़ा की मानिन्द हिदायत आफ़रीन थे।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) महामिदे हसना (आपकी अच्छाइयाँ उ़म्दाह औसाफ़) और आपके फ़ज़ाइले जमीला बेशुमार हैं आपकी फ़ज़ीलत में जितनी अहादीस वारिद हुईं किसी और सहाबी की फ़ज़ीलत में वारिद नहीं हुईं आप अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल से इंतिहाई मुहब्बत करते थे और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल भी हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मुहब्बत करते थे आप शराफ़ते नसब में बहुत आ़ली थे हज़रत अ़ली की माँ फ़ातिमा बिन्ते असद थीं और असद हाशिम के बेटे थे इनकी माँ पहली हाशमियाँ थीं कि जिनसे हज़रत अ़ली की विलादत हुई हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पिदर और मादर दोंनों तरफ़ से हाशमी हैं हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम (अ़लैहिमुस्सलाम) रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के चचाज़ाद भाई हैं। (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/82–14585)

इनके बाअ़द हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) और इनकी औलाद सब दोंनों तरफ़ से हाशमी हैं हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत अ़ली की वालिदा मुहतरमा फ़ातिमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के लिये फ़रमाया कि मेरी माँ के इन्तिक़ाल के बाअ़द वो ही मेरी माँ हैं जब अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) के यहाँ दाअ़वत होती तो वो हमको खाने पर बुलातीं और फ़ातिमा मेरे लिये

उसमें से कुछ बचाकर रखतीं ताकि मैं फिर खा सकूँ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के अफ़ज़ल मनाक़िब में से ये भी है कि हज़रत अ़ली की पैदाइश काअ़बे के अन्दर हुई रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) इब्तिदाये नबूवत में मक्का मुअ़ज़्ज़्मा की घाटियों की तरफ़ निकल जाते और मौला अ़ली भी आपके साथ नमाज़ के लिये जाते थे और वहाँ नमाज़ अदा करते थे हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर ईमान लाया हूँ और इनके साथ नमाज़ पढ़ता हूँ और इनका ताबेअ़ हूँ तो हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) ने कहा कि ऐ मेरे बेटे ये तुम्हें ख़ैर के सिवा कुछ और न बतायेंगे और ऐ मेरे बेटे तुम इनका साथ कभी न छोड़ना।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जब हिज़रत का इरादा फ़रमाया तो मौला अ़ली से फ़रमाया कि तुम मेरे बिस्तर पर सो जाओ तो हज़रत मौला अ़ली हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के लिये अपनी जान की कुर्बानी देने के लिये तैयार हो गये और रसूलुल्लाह के बिस्तर पर हज़रत अ़ली लेटे और आपने काफ़िरों को धोका दिया फिर चन्द रोज़ बाअ़द हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने भी हिजरत की और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हो गये।

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

9897626182, 9045442223

मौला अ़ली के मनाक़िब व फ़ज़ाइल

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के बेशुमार फ़ज़ाइल हैं कि जिनका शुमार नहीं किया जा सकता अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली बिन हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) को हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दुनिया व आख़िरत में अपना भाई क़रार दिया जंग में हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ जिबराईल व मीकाइल (अ़लैहिमस्सलाम) होते थे हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और फ़रमाया जिसका मैं मौला हूँ अ़ली भी उसका मौला है और फ़रमाया कि मेरे बाअ़द मौला अ़ली तमाम मुसलमानों के वली हैं।

आपकी कुन्नियत अबुल हसन थी आप हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के दामाद और चचाज़ाद भाई हैं आप पहले ख़लीफ़ा हैं जो बनी हाशिम में से हुये आप ही सबसे पहले ईमान लाये और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ सबसे पहले नमाज़ पढ़ी और आप सिवाए तबूक के हर जंग में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हमराह शरीक रहे और कई मर्तबा खुद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने मौला अ़ली को झन्डा अ़ता फ़रमाया और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि जिसने अ़ली को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा तो उसने मुझसे

बुग्ज़ रखा जिसने अ़ली से मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की जिसने अ़ली को गाली दी उसने मुझे गाली दी जिसने अ़ली को दोस्त रखा उसने मुझे दोस्त रखा जिसने अ़ली से दुश्मनी की तो उसने मुझसे दुश्मनी की जिसने अ़ली की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की, जिसने अ़ली की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की, अ़ली का दोस्त अल्लाह का दोस्त अ़ली का दुश्मन अल्लाह का दुश्मन और अ़ली जिधर का रुख़ करें हक़ का रुख़ भी उधर को हो जाये और अ़ली व कुरान का चोली दामन का साथ है और अ़ली का ज़िक्र इ़बादत है और अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है।

तमाम सहाबा सितारों की मानिन्द हैं मगर तमाम सहाबा में हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) सबसे अफ़ज़ल हैं रसूलुल्लाह के भाई अ़ली, रसूलुल्लाह की औलाद के बाप अ़ली, तमाम मुसलमानों के सरदार अ़ली मुत्तक़ीन के इमाम अ़ली जन्नत के सरदार अ़ली, हौज़े कौसर से मुनाफ़िक़ीन को भगाने वाले अ़ली, एक ही नूर एक ही मिट्टी से तख़लीक़ रसूलुल्लाह व अ़ली रोज़े क़यामत हम्द का झन्डा पकड़ने वाले अ़ली, जन्नत में रसूलुल्लाह के साथ सबसे पहले दाख़िल होने वाले अ़ली, रसूलुल्लाह के बाअ़द सबसे बड़े अ़ालिम अ़ली रसूलुल्लाह इ़ल्म का शहर तो दर‘वाज़ा अ़ली रसूलुल्लाह हिकमत का घर तो दर‘वाज़ा अ़ली और हालते जनाबत मस्जिद में दाख़िल होने वाले अ़ली कुरान और हक़ के साथ पुलसिरात की बुलन्दियों पर खड़े होकर मुनाफ़िक़ीन को पहचानने वाले अ़ली, रसूलुल्लाह जिसके मौला हैं उसके मौला अ़ली, तमाम मुसलमानों के वली अ़ली, दीन की वज़ाहत करके उम्मत तक पहुँचाने वाले अ़ली और ख़ैबर का दरवाज़ा उठाने वाले अ़ली हक़ व बातिल में इम्तियाज़ करने की

सलाहियत रखने वाले अ़ली और कुरान की तावील पर क़िताल करने वाले अ़ली अल्लाह तआ़ला को पहचानने वाले अ़ली, रोज़े क़यामत इज़्ज़त व इकराम पाने वाले अ़ली सबसे पहले ईमान लाने वाले अ़ली रसूलुल्लाह के साथ नमाज़ पढ़ने वाले अ़ली, मग़फ़िरत का दर'वाज़ा अ़ली, लोगों के साथ इन्साफ़ करने वाले अ़ली, यहूदियों का तौरत से फ़ैसला करने वाले अ़ली, एक ही नस्ल से रसूलुल्लाह और अ़ली, इस्लाम की तफ़्सील बताने वाले अ़ली, इ़ल्म व हिकमत का खज़ाना अ़ली रसूलुल्लाह के बाअ़द सलूनी कहने वाले सिर्फ़ अ़ली, ईमान के मीनारे और हिदायत के अ़लम अ़ली सूरह फ़ातिहा की तफ़्सीर में 70 ऊँटों को किताबों से भरने वाले अ़ली, मुश्किल फ़िक़ई मसाइल को हल करने वाले अ़ली, हदीसों के सबसे ज़्यादा जानने वाले अ़ली, सबसे बड़े क़ाज़ी अ़ली

रसूलुल्लाह के बाअ़द सबसे ज़्यादा इल्मो हिकमत के जानने वाले अ़ली, अल्लाह तआ़ला की सबसे ज़्यादा माअ़रिफ़त रखने वाले अ़ली, सुन्नतों का सबसे ज़्यादा इ़ल्म रखने वाले अ़ली, मुहिब्बाने अहले बैत को जन्नत में ले जाने वाले अ़ली, ख़ैबर फ़तह करने वाले अ़ली, हिजरत के वक़्त रसूलुल्लाह के बिस्तर पर लेटने वाले अ़ली ख़ाना-ए-काअ़बा का बुत गिराने वाले अ़ली तबूक के अ़लावा हर जंग में झन्डा उठाने वाले अ़ली हक़ को वाज़ेह करने वाले अ़ली, राहे हिदायत पर ले जाने वाले अ़ली, सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाले अ़ली, जन्नत में चमकता हुआ नूरानी सितारा अ़ली, सिददीक़े अकबर अ़ली, पुलसिरात से गुज़ारने वाले अ़ली जन्नत तक़सीम करने वाले अ़ली जन्नत के दर'वाज़े पर लिखा हुआ है अ़ली, ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा के शौहर हैं अ़ली जन्नत के सरदार अ़ली हज़रत इमाम हसन और इमाम

हुसैन के वालिद अ़ली रसूलुल्लाह से गुस्से की हालत में गुफ़्तगू करने वाले अ़ली, हौज़े कौसर पर पानी पिलाने वाले अ़ली, उहद में सोलह 16 ज़ख़्म खाने वाले अ़ली, इ़ल्म में कमाल व अहादीस की समझ रखने वाले अ़ली रसूलुल्लाह के सबसे ज़्यादा करीब अ़ली, तमाम सहाबा किराम में सबक़त ले जाने वाले अ़ली, अल्लाह तआ़ला के यहाँ सबसे ज़्यादा खुसूसियत व मर्तबे वाले अ़ली, सबसे ज़्यादा शुजाअ़त वाले अ़ली, सबसे ज़्यादा सदक़ा ख़ैरात करने वाले अ़ली, व लोगों के साथ सबसे ज़्यादा शफ़क़त करने वाले अ़ली, जामे शहादत नोश फ़रमाने वाले अ़ली अल्लाह तआ़ला के महबूब बन्दे अ़ली कुरान में 300 आयात जिनकी शान में उतरी वो अ़ली 7 साल तक फ़रिश्तों ने जिन पर दुरुद भेजा वो अ़ली, कुरान व अहादीस में सबसे ज़्यादा जिनके फ़ज़ाइल बयान हुये वो अ़ली हैं।

अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल और उसके तमाम फ़रिश्ते जिनसे मुहब्बत करते हैं वो अ़ली जन्नत जिनकी मुश्ताक़ है वो अ़ली जिनके लिये सूरज पलटाया गया वो अ़ली, अल्लाह तआ़ला की बारगाह में जिनका ऊँचा मक़ाम है वो अ़ली और जिनकी मुहब्बत के सबब दोज़ख़ से निजात मिलेगी वो अ़ली, जिनकी मुहब्बत के सबब जन्नत मिलेगी वो अ़ली कुरान में जिनका ज़िक्र ख़ैर के साथ आया वो अ़ली, जिनकी मुहब्बत के सबब गुनाहों में तख़फ़ीफ़ होती है वो अ़ली अम्बियाकिराम की सिफ़ात जिनमें पाई जातीं वो अ़ली हैं अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के फ़रमान के मुताबिक़ रसूलुल्लाह के बाअ़द सबसे अफ़ज़ल मौला अ़ली।

रसूलुल्लाह के बाअ़द मौला अ़ली सबसे अफ़ज़ल हैं

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली मेरे बाअ़द तुम सबसे अफ़ज़ल हो। (कंजुल उ़म्माल–6/289-ह०-32958)

➡ हज़रत याअ़ला बिन मुर्राह रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली सिद्दीक़ हैं और ये सबसे अफ़ज़ल हैं। (इब्ने हजर–सवाइकुल मुहर्रिका–1/424)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/354-ह०-1072)

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि किसी शख़्स ने हज़रत अ़ली जैसी फ़ज़ीलत हासिल नहीं की और अ़ली अपने मानने वाले को सीधा रास्ता दिखाते हैं और उसे हलाकत से रोकते हैं। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/177)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि हम अहले मदीना में सबसे अफ़ज़ल हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को समझते थे। (इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/598)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/399-ह०-1033,1097)

–: ख़साइसे अ़ली :–

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु

से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली मैं तुम्हारे ऊपर ग़ालिब हूँ नबूवत की वजह से और तुम औरों पर ग़ालिब हो सात बातों की वजह से और तुम्हें सात फ़ज़ाइल ऐसे मयस्सर हैं जिनकी वजह से तुम्हारा कोई मुक़ाबला नहीं कर सकता और उन फ़ज़ाइल में तुम्हारे साथ कोई दूसरा शरीक नहीं है कुरैश में तुमने सबसे पहले इस्लाम कुबूल किया और तुम सबसे पहले ईमान लाये और तुम सबसे ज़्यादा अ़हद को पूरा करने वाले हो और तुम अल्लाह के हुक्म को सबसे ज़्यादा क़ायम करने वाले हो और तुम सबसे ज़्यादा रिआ़या के साथ इन्साफ़ करने वाले हो और तुम सबसे ज़्यादा मुक़द्दमा को समझने वाले हो और सबसे ज़्यादा साहिबे बसीरत हो और तुम सबसे ज़्यादा रिआ़या पर शफ़क़त करने वाले हो और तुम अल्लाह तआ़ला के यहाँ सबसे ज़्यादा खुसूसियत व मर्तबे वाले हो।

(कंजुल उ़म्माल–6/292-ह०-32994,32995)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-203,204)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/133)

➡ हज़रत अबू लैला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सिद्दीक़ तीन हैं एक हबीब नज्जार आले यासीन का वो मोमिन शख़्स जिसने कहा था ऐ मेरी क़ौम रसूलों की इत्तेबाअ़ करो दूसरा हिज़क़ील आले फ़िरऔ़न का वो मोमिन शख़्स जिसने कहा था क्या तुम उस शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है मेरा रब अल्लाह है और तीसरे हज़रत अ़ली हैं जो इन सबसे बेहतर हैं।

(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/394-ह०-1117)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मैं बुर्राक पर सवार होऊँगा व मेरे चचा हज़रत हम्ज़ा हज़रत सालेह (अ़लैहिस्सलाम) की ऊँटनी पर सवार होंगे व मेरी बेटी सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) उज़्बा पर सवार होगी और हज़रत अ़ली जन्नत की ऊँटनी पर सवार होंगे और हज़रत अ़ली के हाथ में हम्द का झन्डा होगा और वो ऐअ़लान कर रहे होंगे ''ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' तो लोग कहेंगे कि ये कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता है या फिर कोई नबी या रसूल है चुनांचा एक फ़रिश्ता उन्हें जवाब देगा कि ऐ लोगो ये कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता नहीं है और न ही नबी व रसूल हैं और न अ़र्श उठाने वाले फ़रिश्ते हैं बल्कि ये सिद्दीक़े अकबर अ़ली बिन अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/78-ह०-36478)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली के बारे में मुझे पाँच चीज़ें अ़ता की गईं जो मुझे दुनिया और जो कुछ उसमें हैं उससे ज़्यादा महबूब हैं 1- रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ाला के हुजूर मैं अ़ली के साथ टेक लगाकर खड़ा होऊँगा यहाँ तक कि लोगों का हिसाब हो जायेगा 2- रोज़े क़यामत मेरा हम्द का झन्डा अ़ली के हाथ में होगा और आदम (अ़लैहिस्सलाम) और औलादे आदम इसके नीचे होंगे 3- अ़ली मेरे हौज़े कौसर के किनारे पर खड़े होंगे और मेरी उम्मत में से जिसे चाहेंगे उसे पानी पिलायेंगे 4- अ़ली मुझे अल्लाह अज़्ज़ा व जल तक ले जायेंगे (बतौर ख़िदमत गुज़ार) 5- अ़ली कभी भी अपने–

दीन से नहीं फिरेंगे और वो हमेशा पाक दामन रहेंगे। (अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/373-ह०-1127)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली मैंने तुम्हारे मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला से पाँच चीज़ों का सुवाल किया था जो मुझे अ़ता हुईं मैंने अल्लाह तआ़ला से सुवाल किया कि रोज़े क़यामत ज़मीन से निकलने वाला तू पहला शख़्स हो और मेरे साथ हो और तुम्हारे पास हम्द का झन्डा हो और वो तुम ही ने उठा रखा हो और तुम ही मेरी उम्मत को मेरे हौज़ से पानी पिलाओ और रब तआ़ला मेरी उम्मत को जन्नत में ले जाने का तुम्हें क़ायद बनादे और मेरे बाअ़द तुम तमाम मोमिनीन के वली हो और ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला ने मुझे अ़ता किया।।
(कंजुल उ़म्माल–7/68-ह०-36411)
(कंजुल उ़म्माल–7/77-ह०-36486)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली हिदायत के अ़लम ईमान के मीनारे और मेरे औलिया के इमाम और मेरे फ़रमां बरदारों के नूर हैं और रोज़े क़यामत मेरे झन्डे को उठाने वाले होंगे और अ़ली मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों की कुंजी हैं।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-206)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/400-ह०-1135)
(कंजुल उ़म्माल–7/78-ह०-36479)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा से फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैंने तुम्हारी शादी ऐसे शख़्स से की है कि जो सबसे पहले ईमान लाया और सबसे बड़ा आ़लिम है और सबसे बढ़कर हिल्म वाला है यानी सबसे ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला बुर्दबार, नरम दिल और साबिर है और तुम मेरी उम्मत की औ़रतों की सरदार हो ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर नज़र की तो दो शख़्सों को मुन्तख़ब फ़रमाया एक को तुम्हारा वालिद बनाया और दूसरे को तुम्हारा शौहर बनाया।
(मुस्नद अहमद–15/28-ह०-20185)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/229-ह०-537)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/286-ह०-32922)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/60-ह०-36355)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/132)

➡ हज़रत अबू ज़र, हज़रत हुज़ैफ़ा व हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) वो शख़्स हैं कि जो सबसे पहले ईमान लाये और क़यामत के दिन सबसे पहले मुझसे मुसाफ़ाह करेंगे और ये बड़े सिद्दीक़ हैं ये इस उम्मत के फ़ारुक़ हैं जो हक़ और बातिल में फ़र्क़ करेंगे और ये मुसलमानों के बड़े अमीर (हुक्म देने वाले हाकिम) हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/501-ह०-6051)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/85-ह०-14597)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/291-ह०-32990)

➡ हज़रत अ़ब्दुर्ररहमान बिन औफ़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं तुम्हें अपने अह्ले बैत के साथ नेकी और भलाई करने की वसीअ़त करता हूँ और मेरी तुमसे मुलाक़ात हौज़े कौसर पर होगी नीज़ फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम कि जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है तुम ज़रुर नमाज़ क़ायम करोगे और तुम ज़रुर ज़कात अदा करोगे वरना मैं तुम पर अपनी तरफ़ से एक ऐसा आदमी भेजूँगा जो तुम्हारे जंगजुओं की गरदनें मारेगा अ़ब्दुर्ररहमान फ़रमाते हैं कि हम लोग ये समझे कि अबू बक्र या उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) हैं लेकिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि वो ये हैं। (हाकिम–2/614-ह०-2559)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/183-ह०-14960)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/258-ह०-1050)

हज़रत अ़ली की रसूलुल्लाह से दायमी क़राबतदारी

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हें खुश ख़बरी हो कि तुम ज़िन्दगी में भी और बाअ़द मौत भी मेरे साथ हो। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/273-ह०-7067)
(कंजुल उ़म्माल–6/291-ह०-32981)

मौला अ़ली की इताअ़त रसूलुल्लाह की इताअ़त है

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने मेरी इताअ़त की उसने अल्लाह तअ़ाला की इताअ़त की और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह की नाफ़रमानी की और जिसने अ़ली की इताअ़त की उसने मेरी इताअ़त की और जिसने अ़ली की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की (हाकिम–अल मुस्तदरक-4/247-ह०-4617)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/290-ह०-32970)
(तबरी–रियाज़ुन्नज़रा–1/47)

जिसने मौला अ़ली को छोड़ा उसने रसूलुल्लाह को छोड़ा

➡ हज़रत इब्ने उ़मर व अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली जिसने तुझे छोड़ा उसने मुझे छोड़ा और जिसने मुझे छोड़ा उसने अल्लाह को छोड़ा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/250-ह०-4624)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/318-ह०-962)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/290-ह०-32971,32972)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का रास्ता हक़ व हिदायत का रास्ता है

➡ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी व अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अम्मार जब तू देखे कि अ़ली एक रास्ते पर चल रहे हैं और लोग दूसरे रास्ते पर तो तुम हज़रत अ़ली का–

साथ देना वो तुम्हारी रहनुमाई हक़ व हिदायत के रास्ते की तरफ़ करेंगे। (कंज़ुल उ़म्माल–6/290-ह०-32969)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हक़ व बातिल में जुदाई करने वाले हैं

➡ नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे बाअ़द फ़ित्ने ज़ाहिर होंगे जब ऐसा हो तो तुम हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब अ़लैहिमस्सलाम का साथ देना क्योंकि वो हक़ व बातिल में जुदाई करने वाले होंगे।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/289-ह०-32961)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हक़ को वाज़ेह करने वाले हैं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया कि मेरे बाअ़द मेरी उम्मत में जब इख़्तिलाफ़ होगा तो ऐ अ़ली तुम उस वक़्त उनके सामने हक़ को वाज़ेह करोगे। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/248-ह०-4620)

मौला अ़ली हादी व महदी हैं

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर तुम हज़रत अ़ली से दोस्ती करोगे तो तुम अ़ली को हादी व महदी (राहनुमा, हिदायत करने वाला) पाओगे और वो तुम्हें सीधे रास्ते पर ही चलायेंगे। (कंज़ुल उ़म्माल–6/290-ह०-32963)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/73-ह०-195)

अ़ली हिदायत के अ़लम और अल्लाह की रहमत के ख़ज़ानों की कुंजी हैं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली हिदायत के अ़लम ईमान के मीनारे और मेरे औलिया के इमाम और मेरे फ़रमां बरदारों के नूर हैं और रोज़े क़यामत मेरे झन्डे को उठाने वाले होंगे और अ़ली मेरे रब की रहमत के ख़ज़ानों की कुंजी हैं।

(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-206)

(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/400-ह०-1135)

(कंज़ुल उ़म्माल–7/78-ह०-36479)

मौला अ़ली को जिसने मज़बूती से थामा वो कभी गुमराह न होगा

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अनस अ़रब के सरदार को बुला लाओ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने पूछा कि क्या आप अ़रब के सरदार नहीं हैं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं औलादे आदम का सरदार हूँ और हज़रत अ़ली अ़रब के सरदार हैं फिर जब हज़रत मौला अ़ली आये तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अन्सार की जमाअ़त क्या मैं तुम्हें न बतलाऊँ कि अगर तुमने अ़ली को मज़बूती से थामा तो

कभी गुमराह न होगे पस तुम अ़ली से मेरी मुहब्बत की वजह से मुहब्बत करो और इनकी ताअ़ज़ीम व तकरीम करो क्योंकि जिबरईल अ़लैहिस्सलाम ने मुझसे ये कहा है और जो कुछ भी मैंने कहा है वो अल्लाह के हुक्म से कहा है। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/251-ह०-4626)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/105-ह०-14682)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14753)
(कंजुल उ़म्माल–6/293-ह०-14682)
(कंजुल उ़म्माल–7/74-ह०-36448)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/377-ह०-2683)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/90-ह०-2749)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/738-ह०-1468)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/63)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/129)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/72)

➡ हज़रत जरी बिन कुलैब आ़मिरी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) सिफ़्फ़ीन की जानिब र'वाना हुये तो मैं मदीना मुनव्वरा आ गया क्योंकि ये लड़ाई मुझे पसंद नहीं थी फिर मैं मदीना में उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम किन लोगों में से हो तो मैंने कहा कि मैं कूफ़ा वालों में से हूँ फिर आपने पूछा कि तुम यहाँ किस मक़सद से आये हो मैंने कहा कि हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम सिफ़्फ़ीन की जानिब र'वाना हुये हैं जबकि ये लड़ाई मुझे अच्छी नहीं लग रही है इसलिये मैं यहाँ चला आया फिर आपने मुझसे पूछा क्या तुमने हज़रत अ़ली की बैअ़त की है तो मैंने कहा जी हाँ फिर आपने फ़रमाया कि तुम लौट जाओ–

और हज़रत अ़ली के लश्कर में शरीक हो जाओ खुदा की क़सम न अ़ली खुद गुमराह हैं और न ही उनके साथ रहने वाला गुमराह हो सकता है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/280-ह०-4680)
(इब्ने अबी शैबा–9/520-ह०-32786)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं कभी गुमराह नहीं हुआ और न ही गुमराही की तरफ़ मुझे लाया गया और मैं अपने रब की वाज़ेह दलील पर हूँ जो रब तआ़ला ने अपने महबूब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये क़ायम की थी और मेरे लिये भी वाज़ेह फ़रमाई थी और मैं बिला शुबा सीधे रास्ते पर हूँ। (कंजुल उ़म्माल–7/82-ह०-36499)

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली खुद भी हिदायत याफ़्ता हैं और हिदायत देने वाले भी हैं और ये तुम्हें सिराते मुस्तक़ीम पर क़ायम रखेंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/282-ह०-4685)

–: ईमाने अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर ज़मीनो आसमान के तराजू को एक जानिब और हज़रत अ़ली के ईमान को तराजू को दूसरी जानिब रखा जाये तो अ़ली का ईमान भारी होगा (तबरी–रियाजुन्नज़रा-1/213)
(कंजुल उ़म्माल–6/292-ह०-32993)

सबसे पहले ईमान लाने वाले व नमाज़ पढ़ने वाले मौला अ़ली हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास व ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने सबसे पहले मेरे साथ नमाज़ पढ़ी और सबसे पहले इस्लाम कुबूल किया वो हज़रत अ़ली हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1082-ह०-3435)
(मुस्नद अहमद–2/364-ह०-3062)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/229-ह०-4582)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/617-ह०-4865)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/86-ह०-14600)
(इब्ने अबी शैबा–9/507-ह०-32748)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/329-ह०-997,1040)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/26-ह०-02,03,04)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/292-ह०-32992)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/132)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/22)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/601)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुममें से हौज़े कौसर पर सबसे पहले आने वाला वो होगा जो सबसे पहले इस्लाम कुबूल करने वाला है और वो हज़रत अ़ली हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/265-ह०-6174)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/86-ह०-14599)
(इब्ने अबी शैबा–9/517-ह०-32775)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) व हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को पीर के दिन नबूवत दी गई (यानी आपकी बेअ़सत हुई ज़ाहिरी तौर पर वरना आप तो उस वक़्त भी नबी थे जब हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) पानी और मिट्टी के दरमियान में थे) और मंगल के दिन हज़रत अ़ली इस्लाम लाये। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/231-ह०-4587)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/302-ह०-442)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/410)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर पीर के दिन वही नाज़िल हुई और हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने मंगल के दिन नमाज़ अदा की
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1081-ह०-3728)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/230-ह०-4584,4586)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/68-ह०-36407)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/598)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/22)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के नबी होने को सिवाए मेरे किसी ने नहीं जाना और मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के साथ अल्लाह तआ़ला की उस वक़्त इ़बादत की जब उम्मत में से किसी ने इ़बादत नहीं की थी और मैं उस वक़्त छः या सात साल का था।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/587-ह०-7427)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/302-ह०-443)

➡ हज़रत अम्र बिन मैमून (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत करते हैं कि हज़रत खदीज़ा (रज़ि-अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) के बाअ़द लोगों में सबसे पहले हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ईमान लाये।
(मुस्नद अहमद–3/331-ह०-3062)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/109-ह०-14696)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैं वो पहला शख़्स हूँ जिसने रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के साथ सबसे पहले नमाज़ पढ़ी। (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/87-ह०-14607)

➡ हज़रत अबू ज़र, हज़रत हुज़ैफ़ा व हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) वो शख़्स हैं कि जो सबसे पहले ईमान लाये और क्यामत के दिन सबसे पहले मुझसे मुसाफ़ाह करेंगे और ये बड़े सिद्दीक़ हैं ये इस उम्मत के फ़ारुक़ हैं जो हक़ और बातिल में फ़र्क़ करेंगे और ये मुसलमानों के बड़े अमीर (हुक्म देने वाले हाकिम) हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/501-ह०-6051)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/85-ह०-14597)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/291-ह०-32990)

➡ हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं मैं अबू बक्र से पहले ईमान लाया व उनके इस्लाम कुबूल करने से पहले इस्लाम कुबूल किया। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/21)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/82-ह०-36497)

-: सबक़त ले जाने वाले हज़रत अ़ली :-

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास व ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबक़त ले जाने वाले तीन हैं हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ (उन पर ईमान लाकर) सबक़त ले जाने वाले यूशाअ़ बिन नून हैं हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले साहिबे यासीन हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं। (मजमउज़्ज़वाइद-9/85-ह०-14598) (तबरानी-मुअ़जम कबीर-11/93-ह०-11152)

रसूलुल्लाह व हज़रत अ़ली पर सात साल तक फ़रिश्तों ने दुरुद भेजा

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया फ़रिश्तों ने मुझ पर और हज़रत अ़ली पर सात साल तक दुरुद भेजा किसी इन्सान को सलाम करने से पहले। (तबरी-रियाजुन्नज़रा-1/42) (कंजुल उ़म्माल-6/291-ह०-32989)

रसूलुल्लाह व हज़रत अ़ली एक ही नूर से हैं

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं और अ़ली एक

ही नूर से हैं ख़िल्क़ते आदम (अ़लैहिस्सलाम) से चौदह (14) हज़ार साल पहले मैं और अ़ली अल्लाह तआ़ला के सामने नूर थे फिर जब आदम (अ़लैहिस्सलाम) को पैदा किया गया तो अल्लाह तआ़ला ने उस नूर को दो हिस्सों में तक़सीम किया एक हिस्सा मैं हूँ और दूसरा हिस्सा अ़ली हैं। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/41)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/374-ह०-1130)

रसूलुल्लाह व हज़रत अ़ली एक ही नस्ल से हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर व हज़रत जाबिर (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं और अ़ली एक ही नस्ल से हैं जबकि लोग मुख़्तलिफ़ नस्लों से हैं और एक रिवायत में है कि ऐ अ़ली लोग मुख़्तलिफ़ नस्लों से हैं और मैं और तुम एक ही नस्ल से हैं। (हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/82-ह०-14582)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/50-ह०-6888)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/288-ह०-32940)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों का शजरा (नसब) अलग अलग है लेकिन मेरा और अ़ली का शजरा एक है। (कंजुल ऊ़म्माल–6/288-ह०-32941)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420,432)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु) से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने हर नबी की औलाद को उसकी नस्ल में रखा और मेरी औलाद को अ़ली की नस्ल में रखा। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/307-ह०-2564)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32889)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/424)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला ने हर नबी की जुर्रियत उसकी सुल्ब से जारी फ़रमाई लेकिन मेरी जुर्रियत हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की सुल्ब से चलेगी। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/35-ह०-2630)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/196-ह०-15013)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/526)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/124)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/54)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मग़फ़िरत का दर‘वाज़ा हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मग़फ़िरत का दर‘वाज़ा हैं जो इसमें दाख़िल हुआ वो मोमिन है और जो इससे निकल गया वो काफ़िर है।
(कंजुल उ़म्माल–6/285-ह०-32907)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/425)

अल्लाह तआ़ला ने दो लोगों को मुन्तख़ब फ़रमाया

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा से फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैंने तुम्हारी शादी ऐसे शख़्स से की है कि जो सबसे पहले ईमान लाया और सबसे बड़ा आ़लिम है और सबसे बढ़कर हिल्म वाला है यानी सबसे ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला बुर्दबार, नरम दिल और साबिर है और तुम मेरी उम्मत की औ़रतों की सरदार हो ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन पर नज़र की तो दो शख़्सों को मुन्तख़ब फ़रमाया एक को तुम्हारा वालिद बनाया और दूसरे को तुम्हारा शौहर बनाया।

(मुस्नद अहमद–15/28-ह०-20185)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/229-ह०-537)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/286-ह०-32922)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/60-ह०-36355)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/132)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की पाँव की मिट्टी भी बरकत वाली है

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है–

अगर मुझे इस बात का ख़ौफ़ न होता कि मेरी उम्मत के बाअ़ज़ लोग वही कहना न शुरु कर दें जो ईसाइयों ने ईसा (अ़लैहिस्सलाम) के मुताअ़ल्लिक़ कहा था तो मैं आज तेरे मुताअ़ल्लिक ऐसी बात करता कि मुसलमानों में से जो कोई भी गुज़रता तो ऐ अ़ली तेरे पाँव की मिट्टी पकड़ता और उसके ज़रिये बरकत तलब करता यानी हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का मक़ाम व मर्तबा अगर लोगों को माअ़लूम हो तो वो आपके पाँव की मिट्टी पकड़ते और उससे बरकत हासिल करते।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/475-ह०-944)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के लिये सूरज का पलटना

➡हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की गोद में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपना सर मुबारक रखकर आराम फ़रमां रहे थे और उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर वही नाज़िल हो रही थी और मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने नमाज़े अ़स्र नहीं पढ़ी थी तो सूरज को आपके लिये लौटाया गया था जब आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की वही की कैफ़ियत दूर हुई तो उस वक़्त सूरज गुरुब हो चुका था तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये दुआ़ की कि ऐ अल्लाह अगर ये तेरी और तेरे रसूल की इताअ़त में लगा हुआ था तो सूरज को इसके लिये वापस लौटा दे तो सूरज गुरुब होने के बाअ़द फिर से तुलूअ़ हो गया।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/435)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/76)

मौला अ़ली सिद्दीक़े अकबर और फ़ारुक़े आज़म हैं

➡हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और उसके रसूल का भाई हूँ और मैं सिद्दीक़े अकबर हूँ और मेरे बाअ़द इस बात को कोई नहीं कहेगा सिवाए झूटे शख़्स के और तहक़ीक़ मैंने लोगों से सात साल पहले नमाज़ पढ़ी है और मैं अबू बक्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से पहले ईमान लाया और उनके इस्लाम कुबूल करने से पहले इस्लाम कुबूल किया। (इब्ने माजा–सुनन–1/73-ह०-120)
(इब्ने अबी शैबा–9/507-ह०-32747)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/32-ह०-07)
(कंजुल उ़म्माल–7/65-ह०-36389)
(कंजुल उ़म्माल–7/82-ह०-36497)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/21,23)

➡ हज़रत अबू ज़र, हज़रत हुज़ैफ़ा व हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) वो शख़्स हैं कि जो सबसे पहले ईमान लाये और क़यामत के दिन सबसे पहले मुझसे मुसाफ़ाह करेंगे और ये बड़े सिद्दीक़ हैं ये इस उम्मत के फ़ारुक़ हैं जो हक़ और बातिल में फ़र्क़ करेंगे और ये मुसलमानों के बड़े अमीर (हुक्म देने वाले हाकिम) हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/501-ह०-6051)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/85-ह०-14597)
(कंजुल उ़म्माल–6/291-ह०-32990)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मैं बुर्राक पर सवार होऊँगा और मेरे चचा हज़रत हम्जा हज़रत सालेह (अ़लैहिस्सलाम) की ऊँटनी पर सवार होंगे और मेरी बेटी सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) उ़ज़्बा पर सवार होगी और हज़रत अ़ली जन्नत की ऊँटनी पर सवार होंगे और हज़रत अ़ली के हाथ में हम्द का झन्डा होगा और वो ऐअ़लान कर रहे होंगे ‘‘ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह’’ तो लोग कहेंगे कि ये कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता है या फिर कोई नबी या रसूल है चुनांचा एक फ़रिश्ता उन्हें जवाब देगा कि ऐ लोगो ये कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता नहीं है और न ही नबी व रसूल हैं और न अ़र्श उठाने वाले फ़रिश्ते हैं बल्कि ये सिद्दीक़े अकबर अ़ली बिन अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/78-ह०-36478)

➡ हज़रत याअ़ला बिन मुर्राह रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली सिद्दीक़ हैं और ये सबसे अफ़ज़ल हैं। (इब्ने हजर–सवाइकुल मुहर्रिका–1/424)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/354-ह०-1072)

➡ हज़रत अबू लैला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि सिद्दीक़ तीन हैं एक हबीब नज्जार आले यासीन का वो मोमिन शख़्स जिसने कहा था ऐ मेरी क़ौम रसूलों की इत्तेबाअ़ करो दूसरा हिज़क़ील आले फ़िरऔ़न का वो मोमिन शख़्स जिसने कहा था कि क्या तुम उस शख़्स को क़त्ल करना

चाहते हो जो कहता है मेरा रब अल्लाह है और तीसरे हज़रत अ़ली हैं जो इन सबसे बेहतर हैं।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/394-ह०-1117)

–: मौला अ़ली के पाँच फ़ज़ाइल :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली के बारे में मुझे पाँच चीज़ें अ़ता की गईं जो मुझे दुनिया और जो कुछ उसमें हैं उससे ज़्यादा महबूब है 1- रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर मैं अ़ली के साथ टेक लगाकर खड़ा होऊँगा यहाँ तक कि लोगों का हिसाब हो जायेगा 2- रोज़े क़यामत मेरा हम्द का झन्डा अ़ली के हाथ में होगा और आदम (अ़लैहिस्सलाम) और औलादे आदम इसके नीचे होंगे 3- अ़ली मेरे हौज़े कौसर के किनारे पर खड़े होंगे और मेरी उम्मत में से जिसे चाहेंगे उसे पानी पिलायेंगे 4- अ़ली मुझे अल्लाह अज़्ज़ा व जल तक ले जायेंगे (बतौर ख़िदमत गुज़ार) 5- अ़ली कभी भी अपने दीन से नहीं फिरेंगे और हमेशा पाक दामन रहेंगे।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/373-ह०-1127)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली मैंने तुम्हारे मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ला से पाँच चीज़ों का सुवाल किया था जो मुझे अ़ता हुईं मैंने अल्लाह तआ़ला से सुवाल किया कि रोज़े क़यामत ज़मीन से निकलने वाला तू पहला शख़्स हो और मेरे साथ हो और तुम्हारे पास हम्द का झन्डा हो और वो तुम ही ने उठा रखा हो और तुम ही मेरी

उम्मत को मेरे हौज़ से पानी पिलाओ और रब तआ़ाला मेरी उम्मत को जन्नत में ले जाने का तुम्हें क़ायद बनादे और मेरे बाअ़द तुम तमाम मोमिनीन के वली हो और ये सब कुछ अल्लाह तआ़ाला ने मुझे अ़ता किया।
(कंजुल उ़म्माल–7/68-ह०-36411)
(कंजुल उ़म्माल–7/77-ह०-36486)

रोज़े क़यामत रसूलुल्लाह और हज़रत अ़ली की क़ब्र सबसे पहले शक़ होगी

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली रोज़े क़यामत सबसे पहले मेरी व तुम्हारी क़ब्र शक़ होगी और आप हम्द का झन्डा उठाकर अव्वलीन व आख़िरीन के सामने चलेंगे और तुम मेरे बाअ़द तमाम मोमिनीन के वली हो।
(कंजुल उ़म्माल–6/295-ह०-33047)

रोज़े क़यामत हम्द का झन्डा मौला अ़ली के हाथ में होगा

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत अ़ली से फ़रमाया कि रोज़े क़यामत तुम मेरे आगे आगे होगे और मुझे हम्द का झन्डा दिया जायेगा वो मैं तुम्हें दे दूँगा और तुम हौज़े कौसर पर लोगों को हटाने में मेरी मदद करोगे।
(कंजुल उ़म्माल–7/74-ह०-36455)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है

कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्यामत के दिन हज़रत अ़ली के हाथ में हम्द का झन्डा होगा।
(कंजुल ड़म्माल–7/78-ह०-36478)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्यामत के दिन मेरा हम्द का झन्डा हज़रत अ़ली के हाथ में होगा और आदम (अ़लैहिस्सलाम) और औलादे आदम इसके नीचे होंगे। (अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/373-ह०-1127)

मौला अ़ली की मर्ज़ी के बग़ैर कोई भी पुलसिरात से गुज़र न सकेगा

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कोई शख़्स पुलसिरात से न गुज़र सकेगा सिवाए इसके कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने उसके गुज़रने के लिये कहा हो।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/429)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/71)

रसूलुल्लाह और हज़रत अ़ली रोज़े क्यामत उम्मत पर हुज्जत होंगे

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं और अ़ली रोज़े क्यामत उम्मत पर हुज्जत होंगे। (कंजुल ड़म्माल–6/293-ह०-33013)

मौला अ़ली के लिये सफ़ेद मोतियों का कुब्बा गाढ़ा जायेगा

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़यामत मेरे लिये अ़र्श की दांयी जानिब सुर्ख़ याकूत का एक कुब्बा (गुम्बद, बुर्ज) गाढ़ा जायेगा और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के लिये अ़र्श की बांयी जानिब सब्ज़ याकूत का एक कुब्बा गाढ़ा जायेगा और हमारे दरमियान अ़ली के लिये सफ़ेद मोतियों का एक कुब्बा गाढ़ा जायेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/291-ह०-32987)
(तबरी–रियाज़ुन्नज़रा–1/161)

रोज़े क़यामत हज़रत मौला अ़ली की इ़ज़्ज़त व इकराम

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम को रोज़े क़यामत एक जगह जमाअ़ किया जायेगा फिर इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को बुलाया जायेगा और उनको सफ़ेद जन्नती कपड़े पहनाये जायेंगे फिर वो अ़र्श की दांयी जानिब खड़े होंगे और फिर जन्नत से मेरे हौज़ तक एक चश्मा फूटेगा और उस हौज़ में आसमान के सितारों की ताअ़दाद के बराबर चाँदी के बरतन होंगे और मैं उसमें से पिऊँगा और वुज़ू करूँगा फिर मुझे दो सफ़ेद जन्नती कपड़े पहनाये जायेंगे और फिर मैं अ़र्श–

की दांयी जानिब खड़ा होऊँगा और फिर ऐ अ़ली तुम्हें बुलाया जायेगा फिर तुम मेरे हौज़ से पिओगे और वुज़ू करोगे फिर तुम्हें दो सफ़ेद जन्नती कपड़े पहनाये जायेंगे और तुम मेरे साथ खड़े होगे और ख़ैर के लिये तुम्हें भी बुलाया जायेगा।

(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/172-ह०-3891)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तुम मेरे भाई हो जिस तरह हारुन (अ़लैहिस्सलाम) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के भाई हैं मगर मेरे बाअ़द कोई नबी नहीं ऐ अ़ली रोज़े क़यामत सबसे पहले मुझे बुलाया जायेगा और मैं अ़र्श की दांयी तरफ़ साये में खड़ा होऊँगा और मुझे जन्नती लिबास पहनाया जायेगा फिर बाक़ी नबीयों को बुलाया जायेगा और वो भी अ़र्श की दांयी तरफ़ खड़े हो जायेंगे और उन सब को भी जन्नती लिबास पहनाया जायेगा फिर सबसे पहले मेरी उम्मत से हिसाब होगा ऐ अ़ली तुम्हारे लिये ये खुश ख़बरी है कि मेरा रिश्तेदार होने की वजह से और मेरे नज़दीक तुम्हारी मन्ज़िलत होने की वजह से सबसे पहले तुम्हें बुलाया जायेगा और मेरा झन्डा तुम्हें दिया जायेगा जिसका नाम लिवाऐ हम्द होगा फिर तुम दोंनों क़तारों से जाओगे आदम अ़लैहिस्सलाम और औलादे आदम मेरे इसी झन्डे के नीचे साया लेंगे इस झन्डे की लम्बाई हज़ार साल की मुसाफ़त होगी उस झन्डे का ऊपर वाला हिस्सा सुर्ख़ याक़ूत का होगा और इसका दस्ता चाँदी का होगा व इसका नीचे वाला हिस्सा मोतियों का होगा व इस झन्डे की तीन पट्टियाँ नूर की होंगी उस पर तीन सतरें लिखी होंगी 'बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम' 'अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन' ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदु र्रसूलुल्लाह' और हर एक सतर की–

लम्बाई चौड़ाई एक हज़ार साल की मुसाफ़त के बराबर होगी फिर तुम उस झन्डे को लेकर चलोगे तुम्हारी दाँयी तरफ़ हसन अ़लैहिस्सलाम होंगे और बाँयी तरफ़ हुसैन अ़लैहिस्सलाम होंगे यहाँ तक कि तुम मेरे और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के दरमियान अ़र्श के साये में खड़े हो जाओगे फिर तुम्हें जन्नती लिबास पहनाया जायेगा फिर अ़र्श के नीचे से एक मुनादी आवाज़ लगाते हुये कहेगा हज़रत इब्राहीम आपके अच्छे वालिद और हज़रत अ़ली आपके प्यारे भाई हैं ऐ अ़ली तुम्हें खुश ख़बरी हो तुम्हें मेरे साथ लिबास पहनाया जायेगा और तुम्हें मेरे साथ ही बुलाया जायेगा और तुम मेरे साथ ही ज़िन्दा किये जाओगे। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/144)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/374-ह०-1131)
(कंजुल उ़म्माल–7/78-ह०-36481,36482)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मैं बुर्राक़ पर सवार होऊँगा व मेरे चचा हज़रत हम्ज़ा हज़रत सालेह (अ़लैहिस्सलाम) की ऊँटनी पर सवार होंगे व मेरी बेटी सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) उ़ज़्बा पर सवार होगी और हज़रत अ़ली जन्नत की ऊँटनी पर सवार होंगे और हज़रत अ़ली के हाथ में हम्द का झन्डा होगा और वो ऐअ़लान कर रहे होंगे ''ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'' तो लोग कहेंगे कि ये कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता है या फिर कोई नबी या रसूल हैं चुनांचा एक फ़रिश्ता उन्हें जवाब देगा कि ऐ लोगो ये कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता नहीं है और न ही नबी व रसूल हैं बल्कि ये सिद्दीक़े अकबर अ़ली बिन अबू तालिब अ़लैहिमस्सलाम हैं। (कंजुल उ़म्माल–7/78-ह०-36478)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हौज़े कौसर से पानी पिलायेंगे

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तुम ही मेरी उम्मत को मेरे हौज़ से पानी पिलाओगे। (कंजुल उ़म्माल–7/68-ह०-36411) (कंजुल उ़म्माल–7/77-ह०-36486)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली मेरे हौज़े कौसर के किनारे पर खड़े होंगे और मेरी उम्मत में से जिसे चाहेंगे उसे पानी पिलायेंगे।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/373-ह०-1127)

➡ हज़रत अबू हुरैरा व हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली क़यामत के दिन हौज़े कौसर पर मेरे साथी होंगे और उस हौज़ पर सितारों की ताअ़दाद के बराबर चाँदी के बरतन होंगे। (तबरानी–मुअ़जम औसत–1/185-ह०-188)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से मेरे हौज़े कौसर पर सबसे पहले आने वाला वो होगा जो तुममें से सबसे पहले इस्लाम कुबूल करने वाला है यानी हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/272-ह०-4662)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/265-ह०-6174)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/86-ह०-14599)
(इब्ने अबी शैबा–9/517-ह०-32775)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/21)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर सबसे पहले ईमान लाने वाले हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1083-ह०-3735)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/272-ह०-4663)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/406-ह०-12151)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/86-ह०-14600)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/263-ह०-4652)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/74-ह०-36451)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/20,21)

जन्नत में रसूलुल्लाह के बाअ़द सबसे पहले हज़रत अ़ली दाख़िल होंगे

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली मेरे बाअ़द जन्नत में सबसे पहले तुम दाख़िल होगे।
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/28)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से शिकायत की कि लोग मुझसे हसद करते–

हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि जन्नत में दाख़िल होने वाले चार मर्दों में से एक तुम हो और वो चार हैं मैं और तुम और हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम)।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-950)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/32-ह०-2624)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14751)

मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ही जन्नत व दोज़ख़ को तक़सीम करने वाले हैं

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली से फ़रमाया कि ऐ अ़ली तेरे सिवा कोई नहीं है जो रोज़े क़यामत जन्नत व दोज़ख़ को तक़सीम करे ऐ अ़ली तुम ही हो जो रोज़े क़यामत जन्नत व दोज़ख़ को तक़सीम करोगे।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/430)

जन्नत के दर‘वाज़े पर मौला अ़ली का नाम लिखा है

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आसमानों की तख़लीक़ से दो हज़ार साल पहले जन्नत के दर‘वाज़े पर लिखा गया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और हज़रत अ़ली रसूलुल्लाह के भाई हैं। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/52)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/378-ह०-1140)

हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने जन्नत के दर'वाज़े पर ये लिखा हुआ देखा 'लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह अ़लीयुन अख़ू रसूलिल्लाह' (अल्लाह तआ़ाला के सिवा कोई माअ़बूद नहीं मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं और हज़रत मौला अ़ली रसूलुल्लाह के भाई हैं।

(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/99-ह०-14656)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/296-ह०-5498)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/400-ह०-1134)
(कंजुल उ़म्माल–7/72-ह०-36435)

–: जन्नत हज़रत अ़ली की मुश्ताक़ है :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन शख़्स ऐसे हैं कि जन्नत खुद उनकी मुश्ताक़ है हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम और हज़रत अम्मार और हज़रत सलमान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा)।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/273-ह०-4666)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/426)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/598)

हज़रत मौला अ़ली जन्नत में चमकते हुये सितारे हैं

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि

वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली जन्नत में इस तरह चमकेंगे कि जिस तरह दुनिया वालों के लिये सुबह का सितारा चमकता है।
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/425)

जन्नत में हज़रत मौला अ़ली के लिये ख़ज़ाने हैं

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हारे लिये जन्नत में ख़ज़ाने हैं। (इब्ने अबी शैबा–9/507-ह०-32746)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/365-ह०-1101)

जन्नत में रसूलुल्लाह व हज़रत अ़ली एक साथ दाख़िल होंगे

➡हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली क़यामत के दिन जन्नत से एक ऊँट लाया जायेगा जिस पर मैं और तुम एक साथ सवार होंगे और तुम्हारा घुटना मेरे घुटने के साथ होगा और तुम्हारी रान मेरी रान के साथ साथ होगी यहाँ तक कि मैं और तुम एक साथ जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/346-ह०-1047)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/69-ह०-36416)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/163)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है

कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में होगा और तुम मेरे साथ जन्नत में दाख़िल होगे जहाँ मैं दाख़िल होऊँगा। (कंजुल उ़म्माल–6/296-ह०-33056)

जन्नत में रसूलुल्लाह और हज़रत अ़ली का महल आमने सामने

➡ हज़रत हुज़ैफ़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला ने मुझे ख़लील बनाया जैसे हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को ख़लील बनाया और जन्नत में मेरा महल और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का महल बराबर में होगा और हज़रत अ़ली का महल मेरे और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के सामने होगा खुश नसीबी एक हबीब की दो ख़लीलों के दरमियान।
(कंजुल उ़म्माल–6/291-ह०-32988)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/161)

जन्नत में जाना है तो अ़ली से मुहब्बत करो

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से जो शख़्स सुर्ख़ शाख़ को थामना चाहता हो जिसे अल्लाह तआ़ाला ने जन्नत में अपने हाथों से लगाया है तो उसे चाहिये कि वो अ़ली की मुहब्बत को मज़बूती से थाम ले।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/375-ह०-1132)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/181)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को ये बात पसंद हो कि वो दायमी जन्नत में ठहरे जिसमें मेरे रब ने खुद दरख़्त लगाये हैं तो वो मेरे अह्ले बैत की इक़्तिदा करे इसलिये कि वो मेरी औलाद हैं वो मेरी ही मिट्टी से पैदा किये गये हैं और उन्हें मेरी समझ और मेरा इ़ल्म दिया गया सो उन लोगों के लिये हलाकत है जो मेरे अह्ले बैत की फ़ज़ीलत को झुटलाये ऐ अल्लाह ऐसे लोगों का मेरी शफ़ाअ़त में हिस्सा न हो जो मेरे अह्ले बैत की फ़ज़ीलत को झुटलाये।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/404-ह०-34198)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स ये पसंद करता हो कि वो मेरी जैसी ज़िन्दगी गुज़ारे और मेरी जैसी मौत उसे मिले और दायमी जन्नत उसका ठिकाना हो तो वो हज़रत अ़ली से मुहब्बत करे क्योंकि वो तुम्हें न ही हिदायत से निकालेंगे और न ही किसी गुमराही में दाख़िल करेंगें।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/259-ह०-4642)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/646-ह०-4927)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14639)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/289-ह०-32956)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स हज़रत अ़ली से मुहब्बत करता है तो वो मुझसे मुहब्बत करता

है और जो शख़्स मुझसे मुहब्बत करता है वो अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करता है और जो अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा। (कंजुल उ़म्माल–7/60-ह०-36357)

हज़रत मौला अ़ली और उनका गिरोह जन्नती है

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) सुबह के वक़्त मेरे पास थे कि ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) तशरीफ़ लाये पस हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हारे लिये खुश ख़बरी है कि तुम और तुम्हारा गिरोह जन्नती है।

(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/175-ह०-6605)

(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/369-ह०-1115)

–: मुहिब्बाने अ़ली जन्नती :–

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली जन्नत उस शख़्स के लिये है जो तुमसे सच्ची मुहब्बत करता है और तुम्हारे बारे में सच बोलता है और हलाकत है उसके लिये जो तुमसे बुग्ज़ रखता है और तुम्हारे बारे में झूट बोलता है (अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/384-ह०-1162)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से हज़रत मौला अ़ली ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आपको कौन ज़्यादा महबूब है फ़ातिमा या मैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़ातिमा मुझे ज़्यादा महबूब है और तुम मुझे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो और तुम मेरे साथ हौज़े कौसर पर होगे जिससे रोज़े क़यामत लोग सैराब होंगे और मेरे हौज़ पर सितारों की ताअ़दाद के बराबर बर्तन होंगे और मैं और तुम और हसन व हुसैन व फ़ातिमा और अ़क़ील व जाअ़फ़र (अ़लैहिमुस्सलाम) जन्नत में एक दूसरे के सामने होंगे और तुम मेरे साथ होगे और तुम्हारे चाहने वाले सब जन्नत में होंगे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/717-ह०-7675)

अ़ली से मुहब्बत करने वाले जन्नत में अ़ली के पड़ोसी

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ऐसी खूबी इनायत की है जो अपने बन्दों में किसी को नहीं दी और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ऐसी ज़ीनत दी है जो अपने बन्दों में किसी को अ़ता नहीं की बेशक अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें ऐसा बनाया है कि न तुम दुनिया से कुछ लेते हो और न ही दुनिया तुमसे कुछ लेती है और तुम दुनिया से बे रग़बत रहते हो और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मसाकीन के लिये पसंद फ़रमाया और अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मसाकीन की मुहब्बत इनायत फ़रमाई और तुम्हें उनके क़रीब किया और आपके लिये अमानत मुक़र्रर की और तुम्हें उनका

इमाम बनाया व उनकी इत्तेबाअ़ तुम्हारी रज़ा के लिये बनाई और वो तुमको अपना पेशवा बनाकर खुश हैं तो खुश ख़बरी है उसके लिये जो तुमसे मुहब्बत करे और तुम पर सच बोले और तुम्हारी तस्दीक़ करे वो जन्नत में तुम्हारे साथी व तुम्हारे घर के पड़ोसी और तुम्हारे रफ़ीक़ होंगे और हलाकत है उसके लिये कि जो तुमसे बुग्ज़ रखे और तुम पर झूट बोले और जो लोग तुमसे बुग्ज़ रखते हैं और तुम पर झूट बोलते हैं तो अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि उनको क़यामत के दिन झूटों के खड़े होने की जगह पर खड़ा करे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/85-ह०-2157)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/126-ह०-14756)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/604)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ व अ़दावत रखने वाला दोज़ख़ी

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के काँधे पर हाथ रखकर फ़रमाया कि ऐ अल्लाह ये मेरा चचाज़ाद भाई है और मेरे लख़्ते जिगरों के वालिद हैं ऐ अल्लाह जो भी इससे बुग्ज़ व अ़दावत रखे तू उसे औंधा मुँह करके दोज़ख़ में डाल।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/420-ह०-5762)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/288-ह०-32944)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जुमाअ़ के दिन खुत्बे में इरशाद फ़रमाया ऐ लोगो मैं तुम्हें वसीअ़त करता हूँ कि हज़रत अ़ली से

मुहब्बत करो क्योंकि इनसे मुहब्बत मोमिन ही करता है और मुनाफ़िक़ इनसे बुग्ज़ रखता है पस जिसने इनसे मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा तो अल्लाह तआ़ला उसको अ़ज़ाब देगा।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/352-ह०-1066)

रसूलुल्लाह के बाअ़द मौला अ़ली सबसे बड़े आ़लिम हैं

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे बाअ़द उम्मत के सबसे बड़े आ़लिम हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं।
(कंजुल उ़म्माल–6/290-ह०-32974)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-202)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर खुश व राज़ी नहीं हो कि तुम्हारा ख़ाविन्द सबसे पहला मुसलमान और सबसे ज़्यादा इ़ल्म वाला है और बुर्दबारी में सबसे अफ़ज़ल और इस्लाम लाने में सबसे मुक़द्दम और खुदा की क़सम तुम्हारे दोंनों बेटे जन्नती नौजवानों के सरदार हैं। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/118)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/448-ह०-1346)
(कंजुल उ़म्माल–7/62-ह०-36270)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/634)

➡ ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा)

फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ फ़ातिमा मैंने तुम्हारा निकाह ऐसे शख़्स से किया है जो मेरी उम्मत में सबसे ज़्यादा इ़ल्म वाला और सबसे अ़ज़ीम बुर्दबार है यानी बर्दाश्त करने वाला साबिर है और सबसे ज़्यादा सुलह को मुक़द्दम रखने वाला है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/229-ह०-538)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/102-ह०-14669)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/84-ह०-14595,14596)
(इब्ने अबी शैबा–9/522-ह०-32794)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/70-ह०-36423)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा सलामुल्लाह अ़लैहा से फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैंने तुम्हारी शादी ऐसे शख़्स से की है कि जो सबसे पहले ईमान लाया और सबसे बड़ा आ़लिम है और सबसे बढ़कर हिल्म वाला है यानी सबसे ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला बुर्दबार, नरम दिल और साबिर है और तुम मेरी उम्मत की औ़रतों की सरदार हो ऐ फ़ातिमा क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि अल्लाह तआ़ाला ने ज़मीन पर नज़र की तो दो शख़्सों को मुन्तख़ब फ़रमाया एक को तुम्हारा वालिद बनाया और दूसरे को तुम्हारा शौहर बनाया।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/60-ह०-36355)
(मुस्नद अहमद–15/28-ह०-20185)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–20/229-ह०-537)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/286-ह०-32922)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/132)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं अह्ले मदीना में सबसे ज़्यादा इल्मे दीन के जानने वाले हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/405)

➡ हज़रत उ़बैदा फ़रमाते हैं कि मैं एक साल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की सुहबत में रहा फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की सुहबत में रहा तो मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द पर हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को इ़ल्मी ऐतबार से इस क़दर साहिबे फ़ज़ीलत पाया कि जैसे कोई मुहाजिर सहाबी किसी देहाती शख़्स पर फ़ज़ीलत रखता है।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/303-ह०-904)

➡ हज़रत अ़ब्दुल मलिक बिन अबू सुलेमान फ़रमाते हैं मैंने हज़रत अ़ता से पूछा क्या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के सहाबा में कोई शख़्स ऐसा भी था कि जो हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम से ज़्यादा इ़ल्म वाला हो आपने फ़रमाया नहीं अल्लाह की क़सम मैं किसी को नहीं जानता जो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बढ़कर इ़ल्म वाला हो।
(इब्ने अबी शैबा–9/516-ह०-32772)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/118)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को इ़ल्म में कमाल हासिल था

➡ हज़रत इब्ने अम्र बिन आ़स ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अयाश से पूछा कि लोग हज़रत अ़ली की तरफ़ क्यों झुक पड़े थे तो उन्होंने कहा कि हज़रत अ़ली को

इ़ल्म में बड़ा कमाल हासिल था और वो लोगों के साथ मुआ़मलात में भी बहुत अच्छे थे और क़दीमुल इस्लाम थे और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के दामाद थे व उन्हें अहादीस की समझ थी और सख़ावत उनकी तबीअ़त में थी (इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा-1/603)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को तन्ज़ील व तावील का इ़ल्म था

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के काँधे पर हाथ रखकर फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुमसे अ़दावत की जायेगी और झगड़ा किया जायेगा और तुम ईमान के ऐतबार से पहले मोमिन हो और सबसे ज़्यादा इ़ल्म रखते हो और सबसे ज़्यादा वाअ़दा वफ़ा करते हो और सबसे ज़्यादा दुरस्ती पर चलने वाले हो और लोगों पर सबसे ज़्यादा मेहरबान हो और तुम मेरे बाज़ू हो और मुझे गुस्ल देने वाले व दफ़न करने वाले हो और हर सख़्ती व परेशानी में आगे बढ़ने वाले हो और रोज़े क़यामत हम्द का झन्डा उठाये मुझसे आगे चलोगे और तुम हौज़े कौसर पर मेरे साथ होगे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) तन्ज़ील व तावील का इ़ल्म रखते हैं। (कंजुल उ़म्माल–7/64-ह०-36378)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को इ़ल्म से सैराब किया गया

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैंने

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज की या रसूलल्लाह आप मुझे वसीअ़त करें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला मेरा रब है और उस पर साबित क़दम रहो तो मैंने कहा कि अल्लाह तआ़ाला मेरा रब है और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है और उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ़ करता हूँ फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हें ये इ़ल्म मुबारक हो तुम इ़ल्म से भरपूर सैराब किये गये हो। (कंज़ुल उ़म्माल–7/87-ह०-36524)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इ़ल्म के एक हज़ार बाब सिखाये हैं और हर बाब मज़ीद हज़ार बाब खेलने वाला था।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/62-ह०-36372)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि इल्म को पाँच हिस्सों में तक़सीम किया गया जिनमें से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के चार हिस्से हैं बाक़ी सब लोगों का एक हिस्सा है।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/407)

मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को इ़ल्म के ख़ज़ानो से नवाज़ा गया

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हें इ़ल्म मुबारक हो मैं तुम्हें

इ़ल्म के ख़ज़ानों से नवाज़े जाने की खुश ख़बरी सुनाता हूँ। (अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/73-ह०-199)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/365-ह०-1099)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अपने सीना मुबारक की तरफ़ इशारा करते हुये फ़रमाया कि यहाँ उ़लूम का ख़ज़ाना जमाअ़ है काश मैं इसे उठाने वाले पालूँ (तो ये सारा ख़ज़ानाए इ़ल्म) उन्हें मुन्तकि़ल करदूँ
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–50/252)
(इहयाउल उ़लूम–उर्दू–1/199)
(इहयाउल उ़लूम–अ़रबी–1/96)

अहकामे फ़िक़्ा और हदीसों के सबसे ज़्यादा जानने वाले हज़रत अ़ली हैं

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से अ़र्ज़ किया गया कि ऐसी क्या बात है कि आप हदीस में रसूलुल्लाह के असहाब में सबसे ज़्यादा जानने वाले हैं तो मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब मैं हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से पूछा करता था तो आप मुझे बता देते थे और जब मैं ख़ामोश रहता तो आप खुद मुझे बताया करते थे।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/408-ह०-5913)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/68-ह०-36405)
(सयूती–तारीखे़ खुल्फ़ा–1/74)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/275)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/419)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम में इ़ल्म की कुव्वत पुख़्तगी, मज़बूती और इस्तिक़लाल मौजूद था और आप

अहकामे फ़िक़्ा व सुन्नत में माहिर थे और आप सबसे पहले इस्लाम लाये और आपकी बहादुरी बहुत मशहूर थी आप जंगी जुर्रात और माल की बख़्शिश में मुमताज़ थे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों का शजरा (नसब) अलग अलग है मगर मेरा व अ़ली का शजरा एक है। (कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32941)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420,432)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं हज़रत अ़ली सब लोगों से बढ़कर सुन्नत का इ़ल्म रखने वाले हैं। (सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/117)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/408)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/431)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं जब कोई हमसे मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की जानिब से कोई फ़तवा बयान करता तो हम कभी भी उसके ख़िलाफ़ काम नहीं करते थे और हम लोग ये बयान करते थे कि अह्ले मदीना में इ़ल्मे क़ज़ा के सबसे बड़े आ़लिम हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं। (कंजुल उ़म्माल–7/83-ह०-36506)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/275)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/431)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास व इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हुम) फ़रमाते हैं कि हम सब में मौला अ़ली बेहतरीन फ़ैसला करते हैं और हम लोग बाहम ये कहा करते थे कि मदीना में सबसे अच्छा फ़ैसला मौला अ़ली करते हैं और जब हज़रत अ़ली से कोई मसला पूछा जाता तो आप निहायत ही दुरस्त जवाब दिया करते थे अह्ले मदीना में अहकामे वरसा व तरका के मसाइल हल करने में अ़ली सबसे बड़े आ़लिम व दाना थे।
(सयूती–तारीखे़ खुल्फ़ा–1/175)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/133)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/431)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/405)

हज़रत मौला अ़ली सबसे ज़्यादा इ़ल्म व माअ़रिफ़त के हामिल हैं

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि ऐ अमीरुल मोमिनीन बेशक मैं आपको सबसे ज़्यादा इ़ल्म रखने वाला जानता हूँ और बेशक अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त आपके सीना–ए–अक़दस में सबसे बढ़कर है।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-212)

हज़रत अ़ली किताबुल्लाह व सुन्नते रसूल के सबसे ज़्यादा जानने वाले हैं

➡ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के मिम्बर मुबारक पर जब हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की बैअ़त ली जा रही थी तो उस वक़्त हज़रत खुज़ैमा बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने मिम्बर के सामने खड़े होकर अशआ़र पढ़े जिसका–

खुलासा ये है कि ''जब हमने हज़रत अ़ली की बैअ़त करली तो हमें जिन फ़ित्नों का ख़दशा है उनके लिये हज़रत मौला अ़ली काफ़ी हैं और हमने इनको लोगों की जानों से भी ज़्यादा क़रीब पाया है और ये किताबुल्लाह व सुन्नते रसूल को तमाम लोगों से ज़्यादा जानने वाले हैं और बेशक कुरैश आपकी गर्दे राह को भी नहीं पा सकते जब आप किसी दिन ताक़तवर घोड़े पर सवार होते हैं हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम में हर क़िस्म की भलाई मौजूद है जबकि दीगर कुरैश में वो तमाम खूबियाँ नहीं पाई जातीं''।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/235-ह०-4595)

रसूलुल्लाह इ़ल्म का शहर और अ़ली दर'वाज़ा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं इ़ल्म का शहर हूँ और अ़ली उसका दरवाज़ा है लिहाज़ा जो इस शहर में दाख़िल होना चाहता है वो बाबे अ़ली से आये। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/256-ह०-4637)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/65-ह०-11061)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/103-ह०-14670)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/15-ह०-106)
(कंजुल उ़म्माल–6/290-ह०-32975,32976)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/379)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–3/46)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/418)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/116)

रसूलुल्लाह हिकमत का घर और अ़ली दर'वाज़ा

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं हिकमत का घर हूँ और अ़ली उसका दर'वाज़ा है।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1077-ह०-3723)
(मिश्कात–3/536-ह०-6096)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/357-ह०-1081)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-3288)
(कंजुल उ़म्माल–7/75-ह०-36462)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/72-ह०-193)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/418)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–3/46)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/116)

जो शख़्स हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाहे अक़्दस से इ़ल्मो हिकमत व माअ़रिफत से फ़ैज़याब होने का तालिब हो तो उसे बाबे अ़ली से गुज़रना होगा बाबे अ़ली से गुज़रे बग़ैर बारगाहे मुस्तफ़ा से कोई फ़ैज़याब नहीं हो सकता और बाबे अ़ली अहले बैत अत्हार की सच्ची मुहब्बत व अ़क़ीदत से खुलता है और अल्लाह तआ़ाला की कुर्बत व रसाई और उसका फ़ज़्लो करम का हुसूल रहमते दो आ़लम हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और अहले बैत अत्हार की मुहब्बत से ही हो सकता है।

हिकमत के दस हिस्सों में नौ हिस्से हज़रत अ़ली को अ़ता हुये

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हिकमत को दस हिस्सों पर तक़सीम किया गया और हज़रत अ़ली को नौ हिस्से मिले हैं बाक़ी एक हिस्सा लोगों को दिया गया है और दसवाँ हिस्सा जो लोगों को मिला उसमें भी हज़रत अ़ली शरीक हैं और उस एक हिस्से के बारे में हज़रत अ़ली तमाम लोगों से ज़्यादा जानने वाले हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/291-ह०-32979)
(कंज़ुल उ़म्माल–67/76-ह०-36461)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/74-ह०-198)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/118)
(अल इस्तिआ़ब–3/1104)

रसूलुल्लाह के बाअ़द सिर्फ़ हज़रत अ़ली ने कहा 'सलूनी' मुझसे जो चाहो पूछलो

➡ हज़रत अबू तुफ़ैल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया मुझसे अल्लाह तआ़ला की किताब के बारे में कोई भी सुवाल करो कोई एक आयत भी ऐसी नहीं कि जिसके बारे में मुझे इ़ल्म न हो कि वो रात को नाज़िल हुई या दिन को मैदान में नाज़िल हुई या पहाड़ पर और मुझसे आसमानों के किनारों के बारे में पूछो मैं उन्हें ज़मीन के किनारों से बढ़कर जानता हूँ और अल्लाह तआ़ला की

क़सम तुम क़यामत तक जिस शैः के बारे में पूछोगे मैं तुम्हें उसके बारे में बताऊँगा पस एक शख़्स ने बैतुल माअ़मूर के मुताअ़ल्लिक़ पूछा तो हज़रत मौला अ़ली ने उसके बारे में उसे तफ़्सील से बता दिया।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-211,212)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/275)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/398)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/434)
(अल अज़रकी–अख़बारे मक्का–1/50)

➡ सईद बिन मुसय्यब बयान करते हैं कि लोगों में हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के सिवा कोई भी ये नहीं कहता था कि 'सलूनी' कि मुझसे जो पूछना चाहते हो पूछलो।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/365-ह०-1098)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/399)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/431)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/75)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/132)

➡ हज़रत अबू तुफ़ैल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि मैंने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को देखा कि वो मिम्बर पर खड़े हुये और आपने फ़रमाया कि मुझसे जो चाहो पूछलो इससे क़ब्ल कि तुम मुझसे पूछ न सको और मेरे बाअ़द मुझ जैसा शख़्स तुम्हें नहीं मिलेगा कि जिससे तुम पूछ सको रावी बयान करते हैं इब्ने कव्वाअ खड़े हुये और अ़र्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन कुरान की आयत "उड़ा कर बिखेर देने वाले की क़सम" (सूरह–ज़ारियात–51/01) से मुराद क्या है तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि

इससे मुराद बादल हैं फिर उन्होंने कहा कि नरम चलने वालीयों (सूरह–ज़ारियात–51/03) से मुराद क्या है तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया इससे मुराद कश्तियाँ हैं फिर उन्होंने कहा कि हुक्म से बाँटने वालियों (सूरह–ज़ारियात–51/04) से मुराद क्या है हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इससे मुराद फ़रिश्ते हैं यानी उन फ़रिश्तों की क़सम जो अल्लाह के हुक्म से मुख़्तलिफ़ काम करते हैं फिर उन्होंने कहा कि वो कौन है जिनके मुताअ़ल्लिक़ ये आयत है ''जिन्होंने अल्लाह की नेअ़मते (ईमान) को कुफ़्र से बदल डाला और उन्होंने अपनी क़ौम को तबाही के घेरे में उतार दिया (वो) दोज़ख़ है जिसमें वो झोंके जायेंगे और वो बुरा ठिकाना है'' (सूरह–इब्राहीम–14/28,29) तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि वो कुरैश के मुनाफ़िक़ीन हैं। (हाकिम–3/499-ह०-3736)

➡मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं बेशक अल्लाह तआ़ला ने जो भी आयत नाज़िल फ़रमाई मैं जानता हूँ कि वो कब और कहाँ नाज़िल हुई और किसके बारे में नाज़िल हुई अल्लाह तआ़ला ने मुझे समझदार दिल और खुश कलाम व शीरीं बयान से नवाज़ा है।
(कंजुल उ़म्माल–7/68-ह०-36404)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-211)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/275)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली अल्लाह तआ़ला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं तुम्हें क़रीब करूँ और तुम्हें ताअ़लीम दूँ ताकि तुम उसको महफ़ूज़ रखो इस पर ये

आयते करीमा नाज़िल हुई 'ताकि हम इस (वाक़्आ) को तुम्हारे लिये (यादगारे) नसीहत बनादें और महफ़ूज़ रखने वाले कान इसे याद रखें'' लिहाज़ा तुम्हारे ही वो कान हैं जो मेरे इ़ल्म को महफ़ूज़ रखेंगे''।
(सूरह–हाक़्क़ाह–69/12) (कंज़ुल उ़म्माल–7/87-ह०-36525)
हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ अ़ली मैंने अल्लाह तआ़ला से सुवाल किया कि वो तुम्हें याद करने वाले कान बनादे चुनांचा मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से जो भी बात सुनी उसे याद कर लिया और कभी नहीं भूला।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/87-ह०-36526)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/71-ह०-36426)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/76-ह०-210)

➡ क़ैस बिन सकन से मर'वी है कहते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मिम्बर पर तशरीफ़ लाये और फ़रमाया मैंने फ़ित्ने पर ग़लबा पा लिया अगर मैं तुम्हारे दरमियान मौजूद न होता तो अह्ले नहरवान व फ़ुलां फ़ुलां (फ़ित्ना परवर गिरोह) क़त्ल नहीं किये जा सकते थे और अल्लाह की क़सम अगर मुझे ये ख़दशा न होता कि तुम भरोसा करके सुस्त पड़ जाओगे और अ़मल तर्क कर दोगे तो मैं तुम्हें वो फ़रमाने नबवी (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ज़रुर सुनाता जो सर'वरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने तुम्हारे बारे में खुश ख़बरियाँ दी हैं रावी बयान करते हैं कि फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि तुम मुझसे सुवाल करो फिर फ़रमाया कि ख़बरदार मुझसे सुवाल करो और तुम

मुझसे अपने दौर से लेकर रोज़े क़यामत तक की जिस शैः के बारे में मुझसे सुवाल करोगे तो मैं तुम्हें उस शैः के बारे ज़रुर बताऊँगा इसी तरह अगर तुम मुझसे उस लश्कर के बारे में सुवाल करोगे कि जिसके सैंकड़ों लोग हिदायत पा गये और सैंकड़ों लोग गुमराह हो गये तो मैं तुम्हें उसके बारे में तफ़्सील से बताऊँगा एक शख़्स ने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन मुझे आज़माइश के बारे में बताइये हज़रत मौला अ़ली ने उसको तफ़्सील से बताया और इस तरह एक के बाद एक कई शख़्स खड़े हुये और आपसे सुवाल किया तो आपने हर एक सुवाल का तफ़्सील से जवाब दिया।
(इब्ने अबी शैबा–11/717-ह०-38889)
(इब्ने अबी शैबा–7/528-ह०-37734)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/83-ह०-36502)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-213)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/493-ह०-5272)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से उनकी ज़ात से बाबत सुवाल किया गया तो आपने फ़रमाया कि मुझे हर सुवाल के जवाब से नवाज़ा गया है।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-212)

हज़रत अ़ली सबसे बड़े क़ाज़ी और सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाले हैं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया अह्ले मदीना में हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम सबसे बड़े क़ाज़ी और सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाले हैं और वो हम सबसे ज़्यादा क़ज़ा के आ़लिम हैं।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/269-ह०-4656)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/404)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/275)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/133)

➡हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा से मर'वी है कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया कि हमारे सबसे बड़े क़ारी उबई बिन काअ़ब हैं और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) सबसे बड़े क़ाज़ी हैं और हज़रत मौला अ़ली सबसे ज़्यादा फ़ैसला करने की सलाहियत रखते हैं।
(बुख़ारी–सहीह–4/465-ह०-4481)
(नसाई–सुनन कुबरा–10/14-ह०-10928)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/580-ह०-5328)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/511-ह०-876)
(इब्ने अबी शैबा–8/807-ह०-30755)
(इब्ने अबी शैबा अ़रबी–6/138-ह०-30129)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/276)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-202)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/404)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं अह्ले मदीना में इ़ल्मे क़ज़ा के सबसे बड़े आ़लिम हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं।
(कंजुल उ़म्माल–7/83-ह०-36506)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/275)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/431)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास व इब्ने मसऊद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) फ़रमाते हैं कि हम सब में मौला अ़ली बेहतरीन फ़ैसला करते हैं और हम लोग बाहम ये कहा करते थे कि मदीना में सबसे अच्छा फ़ैसला मौला अ़ली करते हैं और जब हज़रत अ़ली से कोई मसला पूछा जाता तो आप निहायत ही दुरस्त जवाब दिया करते थे अह्ले मदीना में अहकामे वरसा व तरका के मसाइल हल करने में अ़ली सबसे बड़े आ़लिम व दाना थे।
(सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/175)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/133)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/431)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/405)

➡ हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इन्साफ़ करने में मेरा और अ़ली का हाथ बराबर है।
(कंजुल उ़म्माल–6/286-ह०-32918)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/42)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझे यमन र'वाना फरमाया तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आप मुझे यमन र'वाना फरमां रहे हैं कि मैं उनके फ़ैसले करूँ हालांकि मैं अभी जवान हूँ और मैं तजरिबे कार नहीं हूँ मुझे माअ़लूम नहीं है कि फ़ैसला कैसे किया जाता है फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया कि ऐ अल्लाह इसके दिल को हिदायत याफ़्ता बनादे और क़ल्ब को रौशन करदे और

इसकी ज़बान को हक़ व सहीह बात पर क़ायम फ़रमां हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि फिर उसके बाअ़द मुझे दो शख़्सों के दरमियान फ़ैसला करते वक़्त कभी भी शक व शुबा पेश नहीं आया और बग़ैर शक व शुबा के मैंने हर मुक़द्दमे में बाआसानी दुरस्त फ़ैसला दिया। (इब्ने माजा–सुनन–2/179-ह०-2310)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/230-ह०-288)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/125-ह०-912)
(नसाई–ख़सािइसे अ़ली–1/87-ह०-32)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/325-ह०-984)
(इब्ने अबी शैबा–9/502-ह०-32731)
(कंजुल उ़म्माल–7/62-ह०-36369)
(कंजुल उ़म्माल–7/66-ह०-36397,36398)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/156)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/174)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/274)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/418)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/389)

उम्मत के लिये दीन इस्लाम की वज़ाहत करने वाले हज़रत अ़ली

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली मेरे इ़ल्म का दर‘वाज़ा हैं और जो दीन मुझे अ़ता फ़रमांकर मबऊ़स किया गया मेरे बाअ़द हज़रत अ़ली उस दीन को मेरी उम्मत के लिये वज़ाहत करने वाले हैं और मेरे बाअ़द शरीअ़त को लोगों के लिये खोलकर बयान

करने वाले हैं और हज़रत अ़ली की मुहब्बत ईमान है और अ़ली से बुग्ज़ मुनाफ़िक़त है और अ़ली की तरफ़ देखना और अ़ली से मुहब्बत करना इ़बादत है।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/291-ह०-32978)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/91-ह०-4000)

हज़रत अ़ली रसूलुल्लाह के वसी हैं

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी व हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह हर नबी का वसी होता है (यानी वो शख़्स जिसको वसीअ़त की गई हो, वसीअ़त पर अ़मल करने वाला शख़्स) तो आपका वसी कौन है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ सलमान हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का वसी कौन था तो मैंने अ़र्ज़ की कि यूशाअ़ बिन नून फिर आपने पूछा कि किस वजह से तो मैंने अ़र्ज़ किया क्योंकि वो सबसे बड़े आ़लिम थे फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरा वसी जिसको मैं छोड़ रहा हूँ जो मेरे बाअ़द बेहतर है और वो ही मेरा वाअ़दा पूरा करेगा और वो हज़रत अ़ली हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/421-ह०-5940)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/347-ह०-1052)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/424)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/74)

➡ हज़रत ज़ैद बिन औफ़ी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जब सहाबाकिराम के साथ भाई

चारा क़ायम कराया तो हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आपने सहाबाकिराम के साथ जो सुलूक किया वो मेरे साथ नहीं किया है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसने मुझे हक़ के साथ मबऊस किया है ऐ अ़ली मैंने तुम्हें अपने लिये छोड़ा है और तुम्हारी मेरे साथ निस्बत ऐसी है जैसे हारुन अ़लैहिस्सलाम की मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ थी मगर मेरे बाअ़द कोई नबी नहीं आयेगा और तुम मेरे दुनिया व आख़िरत में भाई हो और मेरे वारिस हो हज़रत अ़ली ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मैं आपसे क्या मीरास लूँगा तो सर‘वरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो विरासत मुझसे पहले नबीयों ने छोड़ी थी तो मैंने अ़र्ज़ किया कि उन्होंने क्या छोड़ा था तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया किताबुल्लाह और नबी की सुन्नत और तुम और मेरी बेटी फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) मेरे साथ जन्नत में एक महल में रहोगे और तुम मेरे भाई और मेरे दोस्त हो फिर आपने ये आयत तिलावत फ़रमाई ‘मस्नदों पर आमने सामने भाई भाई बनकर बैठे होंगे’
(सूरह–हिज्र–15/47) (कंजुल उ़म्माल–7/58-ह०-36345)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/359-ह०-1085)

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से मर‘वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये अ़ली मेरा भाई है और मेरा वसी है और ख़लीफ़ा है इनकी बात सुनो और इनकी इताअ़त करो। (कंजुल उ़म्माल–7/62-ह०-36371)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास व ज़ैद बिन अरक़म

(रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सबक़त ले जाने वाले तीन हैं हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ (उन पर ईमान लाकर) सबक़त ले जाने वाले यूशाअ़ बिन नून हैं हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले साहिबे यासीन हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की तरफ़ सबक़त ले जाने वाले हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं। (मजमउज़्ज़वाइद–9/85-ह०-14598)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–11/93-ह०-11152)

हज़रत उ़मर मुश्किल मसाइल के हल के लिये हज़रत अ़ली की ख़्वाहिश करते

➡हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ऐसे मुश्किल मसले से पनाह माँगते थे कि जिसके हल के लिये हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मौजूद न होते हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास जब कोई मुश्किल पेश आती तो आप तअ़व्वुज़ पढ़ते यानी आऊज़ूबिल्लाह पढ़ते यानी अल्लाह की पनाह माँगते थे और आप हज़रत अ़ली की ख़्वाहिश करते थे कि काश हज़रत अ़ली यहाँ मौजूद होते तो वो इस मसले को हल करते। (इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/406)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/365-ह०-1100)
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/276)
(सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/431)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/118)

हज़रत अ़ली को कुरान के हर एक हर्फ़ के ज़ाहिर व बातिन का इ़ल्म है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कुरान सात हरुफ़ों पर नाज़िल किया गया और कोई हर्फ़ ऐसा नहीं है कि जिसका ज़ाहिर और बातिन न हो और हज़रत अ़ली के पास कुरान के हर एक हर्फ़ के ज़ाहिर का भी इ़ल्म है और बातिन कर भी इ़ल्म है।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-200)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैं अगर चाहूँ तो सिर्फ़ सूरह फ़ातिहा की तफ़्सीर से ही सत्तर ऊँटों को लाद दूँ।
(मुल्ला अ़ली क़ारी–मिरक़ातुल मफ़ातीह–1/453)
(सयूती–अल इत्क़ान फ़ी उ़लुमूल कुरान–4/490)
(इहयाउल उ़लूम–1/289)

हज़रत अ़ली ने एक सुवाल के जवाब में इस्लाम की तफ़्सील बयान फ़रमाई

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से एक सुवाल किया गया क्या आपने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से इस्लाम की तफ़्सील सुनी है तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया हाँ मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुना है कि इस्लाम की बुनियाद चार चीज़ों पर है 1- सब्र 2- यक़ीन 3- अ़द्ल 4- जिहाद और फिर सब की

चार शाख़ें हैं शौक़, ख़ौफ़ और जुहद व इन्तिज़ार पस जन्नत का शाइक़ (मुश्ताक़, आरजू मन्द) शख़्स शहवात से दूर रहता है और दोज़ख़ का ख़ाइफ़ (ख़ौफ़ रखने वाला, डरने वाला) हराम और गुनाहों के कामों से दूर रहता है और ज़ाहिद के लिये मसाइब आसान कर दिये जाते हैं और मौत का मुन्तज़िर ख़ैरात की तरफ़ जल्दी करने वाला होता है

इसी तरह यक़ीन की भी चार शाख़ें हैं फ़ितानत व ज़िहानत (अ़क़्लमंदी, ज़हन की तेज़ी) को निगाहों में रखना और हिकमत की तावील व तफ़्सीर जानना और इबरत व नसीहत की माअ़रिफ़त रखना और सुन्नत की इत्तेबाअ़ करना पस जिस शख़्स ने फ़ितानत को जान लिया तो उसने हिकमत की तावील करली और जिसने हिकमत की तावील करली उसने इ़बरत की माअ़रिफ़त हासिल करली और जिसने इ़बरत की माअ़रिफ़त हासिल करली उसने सुन्नत की इत्तेबाअ़ करली और जिसने सुन्नत की इत्तेबाअ़ करली तो वो अव्वलीन में शामिल हो गया।

इसी तरह अ़द्ल की भी चार शाख़ें हैं समझ और फ़हम को इंतिहाई ग़ौर के साथ इस्तेअ़माल करना और इ़ल्म को तरो ताज़ा रखना और शरीअ़त के अहकाम माअ़लूम रखना और हिल्म व बुर्दबारी के बाग़ में रहना पस जिसने फ़हम को इंतिहाई ग़ौर के साथ इस्तेअ़माल किया उसने जुमला उ़लूम की तफ़्सीर व तशरीह पायी और जिसने इ़ल्म को तरो ताज़ा रखा उसने शरीअ़त के अहकाम माअ़लूम कर लिये और जिसने शरीअ़त के अहकाम माअ़लूम कर लिये तो उसने शरीअ़त के अहकाम हासिल कर लिये और वो हिल्म और बुर्दबारी

के बाग़ों का साकिन हो गया और हिल्म और बुर्दबारी में रहने वाला किसी काम में कोताही नहीं करता और वो लोगों में यूँ रहता है कि सब उससे राहत व आराम में होते हैं

इसी तरह जिहाद की भी चार शाख़ें हैं अम्र बिल माअ़रुफ़ व नही अनिल मुन्कर और हर जगह सच्चाई को इख़्तियार करना और फ़ासिक़ीन से दुश्मनी रखना पस जिसने अम्र बिल माअ़रुफ़ किया उसने मोमिन की पीठ मज़बूत की और जिसने नही अनिल मुन्कर किया उसने मुनाफ़िक़ की नाक ख़ाक में मिलादी और जिसने सच्चाई को पल्ले बांध लिया उसने अपना फ़रीज़ा पूरा कर दिया और अपने दीन की हिफ़ाज़त करली और जिसने फ़ासिक़ीन से दुश्मनी मोल ली उसने अल्लाह के लिये गुस्सा किया और जिसने अल्लाह के लिये गुस्सा किया तो अल्लाह तअ़ाला उसके लिये गुस्सा करेगा।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/81-ह०-230)

हज़रत अ़ली से अल्लाह तअ़ाला की हक़ीक़त के बारे में यहूदियों का सुवाल

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से एक मर्तबा कुछ यहूदियों ने अल्लाह तबारक तअ़ाला की हक़ीक़त व माहियत और कैफ़ियत के बारे में सुवाल किया तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि ऐ यहूद सुनो मेरा रब वो है जो अव्वल है किसी शैः से उसकी इब्तिदा नहीं हुई वो किसी शैः से मिलकर नहीं बना वो हुलूल हो जाने वाली शैः नहीं है यानी एक शैः का दूसरी शैः में इस तरह दाख़िल होना कि दोंनों में तमीज़ न हो सके वो किसी शबीय की हामिल ज़ात नहीं

कि जिसको कोई मकान घेर सके और वो पर्दे में बन्द शैः नहीं जो किसी मख़्सूस जगह पर मौजूद हो और वो अ़दम के बाअ़द वुजूद पज़ीर नहीं हुआ है कि जिसकी वजह से ये कहा जाये कि वो हादिस है यानी नई चीज़ जो पहले से न हो बल्कि वो तो इस बात से अ़ज़ीमतर है कि अशिया में से किसी शैः की कैफ़ियत के साथ उसको मख़्सूस किया जाये और वो लाज़वाल है किसी ज़माने के इख़्तिलाफ़ से वो ज़ाइल होने वाला नहीं और वो एक शान के दूसरी शान के साथ बदलने वाला नहीं है और वो पाक ज़ात शबीहों के साथ मौसूफ़ नहीं की जा सकती और न उससे कोई शैः बनी है और न वो किसी शैः से बना है बल्कि वो हर कैफ़ियत से पाक है वो शह रग़ से भी ज़्यादा क़रीब तर है और शक्ल व सूरत में हर शैः से बईद तर है वो किसी अशिया में से नहीं है कि कहा जाये कि वो उन अशिया से जुदा हो गया और न उससे कोई शैः बनी कि कहा जाये कि वो बन गया

उसके बन्दों का कोई लम्हा कोई पल कोई घड़ी उससे मख़्फ़ी नहीं और किसी लफ़्ज़ का लौटना व पलटना और फिरना उससे पोशीदा नहीं हवा का कोई झोंका उससे ओझल नहीं किसी क़दम की आहट और किसी की मुस्कुराहट का खुलना उससे छुपा हुआ नहीं है और इंतिहाई तारीक रात में भी ज़मीनो आसमान की जुमला अशिया उससे पोशीदा नहीं है चमकते चाँद की रौशनी उस पर छा नहीं सकती सूरज के रौशन हाले की कोई किरन उससे मख़्फ़ी नहीं है अल ग़रज़ वो हर शैः पर मुहीत है वो हर मकान, हर घड़ी, हर मुद्दत और हर इन्तिहां को पूरी तरह जानता और वो अपनी बुलन्दी में तन्हा है मख़लूक़ की इताअ़त से उसका कोई

नफ़ाअ़ नहीं है ज़मीन व आसमान में बेशुमार फ़रिश्ते उसकी इताअ़त के लिये कमर बस्ता हैं बोसीदा मुर्दों के बारे में उसका इ़ल्म ऐसा है जैसा ज़िन्दों के बारे में है आसमानों के बारे में उसका इ़ल्म ऐसा है जैसा ज़मीन की आख़िरी तह के बारे में इ़ल्म है बहुत सी आवाज़ों का जमाअ़ होना उसे परेशान व हैरान नहीं कर सकता और मुख़्तलिफ़ ज़बानों का सुनना उसको किसी एक से मशगूल नहीं करता जो बग़ैर आज़ा के सबकी सुनता है वो तमाम उमूर का अ़ालिम है वो हय्युल क़य्यूम ज़ात है उसके बारे में हदबन्दी करने वाला उसकी हक़ीक़त से नावाक़िफ़ व जाहिल है और वो नींद व औंघ से पाक है तमाम आसमान व ज़मीन पर उसी की बादशाहत है और वो ही अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/80-ह०-227)

हज़रत अ़ली लोगों में सबसे ज़्यादा अल्लाह को पहचानने वाले हैं

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली लोगों में सबसे ज़्यादा अल्लाह को पहचानने वाले हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/291-ह०-32977)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/451-ह०-1494)

–: हज़रत अ़ली की इ़ल्मी लियाक़त :–

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं अगर मेरे लिये मस्नद लगा दी जाये तो मैं अह्ले तौरात यानी यहूदियों के दरमियान उनकी तौरात के मुताबिक़ फ़ैसला

करूँगा और अह्‌ले इन्जील यानी ईसाइयों के दरमियान उनकी इन्जील के मुताबिक़ फ़ैसला करूँगा मैं बिस्मिल्लाह की सिर्फ़ 'बा' की तफ़्सीर में वो कुछ बयान करदूँ कि जिससे कई ऊँट लादे जा सकें।
(अल मवाहिबुल लदुनिया–1/39)

हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ज़ाते अक़दस से ख़िलाफ़ते बातिनी और विलायत का सर चश्मा फूटा जो अह्‌ले बैत अत्‌हार को अ़ता हुआ जो बाद में विलायत व इमामत के नाम से मौसूम हुआ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपना नायबे विलायत हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को मुक़र्रर किया और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) विलायते अ़ली की नूरानी शमां के दो मुख़्तलिफ़ चेहरे और हज़रत मौला अ़ली के नायबे बिलायत हैं हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से ही कुतबियत मुजद्‌दियत ग़ौसियत, अ़ब्दालियत के चश्मे फूटे जिससे उम्मत के मोमिनीन व औलिया व सालिहीन फ़ैज़याब हुये हैं और विलायत का ये सिलसिला हज़रत इमाम मेंहदी (अ़लैहिस्सलाम) पर ख़त्म होगा।

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की फ़ज़ीलत में जितनी अहादीसे मुबारका वारिद हैं किसी भी दीगर सहाबा की फ़ज़ीलत में इतनी अहादीस वारिद नहीं हैं आपके फ़ज़ाइले जमीला बेशुमार हैं आप शराफ़ते नसब में बहुत आ़ली हैं आपकी ज़ाते पाक को वो मक़ाम व मन्ज़िलत और एअ़ज़ाज़ हासिल हुआ जो दीगर सहाबा को हासिल न था आप आअ़ला मरतबत और पाकीज़ा सीरतो किरदार के हामिल थे आपके अ़ज़ीमुश्शान और रौशन फ़ज़ाइल कुरान व अहादीस में मज़कूर हैं।

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का फ़रमान जिसका मैं मौला उसका अ़ली मौला

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ग़दीरे खुम पर क़याम किया और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है। (ग़दीरे खुम मक्का मुकर्रमा व मदीना मुनव्वरा के दरमियान एक जगह का नाम है)

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1073-ह०-3713)
(मिश्कात–3/535-ह०-609)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/264-ह०-4652)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/226-ह०-4577)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–5/296-ह०-6272)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/204-ह०-5097,5068)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/267-ह०-2472)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/600-ह०-4836)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/337-ह०-959)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/91-ह०-14619)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/144-ह०-79,84)
(इब्ने अबी शैबा–9/503-ह०-32735)
(कंजुल उ़म्माल–6/285-ह०-32901)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि ग़दीरे खुम का दिन था जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है नीज़ फ़रमाया

ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे और उससे दुश्मनी रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/587-ह०-1111,2254)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–6/61-ह०-6392)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/88-ह०-14610,14618)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/158)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–11/225-ह०-20388)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि ग़दीरे खुम का दिन था जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया क्या मैं मोमिनों का वाली नहीं हूँ तो लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है इस पर हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से कहा ऐ अ़ली आपको मुबारक हो कि आप मेरे और तमाम मुसलमानों के मौला हैं इस पुर मुबारक मौक़ेअ़ पर अल्लाह तबारक व तअ़ाला ने ये आयते मुबारका नाज़िल फ़रमाई कि ‘आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअ़मतें पूरी कर दीं और तुम्हारे लिये (बतौर) दीन इस्लाम को पसन्द कर लिया’। (सू०–मायदा–5/3)
(इमाम जलालुद्दीन सयूती–दुर्रे मन्सूर–2/708)
(इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी–तफ़्सीर कबीर–11/139)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क–42/233,237)
(इब्ने कसीर–अल विदाया वन निहाया–5/297)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु)

से रिवायत है कि ये आयते मुबारका ''ऐ (बरगज़ीदा) रसूल जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब की जानिब से नाज़िल किया गया (वो सारा लोगों को) पहुँचा दीजिये (सू०-मायदा-5/67) हज़रत मौला अ़ली की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई इस आयत का शाने नुजूल बयान करते हुये फ़रमाते हैं कि ये आयते मुबारका जब नाज़िल हुई तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ा और फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे और तू उससे अ़दावत रख जो अ़ली से अ़दावत रखे फिर इसके बाद हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मुलाक़ात की और कहा कि ऐ मौला अ़ली आपको मुबारक हो कि अब आप मेरे और तमाम मोमिन और मोमिना के मौला क़रार पाये हैं।

(इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी-तफ़्सीर कबीर-12/51)
(इमाम जलालुद्दीन सयूती-दुर्रे मन्सूर-2/817)
(इब्ने असाकर-तारीख़ मदीना दमिश्क़-42/237)
(आलूसी-रुहुल मआ़नी-7/318)
(शौकानी-फ़त्हुल क़दीर-2/86)
(इब्ने अबी हातिम-कुरानुल अ़ज़ीम-4/1172-6609)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ग़दीरे खुम के मक़ाम पर ख़िताब किया और फ़रमाया कि क्या तुम जानते हो कि मैं हर मोमिन के लिये उसकी जान से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ हूँ और क्या तुम जानते हो कि मैं मोमिनीन पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखता हूँ लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आपने फ़रमाया कि बेशक

अल्लाह तआ़ला मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का मौला हूँ फिर आपने हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह जो अ़ली से मुहब्बत करे तू भी उससे मुहब्बत कर और जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उसे दोस्त रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू उससे दुश्मनी रख और जो अ़ली की नुसरत (मदद) करे तू भी उसकी नुसरत फ़रमां और जो अ़ली की इआ़नत करे तू उसकी इआ़नत फ़रमां फिर इसके बाअ़द हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मुलाक़ात की और कहा कि ऐ मौला अ़ली आपको मुबारक हो कि अब आप हर मोमिन मर्द औ़रत के मौला होने की हालत में सुबह शाम करते हो
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/511-ह०-2982)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/166-ह०-4969)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/641-ह०-4919)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/226-ह०-4576)
(मिश्कात–3/538-ह०-6103)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/327-ह०-991,1017)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/61-ह०-6392)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/88-ह०-14611,14614,14616)
(इब्ने अबी शैबा–9/509-ह०-32754)
(कंजुल उ़म्माल–7/70-ह०-36420,36485)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/125)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–6/217)

➡ हज़रत बुरैदा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि मैं हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ यमन की जानिब एक गज़वा में शरीक हुआ तो मैंने हज़रत अ़ली में कुछ सख़्ती देखी और कुछ बद सुलूकी महसूस

की फिर जब मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मैंने हज़रत अ़ली की शिकायत की और हज़रत अ़ली का तज़किरा करते हुये ये ख़ामी बयान कर दी तो मैंने देखा कि ये सुनकर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक मुताग़य्यर हो गया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या मैं मोमिनों पर उनकी जानों से ज़्यादा हक़ नहीं रखता तो मैंने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/228-ह०-4578)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/254-ह०-346)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/347-ह०-989)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/146-ह०-81,82)
(इब्ने अबी शैबा–9/523-ह०-32795)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–7/325-ह०-20388)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/23-ह०-)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/70-ह०-36422)

➡ रिफ़अ़ा बिन इयास अपने वालिद से वो उनके दादा से रिवायत करते हैं कि हम जंगे जमल के दिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ थे हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने हज़रत तल्हा बिन उ़बैदुल्लाह रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु को पैग़ाम भेजा कि वो मुझसे मिलें हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) उनके पास आये तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या तुमने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की जुबाने मुबारक से ये अल्फ़ाज़ सुने हैं कि

जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली की मदद करे तू भी उसकी मदद फ़रमां और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख तो हज़रत तल्हा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा जी हाँ फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया तो फिर आप मेरे साथ जंग क्यों कर रहे हैं हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने कहा कि मुझे याद नहीं रहा था फिर हज़रत तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) वापस चले गये।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/696-ह०-5594)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/92-ह०-14625)
(कंजुल उ़म्माल–6/166-ह०-31662)

➡ हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के पास दो बद्दू (अ़रब के ख़ाना बदोश) झगड़ा करते हुये आये तो आपने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से कहा कि ऐ अबुल हसन इन दोनों के दरमियान फ़ैसला फ़रमां दें तो आपने उन दोनों के दरमियान फ़ैसला कर दिया तो उनमें से एक ने कहा क्या ये हमारे दरमियान क़ाज़ी हैं इसके बाद हज़रत उ़मर फ़ारुक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने उसका गिरेबां पकड़कर फ़रमाया कि तू हलाक हो तुझ पर अफ़सोस है क्या तू नहीं जानता कि ये मेरे और हर मोमिन के मौला हैं और जो इनको मौला न माने वो मोमिन ही नहीं।
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/126)

➡ हज़रत अबू तुफ़ैल आमिर बिन वासिला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत अ़ली मिम्बर पर खड़े होकर सहाबा किराम से क़सम देकर पूछ रहे थे कि कौन है जिसने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ग़दीरे खुम में जो कुछ कहा है वो आपने सुना है वो गवाही दे तो दो बारह आदमी उठे एक रिवायत में है कि सोलह (16) आदमी उठे जिनमें हज़रत अबू हुरैरा, हज़रत अबू सईद और हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) थे उन्होंने ये गवाही दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना ऐ अल्लाह जिसका मैं मौला हूँ अ़ली भी उसका मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/956-ह०-1966)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/348-ह०-991)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/34-ह०-786)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/362-ह०-563)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/90-ह०-14615,14629,1430,1433)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/117-ह०-6931)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/151-ह०-85,88,93)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/69-ह०-34417)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/610)

➡ हज़रत रियाह बिन हारिस फ़रमाते हैं कि हम हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ बैठे थे कि अन्सार से एक ऊँट सवार काफ़िला आया उन्होंने अ़र्ज़ की कि ऐ मेरे मौला आप पर सलामती हो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारा मौला हूँ और क्या तुम अ़रब की क़ौम हो उन्होंने कहा जी हाँ और हमने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे

तू भी उससे दुश्मनी रख हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) मौजूद थे उन्होंने भी कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखे तू भी उससे दोस्ती रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख। (सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/173)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/160-ह०-3947)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/173-ह०-4053)

अ़ली का दोस्त अल्लाह का दोस्त
अ़ली का दुश्मन अल्लाह का दुश्मन

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया कि तेरा दोस्त मेरा दोस्त है और मेरा दोस्त अल्लाह का दोस्त है और तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन और मेरा दुश्मन अल्लाह का दुश्मन है और मेरे बाद जिस शख़्स ने तुमसे बुग्ज़ रखा उसके लिये हलाकत है। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/49)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हम उस हज में थे जो हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने किया हम उनके साथ आये आप ग़दीरे खुम नामी जगह पर रुके और नमाज़ का हुक्म दिया नमाज़ से फ़राग़त के बाद आपने खुत्बा दिया और फिर हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया क्या मैं ईमान वालों के नज़दीक उनकी जानों से भी ज़्यादा महबूब नहीं हूँ और क्या मैं मोमिनीन पर

उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ नहीं रखता हूँ तो लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ये अ़ली हर उस शख़्स का दोस्त है जो मुझे दोस्त रखता है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह तू उसको दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे है और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तू भी उससे दुश्मनी रख।

(इब्ने माजा–सुनन–1/72-ह०-116)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/192-ह०-4059)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/202-ह०-5052)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/144-ह०-79,80,94,95,98)
(कंजुल उ़म्माल–7/69-ह०-36418,36420)

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि ख़ातूने जन्नत हज़रत सय्यदा फ़ातिमा हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की बारगाह में आयीं तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अबुल हसन कहाँ हैं अ़र्ज़ की वो घर में हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली को बुलाया फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली व ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा व इमाम हसन और इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) खाने के लिये बैठे और खाना तनावुल फ़रमाने लगे हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मुझे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) से नहीं बुलाया इससे पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ फिर जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खाने से फ़ारिग़ हुये तो उन सबको अपनी कमली में ले लिया और फ़रमाया ऐ अल्लाह जो इनसे अ़दावत रखे तू भी

उससे अ़दावत रख और जो इनको दोस्त रखे तू भी उसे दोस्त रख। (मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/187-ह०-14971) (अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–5/272-ह०-6915)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अ़ली व फ़ातिमा और हसन व हुसैन की तरफ़ देखकर फ़रमाया मैं तुम्हारे दुश्मन का दुश्मन हूँ और तुम्हारे दोस्त का दोस्त हूँ और एक रिवायत में है मैं उसके साथ जंग का ऐअ़लान करता हूँ जो तुम्हारे साथ जंग करेगा और मैं उसके लिये सलामती का पैग़ाम हूँ जो तुम्हारे साथ सलामती से रहेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/294-ह०-4713)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/31-ह०-2621)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/191-ह०-14989)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/48-ह०-1350)

➡ हज़रत जरीर रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम का हाथ पकड़कर फ़रमाया अल्लाह व रसूल जिसका दोस्त हो तो अ़ली भी उसका दोस्त है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह जो अ़ली को दोस्त रखता हो तू भी उसे दोस्त रख और जो अ़ली से दुश्मनी रखता हो तू भी उससे दुश्मनी रख ऐ अल्लाह लोगों में से जो शख़्स अ़ली से मुहब्बत करता हो तू उसे अपना महबूब बनाले और जो अ़ली से बुग्ज़ रखता हो तू भी उससे बुग्ज़ रख।
(कंजुल उ़म्माल–7/72-ह०-36439)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से

रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़कर फ़रमाया ये मेरा दोस्त है और मैं इसका दोस्त हूँ और मैं उससे दोस्ती रखूँगा जो अ़ली से दोस्ती रखेगा और मैं उससे दुश्मनी रखूँगा जो अ़ली से दुश्मनी रखेगा। (मुअ़जम औसत–2/96-ह०-2186)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ लोगो क्या मैं हर मोमिन का उसकी जान से ज़्यादा हक़दार नहीं हूँ तो लोगों ने अ़र्ज़ किया जी हाँ या रसूलल्लाह हम गवाही देते हैं कि आप हर मोमिन की उसकी जान से ज़्यादा हक़दार हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जिसका मैं दोस्त हूँ अ़ली भी उसका दोस्त है और उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़े हुये थे फिर आपने फ़रमाया ऐ अल्लाह जो अ़ली का दोस्त हो तू भी उसका दोस्त हो जा और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तो तू भी उससे दुश्मनी रख। (कंजुल उ़म्माल–7/58-ह०-36342)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स हज़रत अ़ली से मुहब्बत करता है तो वो मुझसे मुहब्बत करता है और जो शख़्स मुझसे मुहब्बत करता है वो अल्लाह तआ़ाला से मुहब्बत करता है और जो अल्लाह तआ़ाला से मुहब्बत करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा। (कंजुल उ़म्माल–7/60-ह०-36357)

अ़ली हर मोमिन के वली हैं

➡ इमरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली हैं।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3712)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/264-ह०-4652)
(मिश्कात–3/535-ह०-6090)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/94-ह०-14636,14637)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/366-ह०-1104)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/126,157)
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32937,32942,32877)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–6/218)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/30-ह०-68)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/423)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की बुराई न करो अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली हैं।
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32939)

➡ हज़रत बुरैदा व हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने दो लश्कर यमन की तरफ़ भेजे तो एक पर हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) व दूसरे पर हज़रत ख़ालिद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

अमीर थे आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम दोंनों एक साथ मिल जाओ तो सब पर हज़रत अ़ली अमीर होंगे और अलग अलग हो जाओ तो दोंनों अपने अपने लश्कर पर अमीर होंगे फिर हज़रत अ़ली ने एक क़िला फ़तह किया और माले ग़नीमत में से एक लोंडी ले ली तो हज़रत ख़ालिद रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शिकायत में एक ख़त हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के हाथों रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के पास भेजा फिर जब वो ख़त हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के सामने पढ़ा गया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक गुस्से से मुतग़य्यर हो गया फिर आपने फ़रमाया उस क़ौम का क्या हाल होगा जो हज़रत अ़ली का नुक्स बयान करते हैं पस जिसने अ़ली का नुक्स बयान किया तो उसने मेरा नुक्स बयान किया और जो अ़ली से जुदा हुआ वो मुझसे जुदा हुआ और हज़रत अ़ली को मेरी मिट्टी से पैदा किया गया और मैं इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की मिट्टी से पैदा किया गया हूँ और मैं इब्राहीम से अफ़ज़ल हूँ और अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली है और हज़रत अ़ली ने अपने हक़ से ज़्यादा छोड़ा है आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने ये तीन बार फ़रमाया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम अ़ली से क्या चाहते हो हज़रत बुरैदा बयान फ़रमाते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं अल्लाह तआ़ाला की पनाह चाहता हूँ आपने मुझे ऐसे शख़्स के साथ भेजा था कि जिसकी बात को मानना मुझ पर लाज़िम था ये ख़त उसने मुझे आपकी ख़िदमत में पेश करने के लिये

दिया था मैंने वो आप तक पहुँचा दिया है फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ बुरैदा कभी भी अ़ली की तनक़ीस न करना और किसी बद गुमानी का शिकार न होना क्योंकि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली है और तुम ऐसे शख़्स के बारे में शिकायत करते हो जो अल्लाह व उसके रसूल को महबूब रखता है और अल्लाह तआ़ाला और उसका रसूल भी उसको महबूब रखते हैं।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3712,3725)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/676-ह०-4842)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/574-ह०-6085)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–11/225-ह०-20388)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14638,14732)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/391-ह०-1175)
(इब्ने अबी शैबा–9/519-ह०-32782)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/155-ह०-90)
(कंजुल उ़म्माल–7/70-ह०-36421,36454)

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–2/631-ह०-2589)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/314-ह०-947)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14638)
(इब्ने अबी शैबा–3/61-ह०-12114)
(इब्ने अबी शैबा–9/501-ह०-32728)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/116-ह०-6930)
(कंजुल उ़म्माल–6/285-ह०-32902)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा अल्लाह तआ़ला मेरा वली है और मैं हर मोमिन का वली हूँ और जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/165-ह०-4968)
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32942)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जिसका मैं वली हूँ अ़ली भी उसका वली हो ऐ अल्लाह जिसका अ़ली वली हो तू भी उसका वली बनजा और जो अ़ली से मुहब्बत करे तो तू भी उससे मुहब्बत कर और जो अ़ली का दुश्मन हो तू भी उसका दुश्मन बन जा और जो अ़ली की मदद करे तू भी उसकी मदद फ़रमां और जो अ़ली की मदद छोड़ दे तू भी उसकी मदद छोड़ दे।
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32943,32945,32948)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली रोज़े क़यामत सबसे पहले मेरी और तेरी क़ब्र शक़ होगी और तुम हम्द का झन्डा उठाकर अव्वलीन व आख़िरीन के सामने चलोगे और तुम मेरे बाअ़द तमाम मोमिनीन के वली हो।
(कंजुल उ़म्माल–6/295-ह०-33047)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि क्या मैं मोमिनों के लिये उनकी जानों से ज़्यादा हक़दार नहीं हूँ फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/92-ह०-14626,14637)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/163-ह०-96)

➡हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा अल्लाह तआ़ला मेरा मौला है और मैं हर मोमिन का वली हूँ फिर आपने हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है ऐ अल्लाह जो अ़ली से दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो अ़ली से दुश्मनी रखे तो तू भी उससे दुश्मनी रख और एक रिवायत में है आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं मोमिनीन का उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखता हूँ तो लोगों ने कहा जी हाँ या रसूलल्लाह फिर आपने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि जिसका मैं वली हूँ उसका अ़ली वली है।
(कंजुल उ़म्माल–7/58-ह०-36340,36342,36343,)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ये अ़ली मेरे बाअ़द तुम्हारे वली हैं क्योंकि अ़ली वही काम करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता।
(कंजुल उ़म्माल–6/289-ह०-32960)

मज़कूरा अहादीस इस बात पर दलालत करती हैं कि कोई हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से जुदा गुमान न करे हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम का अदबो इहतिराम व ताअ़ज़ीमो तकरीम गोया ताअ़ज़ीमे मुस्तफ़ा है और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की तनक़ीस गोया तनक़ीसे मुस्तफ़ा है और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्र ज़िक्रे मुस्तफ़ा है और ज़िक्रे मुस्तफ़ा दरअस्ल ज़िक्रे खुदा है और हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मुहब्बत गोया रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से मुहब्बत की अ़लामत है और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से मुहब्बत अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत की अ़लामत है और अ़ली का मुहिब मेहबूबे मुस्तफ़ा है और मेहबूबे मुस्तफ़ा मेहबूबे खुदा है और हज़रत अ़ली का दुश्मन दरअस्ल दुश्मने रसूल है और दुश्मने रसूल दरअस्ल दुश्मने खुदा है और तमाम दुश्मने रसूल क़ाबिले लाअ़नत व दोज़ख़ के अह्ल और अ़ज़ाबे नार के मुस्तहिक़ हैं।

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो मुझ पर ईमान लाया और मेरी तसदीक़ की तो मैं उसे विलायते अ़ली की वसीअ़त करता हूँ कि जिसने अ़ली को वली जाना तो उसने मुझे वली जाना और जिसने मुझे वली जाना तो उसने अल्लाह तआ़ला को वली जाना और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह तआ़ला से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने-

अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा।
(कंजुल उ़म्माल–11/611-ह०-32958)
(मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14640)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/429-ह०-1751)

विलायते अ़ली के फ़ैज़ के बग़ैर न कोई ग़ौस हो सका न कोई कुतुब और न कोई अ़ब्दाल हो सका विलायत, ग़ौसियत, इमामत, कुतबियत, अ़ब्दालियत सब विलायते अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के फ़ैज़ से हैं और आपकी सीरते पाक तमाम मुसलमानों के लिये बेहतरीन राहे हिदायत का नमूना हैं।

रसूलुल्लाह का फ़रमान अ़ली मुझसे है मैं अली से हूँ

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा चार असहाब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाहे अक़दस में हाज़िर हुये उनमें से एक ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की शिकायत करते हुये अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या आपने नहीं देखा कि हज़रत अ़ली ने ऐसा किया है आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उससे मुँह फेर लिया फिर दूसरा उठा उसने भी हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में यही कहा तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उससे भी मुँह फेर लिया फिर इसी तरह तीसरे व चौथे शख़्स ने भी उठकर हज़रत मौला अ़ली की शिकायत में वो ही बात दोहराई तो फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उनकी तरफ़ मुतवज्जे हुये उस वक़्त आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि–

वसल्लम) के चेहरे मुबारक से गुस्सा ज़ाहिर हो रहा था आपने फ़रमाया कि तुम अली से क्या चाहते हो आपने ये जुमला तीन मर्तबा फ़रमाया फिर फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और अ़ली मेरे बाअ़द हर मोमिन के वली हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1072-ह०-3712)

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/228-ह०-4579)

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–18/128-ह०-265)

(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/259-ह०-350)

(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/340-ह०-1035)

(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/114-ह०-6929)

(इब्ने अबी शैबा–9/519-ह०-32784)

(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32880)

(कंजुल उ़म्माल–7/73-ह०-36444)

(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/608)

(नसाई–ख़सााइसे अ़ली–1/153-ह०-89)

मज़कूरा हदीस पाक में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शिकायत पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का चेहरा मुबारक मुताग़य्यर हो जाना और आपके गुस्से का ज़ाहिर होना और आपका उन शिकायत करने वाले असहाब से मुँह फेरना और आपका ये इरशाद फ़रमाना कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ इस बात की तरफ़ इशारा करता है कि तुम जो हज़रत अ़ली की शिकायत करते हो तो गोया तुम मेरी यानी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की शिकायत करते हो क्योंकि जब रसूलुल्लाह ने ये फ़रमां दिया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ तो हज़रत मौला अ़ली की शिकायत करना गोया हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) शिकायत करना है

और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का मज़कूरा हदीस में दूसरा फ़रमान कि मेरे बाअ़्द अ़ली हर मोमिन के वली हैं यानी जो हज़रत मौला अ़ली की विलायत का मुन्किर है वो मोमिन नहीं है बल्कि मुनाफ़िक़ है हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के बेशुमार फ़ज़ाइल व मरातिब हैं जिनका शुमार और मुवाज़िना करना ना मुम्किन है।

➡ हज़रत ज़ैद बिन हारिसा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम मेरे दामाद हो और मेरी औलाद के बाप हो और तुम मुझसे हो और मैं तुमसे हूँ।
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/208-ह०-138)

➡ हज़रत जुबशी बिन जुनादा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरा पैग़ाम अ़ली ही पहुँचायेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73-ह०-119)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3719)
(इब्ने अबी शैबा–9/502-ह०-32734)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/332-ह०-1010)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/246-ह०-382)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/704-ह०-3431)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/16-ह०-3511)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/137-ह०-74)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने जब उहद के

दिन जब अलविया वालों को क़त्ल किया तो जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह बेशक यही अस्ल ग़मगुसारी है पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ये अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ तो हज़रत जिबरईल अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मैं आप दोनों से हूँ।

(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/472-ह०-934)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/371-ह०-1119)
(कंजुल उ़म्माल–7/74-ह०-36449)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/127)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/64)

➡ हज़रत बुरैदा और हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाद अ़ली हर मोमिन के वली हैं। (तिर्मिज़ी–2/1072-ह०-3712,3725)

(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/676-ह०-4842)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/574-ह०-6085)
(अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़–अल मुसन्नफ़–11/225-ह०-20388)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14638,14732)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/391-ह०-1175)
(इब्ने अबी शैबा–9/519-ह०-32782)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/155-ह०-90)
(कंजुल उ़म्माल–7/70-ह०-36421,36454)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि–

अ़ली की बुराई न करो अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़्द अ़ली हर मोमिन के वली हैं।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/288-ह०-32939)

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया कि तू मुझसे है और मैं तुझसे हूँ।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73-ह०-119)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3716)

अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ रखने वाला मुनाफ़िक़ है

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया करते थे कि किसी मुनाफ़िक़ की हज़रत अ़ली से मुहब्बत नहीं हो सकती और कोई मोमिन हज़रत अ़ली से बुग्ज़ नहीं रख सकता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3717)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/283-ह०-32875)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली से मुहब्बत सिर्फ़ मोमिन ही करेगा और अ़ली से बुग्ज़ मुनाफ़िक़ ही रखेगा और जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और मेरा दोस्त अल्लाह का दोस्त और मुझसे बुग्ज़ रखने वाला अल्लाह तआ़ला

से बुग्ज़ रखने वाला है और उसके लिये हलाकत है जो अ़ली से बुग्ज़ रखे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/626-ह०-4751)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे अ़हद फ़रमाया कि तुझसे मोमिन ही मुहब्बत करेगा और तुझसे बुग्ज़ रखने वाला मुनाफ़िक़ ही होगा। (मुस्लिम–सहीह–1/84-ह०-240)
(इब्ने माजा–सुनन–1/72-ह०-114)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1083-ह०-3736)
(मिश्कात–3/534-ह०-6088,6100)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/314-ह०-948)
(मुस्नद बज़्ज़ार–2/182-ह०-560)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/229-ह०-286)
(इब्ने अबी शैबा–9/500-ह०-32727)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/110-ह०-6924)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/294-ह०-33026)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/169-ह०-100)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/492-ह०-5267)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/173)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)

उस ज़माने में सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) मुनाफ़िक़ों और मोमिनों की पहचान इस तरह किया करते थे कि जिसके चेहरे पर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के नाम से मरोड़ व सिकुड़न आ जाये तो वो मुनाफ़िक़ है और जिसका चेहरा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के नाम से खुशी और मसर्रत से खिल उठे वो मोमिन है और क़यामत के दिन मोमिनों–

और मुनाफ़िक़ों की पहचान उनके चेहरों से की जायेगी

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और उन दोंनों यानी जन्नत व जहन्नम के दरमियान एक दीवार होगी और आअ़राफ़ पर यानी उस दीवार की बुलन्दियों पर कुछ लोग होंगे जो हर एक को यानी जन्नतियों व दोज़ख़ियों को उनकी अ़लामतों से पहचान लेंगे। (सू०-आअ़राफ़-7/46)

➡हज़रत शाअ़लबी ने इस आयत की तफ़्सीर में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से बयान किया है कि आअ़राफ़ पुलसिरात पर एक बुलन्द जगह है हज़रत अ़ब्बास, हज़रत अ़ली हज़रत जाअ़फ़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) खड़े होकर अपने चाहने वालों को सफ़ेद नूरानी चेहरों से और बुग्ज़ रखने वालों को सियाह चेहरों से पहचान लेंगे।
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/569)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया ऐ अली तू और तुझसे मुहब्बत करने वाले रोज़े क़्यामत मेरे पास हौज़े कौसर पर चेहरे की शादाबी और सैराब होकर आयेंगे और उनके चेहरे (नूर की वजह से) सफ़ेद होंगे और बेशक तेरे दुश्मन क़्यामत के दिन मेरे पास हौज़े कौसर पर बदनुमा सियाह चेहरों के साथ सख़्त प्यास की हालत में आयेंगे।
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-1/474-ह०-941)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-1/319-ह०-998)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/125-ह०-14749)

तमाम मुनाफ़िक़ीन हौज़े कौसर से हटाये जायेंगे

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत मैं अपने हाथों से मुनाफ़िक़ीन व काफ़िरों को हौज़े कौसर से दूर भगा दूँगा जिस तरह कोई शख़्स अपनी चरागाह से अजनबी ऊँटों को भगा देता है। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/163) (अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/383-ह०-1157) (कंजुल उ़म्माल–7/78-ह०-36479,36484)

➡ हज़रत अ़ली बिन अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मुआविया बिन हुदैज हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गालियाँ देता था और उन पर तबर्रा (लाअ़न ताअ़न) करता था फिर जब मुआ़विया को हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) के सामने पेश किया गया तो हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने पूछा कि ऐ मुआ़विया तू हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर तबर्रा करता है तो वो मुकर गया फिर हज़रत इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया खुदा की क़सम अगर तेरी मुलाक़ात हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से हो तो तू उन्हें रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के हौज़ पर खड़ा पायेगा और उनके हाथ में एक काँटेदार छड़ी होगी जिसके साथ वो मुनाफ़िक़ों को हौज़े कौसर से पीछे हटा रहे होंगे ये बात मुझे हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने बताई है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/275-ह०-4669)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/163)

सहाबा किराम मुनाफ़िक़ की पहचान किस तरह करते थे

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को हज़रत मौला अ़ली के बुग्ज़ से पहचानते थे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/259-ह०-4643)
(कंजुल उ़म्माल–7/59-ह०-36346)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–1/174)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/180)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह व हज़रत अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा बयान करते हैं कि हम मुनाफ़िक़ीन को हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से बुग्ज़ की वजह पहचानते थे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1075-ह०-3717)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/313-ह०-4151)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/126-ह०-14759)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/323-ह०-979,1086)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/180)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि चार आदमियों की मुहब्बत मुनाफ़िक़ के दिल में जमाअ़ नहीं हो सकतीं और मोमिन के सिवा इनसे कोई मुहब्बत नहीं करता और वो चार आदमी हैं हज़रत मौला अ़ली, हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत उ़मर फ़ारुक़, हज़रत उस्मान ग़नी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम)। (इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/427)

हज़रत अ़ली का रसूलुल्लाह से रिश्ता-ए-तअ़ाल्लुक़

➡हज़रत अबू सईद खुदरी व हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हज़रत अ़ली का मेरे साथ तअ़ाल्लुक़ इस तरह से है कि जिस तरह हारुन (अ़लैहिस्सलाम) का मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ तअ़ाल्लुक़ है अलबत्ता मेरे बाद नबूवत नहीं।
(बुख़ारी-सहीह-3/741-ह०-3706)
(मुस्लिम-सहीह-4/537-ह०-6217)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1082-ह०-3731)
(मुस्नद अहमद-2/364-ह०-3062)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-2/105-ह०-2003,3435)
(तबरानी-मुअ़जम औसत-1/737-ह०-1465)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/96-ह०-14642)
(इब्ने हिब्बान-सहीह-8/112-ह०-6927)
(अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/316-ह०-954)
(कंज़ुल उ़म्माल-7/80-ह०-36488)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/411)

➡हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि जब आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ग़ज़बए तबूक को तशरीफ़ ले जा रहे थे तो हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को मदीना मुनव्वरा का ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया तो हज़रत अ़ली ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आप मुझे औ़रतों व बच्चों में छोड़े जाते हैं तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व

आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं हो कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है कि जैसे हारुन (अ़लैहिस्सलाम) का दर्जा मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के नज़दीक था पर मेरे बाद कोई नबी नहीं। (बुख़ारी-सहीह-4/423-ह०-4416)
(मुस्लिम-सहीह-5/558-ह०-6218)
(इब्ने माजा-सुनन-1/72-ह०-115)
(तिर्मिज़ी-सुनन-2/1072-ह०-3724)
(मिश्कात-3/534-ह०-6087)
(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/263-ह०-4652)
(मुस्नद अहमद-2/227-ह०-1608)
(तबरानी-मुअ़जम कबीर-3/658-ह०-4952)
(तबरानी-मुअ़जम सग़ीर-1/518-ह०-890)
(अबू यअ़ाला-अल मुस्नद-1/254-ह०-339,694,734,735)
(अहमद-फ़ज़ाइले सहाबा-1/317-ह०-956,960,1041)
(इब्ने अबी शैबा-9/503-ह०-32732)
(इब्ने हिब्बान-सहीह-8/111-ह०-6927)
(कंजुल उ़म्माल-6/284-ह०-32878)
(सयूती-तारीख़े खुल्फ़ा-1/172)
(इब्ने हजर मक्की-सवाइकुल मुहर्रिका-1/415)
(नसाई-ख़साइसे अ़ली-1/105-ह०-44)

हज़रत हारुन (अ़लैहिस्सलाम) मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के चचा ज़ाद भाई थे और हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के चचा ज़ाद भाई थे जब आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ग़ज़वए तबूक पर जाने के लिये तैयार थे उस वक़्त आपने ये फ़रमाया कि ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी व खुश नहीं हो कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसे हारुन का मूसा

(अ़लैहिमस्सलाम) के नज़दीक था इस इरशादे मुबारक से हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को वो शरफ़ (मर्तबा) मिला जो बनी ईसराईल में हारुन (अ़लैहिस्सलाम) को मिला था मगर फ़र्क़ इतना था कि हारुन अ़लैहिस्सलाम नबी हैं और हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ख़ातिमुल अम्बिया हैं आपके बाअ़द कोई पैग़म्बर दुनिया में नहीं आना था।

जब हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ग़ज़वए तबूक पर जाने लगे तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को मदीना मुनव्वरा का ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया तो हज़रत मौला अ़ली ने अ़र्ज़ किया कि आप मुझे अपने साथ ग़ज़वए तबूक पर नहीं ले जा रहे हैं बल्कि औ़रतों और बच्चों की देखभाल व हिफ़ाज़त के लिये मदीने में छोड़े जा रहे हैं तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क्या तुम इस बात पर राज़ी और खुश नहीं कि तुम्हारा मेरे साथ तअ़ाल्लुक़ इस तरह है जिस तरह हारुन का मूसा (अ़लैहिमस्सलाम) के साथ तअ़ाल्लुक़ था जब हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) कोहे तूर पर गये थे तो हज़रत हारुन (अ़लैहिस्सलाम) को अपना ख़लीफ़ा बना गये थे लेकिन इस हदीस ये मुराद नहीं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के विसाल के बाद भी आप ख़लीफ़ा होंगे बल्कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने वक़्ती तौर पर ख़लीफ़ा मुक़र्रर किया था ग़रज़ ये है कि जो क़राबत हारुन (अ़लैहिस्सलाम) को मूसा (अ़लैहिस्सलाम) से थी उससे कई गुना ज़्यादा क़राबत हज़रत अ़ली को हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से थी।

-: तीन फ़ज़ीलतें :-

➡हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास को हुक्म दिया और पूछा कि तुम अबू तुराब (यानी हज़रत अ़ली) को बुरा क्यों नहीं कहते हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास ने कहा मैं तीन बातों की वजह से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को हरगिज़ बुरा नहीं कहूँगा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाई थीं मैंने सुना है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली से ग़ज़बा-ए-तबूक पर जाते वक़्त मुख़ातिब होकर फ़रमाया ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि तुम्हारा दर्जा मेरे नज़दीक ऐसा है जैसा कि हारुन का मूसा (अ़लैहिमस्सलाम) के नज़दीक था पर मेरे बाअ़द कोई नबी नहीं

और मैंने सुना है ख़ैबर के दिन आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कल मैं ऐसे शख़्स को झण्डा दूँगा जो मुहब्बत रखता है अल्लाह व उसके रसूल से और अल्लाह और उसका रसूल भी उससे मुहब्बत रखते हैं और उसके हाथों पर अल्लाह तआ़ाला फ़तह देगा पस ये सुनकर हम इंतिज़ार करते रहे और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली को बुलाओ फिर हज़रत अ़ली आये तो उनकी आँखें दुख्तीं थीं तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम की आँखों पर अपना लुआ़बे दहन मुबारक लगाया (पस उनकी आँखों की तमाम तकलीफ़े ख़त्म हो गईं) फिर हज़रत मौला अ़ली को झण्डा दिया

गया और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अ़ली के हाथ पर फ़तह दी और मैंने सुना है जब ये आयत नाज़िल हुई कि बुलायें हम अपने बेटों को और बुलाओ तुम अपने बेटों को और अपनी औ़रतों को और तुम्हारी औ़रतों को और अपने आपको और तुम्हें भी (एक जगह पर) बुला लेते हैं फिर हम मुबाहला करते हैं और झूठों पर अल्लाह की लाअ़नत भेजते हैं (सू०-आले इमरान-3/61) तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत मौला अ़ली, सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को बुलाया और फ़रमाया कि ऐ अल्लाह ये मेरे अह्ले बैत हैं (अबू तुराब हज़रत मौला अ़ली की कुन्नियत है)

(मुस्लिम–सहीह–4/559-ह०-6220)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1078-ह०-3724)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/225-ह०-4575)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क्बा–1/61)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/113-ह०-54)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/43-ह०-11)

मज़कूरा हदीस मुबारका से कई बातें वाज़ेह हुईं हैं एक ये कि अल्लाह व रसूल और हज़रत अ़ली की बाहमी मुहब्बत व क़राबत इस बात पर दलालत करती है कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मरतबत के आअ़ला मक़ामो मन्ज़िलत पर फ़ाइज़ हैं और दूसरी बात रहमते दो आ़लम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब को साबित करती है कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये फ़रमाना कि कल मैं उस शख़्स को झण्डा अ़ता करूँगा कि जिसके हाथों पर अल्लाह तआ़ला फ़तह देगा ये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के इल्मे ग़ैब पर दलालत करता है।

तीसरी बात ये कि जब आयते मुहाबला नाज़िल हुई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अब्नाअना में हज़रत इमाम हसन व हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को और निसाअना में सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) को और अन्फुसाना में हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने साथ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को शामिल किया और फ़रमाया ये मेरे अहले बैत हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के इस फ़रमाने मुबारक ने लोगों के अहले बैत के मुताअ़ल्लिक़ मुग़ालते की नफ़ी कर दी कि कोई शख़्स अ़ली, फ़ातिमा हसन व हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) को मेरे अहले बैत से जुदा गुमान न करे बल्कि मेरे अह्ले बैत में हज़रत मौला अ़ली सय्यदा फ़ातिमा और इमाम हसन व इमाम हुसैन (अ़लैहिमुस्सलाम) आअ़ला दरजात के मन्सब पर फाइज़ है।

➡हज़रत साअ़द बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को तीन ऐसी फ़ज़ीलतें हासिल हैं कि अगर मुझे उनमें से एक भी हासिल हो तो वो मेरे लिये दुनिया व जो कुछ इसमें है इससे बेहतर है एक ये कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ग़दीरे खुम के दिन अल्लाह तआ़ला की हम्दो सना करने के बाअ़द फ़रमाया क्या तुम जानते हो कि मैं मोमिनीन पर उनकी जानों से भी ज़्यादा हक़ रखता हूँ लोगों ने कहा क्यों नहीं या रसूलल्लाह फिर आपने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है नीज़ फ़रमाया ऐ अल्लाह तू उसे दोस्त रख जो अ़ली को दोस्त रखे और उससे दुश्मनी रख जो अ़ली से दुश्मनी रखे दूसरी

फ़ज़ीलत है कि हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को ग़ज़वाए ख़ैबर के मौक़े पर लाया गया उस वक़्त आपकी आँखों में तकलीफ़ थी आपने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी आँखों में तकलीफ़ है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली की आँखों में अपना लुआ़बे दहन लगाया और हज़रत अ़ली के लिये दुआ़ फ़रमाई उसके बाअ़द शहादत तक कभी भी आपको आँखों में तकलीफ़ नहीं हुई और अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हाथ पर ख़ैबर फ़तह फ़रमाया

तीसरी फ़ज़ीलत ये है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने चचा हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) और दीगर सहाबा किराम को मस्जिद से मुन्तक़िल होने का हुक्म दिया तो हज़रत अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने आपसे अ़र्ज़ की कि आप हमें यहाँ से मुन्तक़िल होने का हुक्म दे रहे हैं हालांकि हम आपके क़रीबी रिश्तेदार और आपके चचा हैं और हज़रत अ़ली को मस्जिद में ठहरा रहे हैं पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने न तो तुम्हें मुन्तक़िल किया है और न ही अ़ली को ठहराया है बल्कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मस्जिद से मुन्तक़िल किया है और अ़ली को ठहराया है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/239-ह०-4601)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/82-ह०-36495)

➡ हज़रत अबू हुरैरा व हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं हज़रत अ़ली को तीन फ़ज़ीलतें अ़ता की गईं अगर मुझे उनमें

से कोई एक भी मिली होती तो ये मेरे लिये सुर्ख़ ऊँटों के मिलने से ज़्यादा खुशकुन होती तो पूछा गया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन वो फ़ज़ीलतें कौन सी हैं पस आपने फ़रमाया 1- नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की साहबज़ादी उनके अ़क्द में आयीं 2- वो रसूलुल्लाह के हमराह मस्जिद में रिहायश पज़ीर थे और उनके लिये मस्जिद में सब कुछ हलाल था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम के लिये हलाल था 3- ग़ज़वए ख़ैबर के दिन अ़लम हज़रत मौला अ़ली को अ़ता हुआ।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/253-ह०-4632)
(मुस्नद अहमद–1/353-ह०-4797)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/111-ह०-14698)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/135-ह०-955)
(इब्ने अबी शैबा–9/512-ह०-32762)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–4/333-ह०-5575)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/60-ह०-36359)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/432)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/175)

➡ मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से हज़रत मौला अ़ली के बारे में कुछ कहा तो हज़रत साअ़द को गुस्सा आ गया फिर हज़रत साअ़द ने मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान से कहा कि तुम हज़रत मौला अ़ली के बारे में ऐसी बातें करते हो जिनके पास ये फ़ज़ाइल हैं कि जिनमें से एक फ़ज़ीलत भी मेरे मुताअ़ल्लिक़ होती तो वो मेरे लिये सुर्ख़ ऊँटों से बेहतर होती 1- ग़ज़वए ख़ैबर के दिन आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने उनको झण्डा दिया और ख़ैबर फ़तह हुआ 2- आप

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम्हारी मेरे साथ वही निस्बत है जो हारुन की मूसा (अ़लैहिमस्सलाम) के साथ थी 3- आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली भी मौला है।
(इब्ने माजा–सुनन–1/74-ह०-121)
(इब्ने अबी शैबा–9/504-ह०-32741)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/362-ह०-1093)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/44-ह०-12)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/195-ह०-126)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली को तीन ख़सलतें अ़ता की गईं हैं और उनमें हर एक मुझे हर उस चीज़ से ज़्यादा महबूब है कि जिस पर सूरज तुलूअ़ होता है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुमने मोमिनीन में सबसे पहले इस्लाम कुबूल किया और तुम्हारा मेरे साथ तआ़ल्लुक़ ऐसा है जैसा हारुन (अ़लैहिस्सलाम) का मूसा (अ़लैहिस्सलाम) के साथ था और झूटा है वो शख़्स जो मेरी मुहब्बत का दाअ़वा करता हो और वो तुझसे बुग्ज़ रखता हो। (कंजुल उ़म्माल–7/66-ह०-36392)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़कीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया शबे मेअ़राज अल्लाह तआ़ला ने मुझे वही के ज़रिये हज़रत अ़ली की तीन सिफ़ात की ख़बर दी हैं कि हज़रत अ़ली तमाम मोमिनीन के सरदार हैं व तमाम मुत्तक़ीन के इमाम हैं–

और क़यामत के दिन नूरानी चेहरे वालों के क़ायद हैं।
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–2/88)

–: सात फ़ज़ीलतें :–

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली से फ़रमाया कि ऐ अ़ली मैं तुम्हारे ऊपर ग़ालिब हूँ नबूवत की वजह से और तुम औरों पर ग़ालिब हो सात बातों की वजह से उनमें से तुम्हारे साथ कोई दूसरा शामिल नहीं है कि कुरैश में से तुमने सबसे पहले ईमान कुबूल किया और तुम सबसे ज़्यादा अ़हद को पूरा करने वाले हो और अल्लाह तआ़ला के अहकाम को ज़्यादा क़ायम करने वाले हो और तुम रिआ़या के साथ सबसे ज़्यादा इन्साफ़ करने वाले हो और मुक़द्दमा को सबसे ज़्यादा समझने वाले साहिबे बसीरत हो और तुम रिआ़या के साथ सबसे ज़्यादा शफ़क़त करने वाले हो और अल्लाह तआ़ला के यहाँ सबसे ज़्यादा खुसूसियत व मर्तबे वाले हो। (कंज़ुल उ़म्माल–6/292-ह०-32994,32995)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-203,204)
(तबरी–रियाजुन्नजरा–1/133)

रसूलुल्लाह ने सबसे ज़्यादा फ़ज़ाइल मौला अ़ली के बयान फ़रमाये

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के जिस क़दर फ़ज़ाइल बयान–

फ़रमाये उस क़दर किसी और के फ़ज़ाइल बयान नहीं फ़रमाये। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/222-ह०-4572)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-216)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/172)

➡हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के किसी सहाबी के फ़ज़ाइल में इतनी अहादीस वारिद नहीं हैं जितनी अहादीस हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के बारे में हैं। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/223-ह०-4572)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/172)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/413)

–: मौला अ़ली की चार खुसूसियात :–

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) में चार खुसूसियात ऐसी हैं कि जो किसी दूसरे में नहीं पाई जातीं 1- तमाम अ़रब व अजम में हज़रत मौला अ़ली ऐसे शख़्स हैं कि जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हमराह सबसे पहले नमाज़ पढ़ी 2- हर जंग में झण्डा हज़रत मौला अ़ली के पास ही रहा 3- जिस दिन लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को छोड़कर जंग से भाग गये थे मगर हज़रत मौला अ़ली साबित क़दम रहे और हज़रत मौला अ़ली ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के साथ सब्र किया 4- हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ही वो शख़्स हैं जिन्होंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को

गुस्ल दिया और लहद में उतारा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/229-ह०-4582)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–1/600,601)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/148)

–: अट्ठारह सिफ़ात :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) में अट्ठारह (18) सिफ़ात ऐसे थे कि जो किसी दूसरे सहाबी में इकट्ठा नहीं थे।
(सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/175)

मौला अ़ली के उ़म्दाह औसाफ़ में एक वस्फ़ भी तक़सीम हो तो वो वसीअ़ हो

➡ हज़रत अबू तुफ़ैल (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) में इतने बेहतरीन औसाफ़ जमाअ़ हैं कि अगर उनमें से एक को भी लोगों के दरमियान तक़सीम कर दिया जाये तो वो ख़ैर के एतबार से बहुत ज़्यादा वसीअ़ हों।
(इब्ने अबी शैबा–9/522-ह०-32791)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/603)

हज़रत मौला अ़ली व हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ की फ़ज़ीलत

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जंगे बदर के मौक़ेअ़ पर मेरे और हज़रत

अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के बारे में इरशाद फ़रमाया कि तुम में से एक की दायीं जानिब हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) हैं और दूसरे की दायीं जानिब हज़रत मीकाइल (अ़लैहिस्सलाम) हैं और हज़रत इसराफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) बहुत अ़ज़ीम फ़रिश्ते हैं जो कि जंग में हाज़िर होते हैं और सफ़ों में शरीक होते हैं (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/268-ह०-4653)

–: मौला अ़ली का हुस्ने अख़लाक़ :–

➡ हज़रत ज़िरार बिन ज़म्राह फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़ैसला कुन बात करते थे और आ़दिल थे और आपसे इल्म व हिकमत के चश्मे जारी होते थे और आप दुनिया व उसकी आराइश से कोसों दूर रहते थे और आप रात में अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र व इबादत में मशगूल रहा करते थे और आप हमेशा मुताफ़क्किर रहते थे और आप अपने नफ़्स का मुहासिबा करते थे और हममें से जब कोई आपके पास जाता तो वो अपने क़रीब बैठाते थे और वो हमारे हर सुवाल का जवाब देते थे और आप तकल्लुम के वक़्त (कलाम करते वक़्त) गोया उनके दहन मुबारक से मोती झड़ते थे और आप अहले दीन की ताअ़ज़ीम करते थे मसाकीन से मुहब्बत फ़रमाते थे आपके दौरे हुकूमत में किसी ने भी नाजाइज़ फ़ायदा नहीं उठाया और आपके अ़द्ल की वजह से कमज़ोर इन्सान कभी भी नाउम्मीद नहीं होता था मैंने रात को आपको रोते हुये देखा और आप दुनिया से कहते थे कि तेरा मेरा कोई तआ़ल्लुक़ नहीं क्योंकि तेरी उ़म्र कम है।

(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/89-ह०-261)

(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–24/401)

रसूलुल्लाह ने मौला अ़ली के फ़ज़ाइल बयान फ़रमाये

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के कंधे पर अपना हाथ मुबारक रखकर फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुझसे अ़दावत की जायेगी और झगड़ा किया जायेगा और तुम ईमान के ऐतबार से पहले मोमिन हो और तुम सबसे ज़्यादा इ़ल्म रखते हो और तुम सबसे ज़्यादा वाअ़दा वफ़ा करते हो और सबसे ज़्यादा दुरस्ती पर चलने वाले हो लोंगों पर सबसे ज़्यादा मेहरबान हो और तुम मेरे बाजू हो और मुझे गुस्ल देने वाले और मुझे दफ़्न करने वाले हो और हर सख़्ती व परेशानी में आगे बढ़ने वाले हो और तुम क़यामत के दिन हम्द का झण्डा उठाये मुझसे आगे चलोगे ऐ अ़ली तुम हौज़े कौसर पर मेरे साथ होगे हज़रत इब्ने अ़ब्बास फ़रमाते हैं कि मौला अ़ली तन्ज़ील व तावील का इ़ल्म रखते थे (कंजुल उ़म्माल–7/64-ह०-36378)

अम्बिया किराम के औसाफ़ मौला अ़ली में

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) का इ़ल्म व हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) का फ़हम और हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) का हिल्म और हज़रत याह्या बिन ज़करिया (अ़लैहिमस्सलाम) का जुहद और हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) का बत्स (हमला करना)–

देखना चाहे तो उसे चाहिये कि वो अ़ली की तरफ़ देखे अ़ली में ये तमाम सिफ़ात मौजूद हैं।
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/192)

मौला अ़ली दुनिया व आख़िरत में सरदार हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तू दुनिया व आख़िरत में सरदार है और तेरा महबूब मेरा महबूब है और मेरा महबूब अल्लाह का महबूब है और तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन है और मेरा दुश्मन अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है और उसके लिये हलाकत (बर्बादी) है जो मेरे बाअ़द तुम्हारे साथ बुग्ज़ रखे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/257-ह०-4640)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/210-ह०-8325)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली तमाम मोमिनों के सरदार हैं और माल मुनाफ़िक़ीन का सरदार है।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/286-ह०-32915)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/426)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तू दुनिया व आख़िरत में सरदार है जो तुझसे मुहब्बत करेगा वो मुझसे मुहब्बत करेगा और जिसने तुझसे मुहब्बत की उसने

मुझसे मुहब्बत की और तेरा महबूब मेरा महबूब तेरा दुश्मन मेरा दुश्मन है और तेरा दोस्त मेरा दोस्त और मेरा दोस्त अल्लाह तआ़ला का दोस्त है और तुम्हारा दुश्मन मेरा दुश्मन है और मेरा दुश्मन अल्लाह तआ़ला का दुश्मन है और हलाकत व बर्बादी है उस शख़्स के लिये जो मेरे बाअ़द तुमसे बुग्ज़ रखेगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/257-ह०-4640)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/361-ह०-1092)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/210-ह०-8325)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/74)

➡उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अनस अ़रब के सरदार को बुला लाओ हज़रत आयशा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल क्या आप अ़रब के सरदार नहीं हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं औलादे आदम का सरदार हूँ और अ़ली अह्ले अ़रब के सरदार हैं। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/251-ह०-4626)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/105-ह०-14682)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14753)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/377-ह०-2683)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/90-ह०-2749)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/738-ह०-1468)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/293-ह०-33007)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/74-ह०-364481)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/63)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/129)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/72)

➡ हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने वुजू फ़रमाया फिर दो रकअ़त नमाज़ अदा की फिर फ़रमाया कि ऐ अनस इस दर'वाज़े से दाख़िल होने वाला सय्यदुल मुस्लिमीन होगा और मैं दिल ही दिल में ये दुआ़ करता रहा कि ऐ अल्लाह दाख़िल होने वाले का तआ़ल्लुक़ अन्सार से हो फिर कुछ देर बाअ़द हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) दाख़िल हुये हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ की आज आपने मेरे मुताअ़ल्लिक़ अजीब बात इरशाद फ़रमाई फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐसा ही होगा।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/72-ह०-192)

➡ हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि मुसलमानों के सरदार और मुत्तक़ियों के इमाम अ़ली को खुश आमदीद और जो अ़ली की मदद करेगा वो मदद किया जायेगा और जो अ़ली को बेयारो मददगार छोड़ेगा वो ज़लील होगा।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/274-ह०-4668)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/528-ह०-904)
(कंजुल उ़म्माल–7/87-ह०-36527)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-205)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/425)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/73)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़कीम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया शबे मेअ़राज–

अल्लाह तआ़ला ने मुझे वही के ज़रिये हज़रत अ़ली की तीन सिफ़ात की ख़बर दी है कि हज़रत अ़ली तमाम मोमिनीन के सरदार हैं व तमाम मुत्तक़ीन के इमाम हैं और क़यामत के दिन नूरानी चेहरे वालों के क़ायद हैं। (तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–2/88)

मौला अ़ली के हक़ में तीन सौ कुरान की आयात नाज़िल हुईं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने कुरान मजीद की जितनी आयतों में ''या अय्युहल लज़ीना आमनू'' करके ख़िताब किया है उसमें हज़रत अ़ली मोमिनीन के सरदार और अमीर मुराद हैं कुरान में बाअ़ज़ मक़ामात पर दूसरे सहाबा किराम को इ़ताब किया गया लेकिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को हर जगह भलाई के साथ याद फ़रमाया गया हज़रत मौला अ़ली की शान में अल्लाह तआ़ला ने जो कुछ भी फ़रमाया वो दूसरों के लिये नहीं फ़रमाया हज़रत मौला अ़ली की शान में 300 आयात कुरान में मौजूद हैं।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/369-ह०-1114)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/74-ह०-194)
(सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/432)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हक़ में कुरान मजीद में तीन सौ आयात नाज़िल हुईं (इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/369)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि कुरान मजीद में जितनी आयात हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हक़ में नाज़िल हुईं किसी और के हक़ में नाज़िल नहीं हुईं।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/363)

रसूलुल्लाह का हज़रत अ़ली से खूनी तअ़ाल्लुक़

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से फ़रमाया कि ये अ़ली बिन अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) हैं इनका खून मेरा खून है और इनका गोस्त मेरा गोस्त है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/18-ह०-12341)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/99-ह०-14654)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/287-ह०-32933)

➡ हज़रत बरा बिन आ़ज़िब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की अहमियत और मन्ज़िलत मेरे नज़दीक वही है जो मेरे सर की मेरे बदन के लिये है जो मेरे जिस्म से सर को हासिल है। (कंज़ुल उ़म्माल–6/286-ह०-32911)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/425)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/34)

➡ हज़रत जाबिर व इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु

तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं और अ़ली एक ही नस्ल से हैं जबकि लोग मुख़्तलिफ़ नस्लों से हैं और एक रिवायत में है आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली लोग मुख़्तलिफ़ नस्लों से हैं और मैं और तुम एक ही नस्ल से हैं।
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32940,32941)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/82-ह०-14582)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/50-ह०-6888)

हक़ अ़ली के साथ अ़ली हक़ के साथ

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ये दुअ़ा मांगी ऐ अल्लाह अ़ली पर रहम फ़रमां और ऐ अल्लाह अ़ली जिधर को रुख़ करें हक़ का रुख़ भी उधर को हो जाये।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/173-ह०-3714)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/252-ह०-4629)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हक़ व हिदायत के कामिल व बेहतरीन नमूना थे आपने कभी भी हक़ व हिदायत का और हक़ व हिदायत ने कभी आपका साथ नहीं छोड़ा जिस तरह रुह और जिस्म का मज़बूत बाहमी तअ़ाल्लुक़ होता है उसी तरह से हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हक़ व हिदायत से मज़बूत बाहमी तअ़ाल्लुक़ था और ये सारा फ़ैज़ दुअ़ा–ए–मुस्तफ़ा के असर व निस्बते मुस्तफ़ा के सबब से था।

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है

कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ पर कि उन्होंने मुझे अपनी लड़की ब्याह दी और मुझे हिजरत के घर ले आये और बिलाल को अपने माल से आज़ाद किया और अल्लाह तबारक व तआ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत उ़मर पर कि वो हक़ बात कहते हैं अगरचा किसी को नागवार लगे और हक़ ने उ़मर को ऐसे हाल में छोड़ा कि कोई उसका दोस्त नहीं सिवाए अल्लाह व रसूल के और अल्लाह तआ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत उस्मान पर कि फ़रिश्ते उससे हया करते हैं और अल्लाह तआ़ाला रहमत फ़रमाये हज़रत अ़ली पर और ऐ अल्लाह हक़ हमेशा अ़ली के साथ रहे वो जहाँ कहीं भी हों।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1073-ह०-3714)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/252-ह०-4629)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/483-ह०-5906)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/51-ह०-806)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/206-ह०-550)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/355-ह०-546)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली हक़ के साथ हैं और हक़ अ़ली के साथ है (कंजुल उ़म्माल–6/293-ह०-33018) (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/116)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें बेहतर लोगों की ख़बर न दूँ सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्यों नहीं तो फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेहतर वो है जो पाक है

और वाअ़दों को पूरा करने वाले हैं और रब तआ़ला मुत्तक़ी परहेज़गार को पसंद फ़रमाता है कि इतने में हज़रत मौला अ़ली गुज़रे तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हक़ अ़ली के साथ है हक़ अ़ली के साथ है ये जुमला आपने दो बार फ़रमाया। (अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/58-ह०-1047)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं अ़ली हक़ पर हैं जो इनकी पैर'वी करेगा वो हक़ की पैर'वी करेगा और जो इनकी पैर'वी नहीं करेगा वो हक़ को छोड़ देगा।
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/129-ह०-14768)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली का मुसलमानों पर इस क़दर हक़ है जिस क़दर वालिद का बेटे पर हक़ होता है। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/64)

दुनिया व आख़िरत में मौला अ़ली रसूलुल्लाह के भाई हैं

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सहाबा किराम के दरमियान भाई चारा क़ायम कराया तो हज़रत मौला अ़ली हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में इस हाल में हाज़िर हुये कि आपकी आँखों से आँसू जारी थे आपने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आपने सहाबा के दरमियान भाई चारा क़ायम फ़रमाया लेकिन

मुझे किसी का भाई नहीं बनाया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1076-ह०-3720)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/63-ह०-4288)
(मिश्कात–3/536-ह०-6093)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/335-ह०-1019)
(कंजुल ड़म्माल–6/283-ह०-32876)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/417)
(मनावी–फ़ैज़ुल क़दीर–4/355)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/610)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/49)

रहमते दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को अपना भाई क़रार दिया और दुनिया व आख़िरत में आप इस अज़ीम मर्तबे से बहरेयाब हुये।

➡ नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे भाइयों में सबसे बेहतरीन हज़रत अ़ली हैं और मेरे चचाओं में सबसे बेहतरीन हज़रत हम्ज़ाह हैं। (कंजुल ड़म्माल–6/284-ह०-32890)

➡हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ हुये फिर अल्लाह तआ़ाला की हम्दो सना की फिर फ़रमाया फ़ैसला अल्लाह का फ़ैसला है जो तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की जुबान मुबारक से जारी हुआ है और वो ये है कि मुझसे मोमिन ही मुहब्बत करेगा और मुनाफ़िक़ मुझसे बुग्ज़ रखेगा और वो नुक़सान में हैं कि जिसने इफ़्तिरा

बांधा और मैं अल्लाह का बन्दा हूँ रसूलुल्लाह का भाई हूँ और मेरे बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को कोई भाई न कहे और मेरे बाअ़द जो भी ऐसा दाअ़वा करे वो झूटा है चुनांचा एक शख़्स ने यही बात कही तो वो पागल हो गया।
(इब्ने माजा–सुनन–1/73-ह०-120)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–1/302-ह०-441)
(कंजुल उ़म्माल–7/168-ह०-36410)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/128-ह०-67)

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूँ। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-949)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14750)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने लोगों के दरमियान मुआ़ाख़ात (भाईचारा) क़ायम किया और मुझे छोड़ दिया मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह कि आपने सहाबा के दरमियान मुआ़ाख़ात क़ायम की और मुझे छोड़ दिया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने तुम्हें अपने लिये चुन लिया है तुम मेरे भाई हो और मैं तुम्हारा भाई हूँ अगर कोई शख़्स तुम्हारे साथ झगड़ा करे तो कह देना कि मैं अल्लाह का बन्दा हूँ और रसूलुल्लाह का भाई हूँ और इसका दाअ़वा तुम्हारे बाअ़द कोई झूटा ही करेगा।
(कंजुल उ़म्माल–7/72-ह०-36440)
(कंजुल उ़म्माल–6/287-ह०-32936)

मौला अ़ली अल्लाह के महबूब बन्दे हैं

➡ हज़रत अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास एक पका हुआ परिन्दा रखा हुआ था आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने दुआ़ माँगी ऐ अल्लाह मख़्लूक़ में से अपने महबूब तरीन शख़्स को मेरे पास भेज दे ताकि वो मेरे साथ ये परिन्दा खाये इतने में मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हाज़िर हुये फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ वो परिन्दा खाया।

(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1076-ह०-3721)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/262-ह०-4650)
(मिश्कात–3/536-ह०-6094)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/640-ह०-6323)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/856-ह०-1744)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/117-ह०-14723)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/313-ह०-945)
(कंजुल उ़म्माल–7/83-ह०-36505,36508)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/41-ह०-10)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611,612)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/29)

हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) का मौला अ़ली को बिन मांगे अ़ता करना

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जब भी मैं कुछ माँगता हूँ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मुझे अ़ता फ़रमाते हैं और अगर मैं ख़ामोश रहता हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मुझसे इब्तिदा फ़रमाते हैं यानी आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) हज़रत अ़ली से खुद पूछते और बग़ैर सुवाल के अ़ता फ़रमाते
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1077-ह०-3722)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/253-ह०-4630)
(मिश्कात–3/536-ह०-6095)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/365-ह०-1099)
(इब्ने अबी शैबा–9/502-ह०-32732)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/65-ह०-36987)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/611)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/186-ह०-119)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से अ़र्ज़ किया गया कि क्या बात है कि आप हदीस में रसूलुल्लाह के असहाब में सबसे ज़्यादा जानने वाले हैं आपने फ़रमाया कि जब मैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से पूछा करता था तो आप मुझे बता देते थे और जब मैं ख़ामोश रहता तो आप खुद मुझे बताया करते थे। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/408-ह०-5913)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/68-ह०-36405)
(इब्ने साअ़द–तबकातुल कुबरा–2/275)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/74)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/419)

अल्लाह तआ़ला ने मौला अ़ली से सरगोशी फ़रमाई

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी

है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने तॉयफ़ के दिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुलाया और फिर उनसे सरगोशी (कानाफूसी) की और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम के साथ सरगोशी तवील हो गई तो फिर लोगों ने कहा कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने चचाज़ाद भाई हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के साथ बहुत देर तक सरगोशी की है तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने अ़ली से सरगोशी नहीं की बल्कि अल्लाह तआ़ाला ने खुद हज़रत अ़ली से सरगोशी फ़रमाई है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1080-ह०-3726)
(मिश्कात–3/537-ह०-6097)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/186-ह०-1756)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–1/343-ह०-2160)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/296-ह०-33049)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/608)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/140)

रसूलुल्लाह की दुआ़ मेरा विसाल न हो जब तक अ़ली को न देख लूँ

➡ हज़रत उम्मे अ़तीया (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से रिवायत है कि सरकारे दो आ़लम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने एक लश्कर भेजा था कि जिसमें हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) भी थे मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हाथ उठाये दुआ़ माँगते हुये सुना था ऐ अल्लाह उस वक़्त तक मेरा विसाल न करना जब तक

कि मुझे अ़ली को न दिखादे।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1083-ह०-3737)
(मिश्कात–3/537-ह०-6099)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–25/68-ह०-168)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/221-ह०-2432)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/343-ह०-1039)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/608)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/186)

हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहस्सलाम) की जुदाई में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का ये दुआ़ फ़रमाना इंतिहाई मुहब्बत की अ़लामत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हज़रत मौला अ़ली से बेहद मुहब्बत थी और मौला अ़ली को भी हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम से बेइंतिहा मुहब्बत थी हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) अल्लाह व रसूल के मुहिब भी थे और मेहबूब भी थे।

रसूलुल्लाह ने अ़ली के सिवा सब दर‘वाज़े बन्द करने का हुक्म दिया

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास व हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) से रिवायत है नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के दर‘वाज़े के सिवा तमाम दर‘वाज़े बन्द करने का हुक्म दिया जो कि मस्जिदे नबवी में खुलते थे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के सिवा किसी को हलाल नहीं कि वो हालते जनाबत में इस मस्जिद से गुज़रे हज़रत–

ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कुछ लोगों ने एअ़तराज़ किया तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फरमाया खुदा की क़सम मैंने अपनी मर्ज़ी से न किसी का दर'वाज़ा बन्द कराया है और न किसी का खोले रखा है बल्कि मुझे अल्लाह तआ़ाला ने हुक्म दिया जिसकी मैंने पैर'वी की है। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1080-ह०-3727)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/253-ह०-4631)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/104-ह०-1999)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/194-ह०-3930)
(मुस्नद अहमद–2/364-ह०-3062)
(नसाई–सुनन कुबरा–7/422-ह०-8369)
(मिश्कात–3/5376098-ह०-6098)
(मुस्नद बज़्ज़ार–4/36-ह०-1197)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/422-ह०-699,705,714)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/576-ह०-1038,)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/354-ह०-1042)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/293-ह०-33005,33051,33052)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/104-ह०-14677,14676,14679)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/325-ह०-985)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–4/466-ह०-5141)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/157)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/94-ह०-38,39)

➡ हज़रत साअ़द बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने अपने चचा हज़रत अ़ब्बास (रज़ि अल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) और दीगर सहाबा को मस्जिद से मुन्तक़िल होने का हुक्म फ़रमाया तो हज़रत अ़ब्बास

(रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह आप हमें यहाँ से मुन्तकि़ल होने का हुक्म दे रहे हैं हालांकि हम आपके क़रीबी रिश्तेदार और आपके चचा हैं और हज़रत अ़ली को मस्जिद में ठहरा रहे हैं पस आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैंने न तो तुम्हें मुन्तकि़ल किया है और न ही अ़ली को ठहराया है बल्कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें मस्जिद से मुन्तकि़ल किया है और अ़ली को ठहराया है
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/239-ह०-4601)
(कंजुल उ़म्माल–6/82-ह०-36495)

हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) का खुत्बा

➡ हज़रत इमाम हसन बिन अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) ने खुत्बा दिया और रब तआ़ला की हम्दो सना की और अमीरुल मोमिनीन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का ज़िक्र फ़रमाया कि गुज़िश्ता कल तुमसे वो हस्ती जुदा हो गई कि जिनसे न तो गुज़िश्ता लोग इ़ल्म में सबक़त ले सके और न ही बाअ़द में आने वाले उनके इ़ल्मी मर्तबे को पा सकेंगे हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को अपना झण्डा देकर भेजते थे और जिबराईल (अ़लैहिस्सलाम) आपकी दाँयी तरफ़ होते थे और मीकाईल (अ़लैहिस्सलाम) आपकी बाँयी तरफ़ होते थे और आपकी फ़तह होने तक वो आपके साथ रहते थे और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के वसी थे और सिद्दीक़ीन व शुहदा के अमीन थे और मैं यानी हज़रत हसन (अ़लैहिस्सलाम) ग़ैब की ख़बरें बताने वाले

नबी का लख़्ते जिगर हूँ और मैं रहमतुललिल आ़लमीन का बेटा हूँ और मैं उन घर वालों का बेटा हूँ जिनसे अल्लाह तआ़ला ने पलीदी दूर कर दी और मैं उस घर का चश्मो चिराग़ हूँ कि जिनकी मुहब्बत और विलायत अल्लाह तआ़ला ने फ़र्ज़ की है फिर हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) ने सूरह शूरा की आयत पढ़ी 'ऐ प्यारे हबीब आप फ़रमां दें मैं इस (तबलीग़े दीन) पर तुमसे कोई उजरत व मुआवज़ा नहीं मांगता सिवाए अपने घर वालों की मुहब्बत के'।

(मुस्नद अहमद–2/344-ह०-1719)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/334-ह०-4802)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/364-ह०-2651,2656)
(तबरानी–मुअ़जम–औसत–2/83-ह०-2155)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/143-ह०-14798)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/307-ह०-922)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–5/179-ह०-6725)
(इब्ने अबी शैबा–9/510-ह०-32757)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/124-ह०-6936)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/65-ह०-23)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/75-ह०-201)

हज़रत मौला अ़ली ने क़िलाअ़ ख़ैबर का दर'वाज़ा उठा लिया

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि बिला शुबा ग़ज़बा–ए–ख़ैबर के दिन हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने अकेले ही क़िलाअ़ ख़ैबर का दर'वाज़ा उठा लिया यहाँ तक कि मुसलमान क़िलेअ़ पर चढ़ गये और उसे फ़तह कर लिया और बेशक ये बात आज़माई है कि उस दर'वाज़े को चालीस आदमी–

मिलकर उठाते थे। (इब्ने अबी शैबा–9/524-ह०-32802) (कंज़ुल उ़म्माल–7/71-ह०-36431)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/412)
(कशफुल ख़िफ़ा–1/365-ह०-1168)

हज़रत मौला अ़ली फ़ातेह ख़ैबर हैं

➡ हज़रत सहल बिन साअ़द व हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि ख़ैबर के दिन मैंने नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि ज़रुर मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह व उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल भी उससे मुहब्बत करते हैं और वो पीठ फेर कर नहीं भागेगा पस लोगों ने इसी बात का तज़किरा करते हुये रात गुज़ारी कि झण्डा किसको अ़ता होगा जब सुबह हुई तो लोग हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाह में हाज़िर हुये तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अ़ली कहाँ हैं तो लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह उनको आँखों में तकलीफ़ है यानी उनकी आँखें दुखती हैं फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उनको बुलवाया तो जब हज़रत अ़ली आये तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ली की आँखों में अपना लुआ़बे दहन मुबारक लगाया व उनके लिये दुआ़ की पस वो उसी जगह तन्दरुस्त हो गये और उनकी आँखों की तकलीफ़ बिल्कुल ख़त्म हो गई कि गोया उनको कोई तकलीफ़ थी ही नहीं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उनको झण्डा–

अ़ता फ़रमाया तो उन्होंने अ़र्ज़ की या रसूलुल्लाह क्या हम उनसे जिहाद इसलिये करें कि वो हमारी मिस्ल हो जायें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया आप उनके सहन में उतरें और उन्हें इस्लाम की दाअ़वत दें और उनको वो बात बतायें जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उन पर वाजिब है फिर अगर वो गवाही दें कि अल्लाह के सिवा कोई माअ़बूद नहीं और बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तो उन्होंने मुझसे अपनी जान व माल को बचा लिया तो खुदा की क़सम आपकी रहनुमाई से एक शख़्स को अल्लाह तआ़ला का हिदायत देना आपके लिये सुर्ख़ ऊँटों से ज़्यादा बेहतर है हज़रत सलमा बिन अक्वाअ़ फरमाते हैं कि हज़रत अ़ली तेज़ी से निकले और मैं आपके पीछे चला फिर हज़रत अ़ली ने आगे बढ़कर हमला किया क़िलेअ़ के ऊपर से एक यहूदी ने देखा तो उसने कहा कि आप कौन हैं आपने फ़रमाया मैं अ़ली हूँ तो यहूदी ने कहा कि आप ग़ालिब आ गये हो फिर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली के हाथ पर फ़तह दी। (बुख़ारी–सहीह–3/738-ह०-3701)
(मुस्लिम–सहीह–4/560-ह०-6222,6223,6224)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/117-ह०-6932)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/106-ह०-4342)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/328-ह०-5744,6178)
(मुस्नद अहमद–1/641-ह०-1608)
(मिश्कात–3/534-ह०-6089)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/259-ह०-349)
(इब्ने अबी शैबा–9/511-ह०-32759)
(अहमद–फ़ज़ाइले सहाबा–1/326-ह०-988,1009,1030)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/48-ह०-15,16)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/415)
(सयूती–तारीखे़ खुल्फ़ा–1/173)

➡ हज़रत अबू लैला (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि कल मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह तआ़ाला व उसके रसूल भी उससे मुहब्बत करते हैं फिर आपने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को बुलाया और उनको झण्डा दिया
(बुख़ारी–सहीह–3/739-ह०-3702)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/105-ह०-4342)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/632-ह०-6307)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/432-ह०-588)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/119-ह०-6934)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/114-ह०-14714)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/45-ह०-13)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैं झण्डा ऐसे शख़्स को दूँगा जो अल्लाह व उसके रसूल से मुहब्बत करता है और अल्लाह व उसके रसूल भी उससे मुहब्बत करते हैं और वो भागता नहीं बल्कि वो बढ़कर हमला करता है अल्लाह तआ़ाला उसके हाथ पर फ़तह नसीब फ़रमायेगा और जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) उसकी दांयीं तरफ़ होंगे और मीकाईल (अ़लैहिस्सलाम) उसकी बांयीं तरफ़ होंगे तो लोगों ने उम्मीद की हालत में रात गुज़ारी फिर जब सुबह हुई तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अ़ली कहाँ हैं तो लोगों ने कहा या रसूलल्लाह उनकी आँखें दुखती हैं आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली को मेरे पास लाओ तो जब हज़रत–

अ़ली आपके पास आये तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली की आँखों में अपना लुआ़बे दहन लगाया फिर हज़रत अ़ली उठ खड़े हुये उन्हें यूँ लगा गोया उन्हें आँखों का कोई मर्ज़ था ही नहीं फिर अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हाथ पर फ़तह अ़ता फ़रमाई।
(मुस्नद अहमद–2/364-ह०-3062)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/66-ह०-36393)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/602,609)

हर जंग में झन्डा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को दिया गया

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि बदर की जंग में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने झन्डा हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को दिया सिर्फ़ बदर ही नहीं बल्कि तमाम जंगों में सिवाए तबूक के झन्डा हज़रत अ़ली को दिया गया। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/108,163)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि बदर की जंग में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने झन्डा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को दिया उस वक़्त आपकी उ़म्र 20 साल थी।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/230-ह०-4583)
(फ़ज़ाइले सहाबा–1/367-ह०-1106,1159)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/150-ह०-5202)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/108)

हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना इ़बादत है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/281-ह०-4682)
(हेसमी–मजमउ़ज़्ज़वाइद–9/109-ह०-14694)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–10/93-ह०-10006)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/48-ह०-6865)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/295-ह०-33039)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–5/58)
(सयूती–तारीख़े ख़ुल्फ़ा–1/175)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/351,355)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं मैंने अपने वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को देखा कि वो कसरत से हज़रत अ़ली के चेहरे को देखा करते थे तो मैंने आपसे पूछा कि ऐ अब्बा जान क्या वजह है कि आप कसरत से हज़रत अ़ली के चेहरे की तरफ़ देखते रहते हैं तो उन्होंने जवाब दिया ऐ मेरी बेटी मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है। (अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–2/182)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/355)
(तबरी–रियाज़ुन्नज़रा–1/194)

➡ हज़रत इमरान बिन हुसैन व हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल व हज़रत जाबिर व हज़रत अनस बिन मालिक (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली के चेहरे को देखना भी इ़बादत है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/280-ह०-4681)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/48-ह०-6866)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/353)

➡ हज़रत तलीक़ बिन मुहम्मद रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फरमाते हैं मैंने हज़रत इ़मरान बिन हुसैन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) को देखा कि वो हज़रत मौला अ़ली को टकटकी बाँधे देख रहे थे किसी ने उनसे पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं तो उन्होंने जवाब दिया कि मैंने हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम को फ़रमाते हुये सुना है कि हज़रत अ़ली की तरफ़ देखना भी इ़बादत है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/280-ह०-4681)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/109-ह०-4695)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–18/109-ह०-207)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32892)

अ़ली का ज़िक्र इ़बादत है

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली का ज़िक्र भी इ़बादत है। (देलमी–अल फ़िरदौस–2/244-ह०-3151)
(कंजुल उ़म्माल–6/284-ह०-32891)

अ़ली व कुरान का बाहमी तअ़ाल्लुक़

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना है कि अ़ली और कुरान का चोली दामन का साथ है ये दोनों कभी भी जुदा न होंगे यहाँ तक कि मेरे पास हौज़े कौसर पर (भी इकट्ठे) आयेंगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/251-ह०-4628)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/707-ह०-4880)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/255)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/129-ह०-14767)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/285-ह०-32909)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/421,428)

सूरह मरयम की आयत मौला अ़ली की शान में नाज़िल हुई

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं ये आयते करीमा ''बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मल किये तो (खुदाये) रहमान उनके लिये लोगों के दिलों में मुहब्बत पैदा फ़रमां देगा (सूरह–मरयम–19/96) ये आयते करीमा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शान में उतरी है और इससे मुराद मोमिनीन के दिलों में हज़रत अ़ली की मुहब्बत डालना है। (मुअ़जम औसत–4/304-ह०-5514,5516)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/116-ह०-14722)
(तफ़्सीर कुरतबी–6/153)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि ये आयत हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के हक़ में नाज़िल हुई कि मोमिनीन के दिलों में हज़रत मौला अ़ली की मुहब्बत डाल दी।
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–4/747) (तफ़्सीर मज़हरी–6/161)

इमाम अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत किया है कि इस आयत से मुराद दुनिया में मोमिनीन के दिलों में हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम की मुहब्बत पैदा करना है।
(तफ़्सीर अब्दुल रज़्ज़ाक़–2/367)
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–4/748)

सूरह बक़राह की आयत मौला अ़ली की हक़ में नाज़िल हुई

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जो लोग (अल्लाह की राह में) शब व रोज़ अपने माल पोशीदा व ज़ाहिर ख़र्च करते हैं तो उनके लिये उनके रब के पास उनका अज्र है और रोज़े क़यामत उन पर न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो रंजीदा होंगे।
(सूरह–बक़राह–2/274)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान फ़रमाते हैं कि ये आयते करीमा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के हक़ मे नाज़िल हुई कि आपके पास चार दिरहम थे तो आपने एक दिरहम रात को व एक दिरहम दिन को और एक दिरहम खुफ़िया और एक दिरहम ऐलानियाँ ख़र्च किया।

(सयूती–दुर्रे मन्सूर–1/936)(तफ़्सीर इब्ने अ़ब्बास–1/165) (तफ़्सीर इब्ने कसीर–1/384) (तफ़्सीर मज़्हरी–1/539) (तफ़्सीर कुरतबी–2/419)

कुरान मजीद की सूरह तहरीम में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को सालिहुल मोमिनीन फ़रमाया–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

तो बेशक अल्लाह ही उनका दोस्त व मददगार है और जिबरईल और सालिहुल मोमिनीन (नेक ईमान वाले) और फ़रिश्ते उनके मददगार हैं। (सू०–तहरीम–66/4)

मुफ़स्सिरीने किराम इस आयत की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि सालिहुल मोमिनीन से मुराद हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं। (तफ़्सीर इब्ने कसीर–28/566)

➡ हज़रत अस्मा बिन्ते उ़मैस रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से रिवायत है कि मैनें नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को फ़रमाते हुये सुना है कि सालिहुल मोमिनीन हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं। (सयूती–दुर्रे मन्सूर–6/643) (तफ़्सीर कुरतबी–9/504)

➡ इमाम इब्ने असाकर (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से बयान किया है कि सालिहुल मोमिनीन से मुराद हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) हैं।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/361)
(सयूती–दुर्रे मन्सूर–6/643)

-: मौला अ़ली के अक्वाल :-

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि लोगो को रहमते इलाही से मायूस न करने वाला और उनको अ़ज़ाबे इलाही से डराने वाला और गुनाहों से इजतिनाब की दाअ़वत देने वाला व कुरान को मज़बूती से पकड़ने वाला इन्सान हक़ीक़त में फ़क़ीह है यानी वो ही इ़ल्मे फ़िक़्ह का अ़ालिम है और वो शरअ़ई मसाइल से वाक़िफ़ है और बिला इ़ल्म इ़बादत और फ़हमे इ़ल्म और बिला तदब्बुर क़िरात करना बे फ़ायदा है यानी वो जब कुरान पढ़े तो कुरान की आयात के माअ़ना और मफ़हूम पर ग़ौर न करे।
(अबू नुऐम-हिल्यातुल औलिया-1/83-ह०-238)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो इ़ल्म के चश्मे सहर (फ़जिर, सुबह) के चराग़ और बोसीदा लिबास और पाकीज़ा दिल वाले बन जाओ तो इसकी बरकत से आसमानों में तुम्हारे तज़किरे होंगे
(अबू नुऐम-हिल्यातुल औलिया-1/83-ह०-239)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो तुम अल्लाह तआ़ला की तरफ़ निकलो और उसकी कुर्बत और उसके यहाँ बुलन्द रुतबे की तलाश करो और अपने उन गुनाहों की मग़फ़िरत तलब करो जिनको उसके फ़रिश्तों ने लिख लिया है और मैं तुम्हें अल्लाह तआ़ला के शदीद अ़ज़ाब से डराता हूँ और तुम रहती दुनिया तक जिओ और तुम्हारे ऊपर किसी मशक़्क़त का साया न पड़े तो तुम पर रब तआ़ला की सबसे बड़ी नेअ़मत ये होगी कि उसने तुम्हें इस्लाम की

हिदायत बख़्शी और तुम रहती दुनिया तक अ़मल करो फिर भी तुम अपने अ़मल के सबब जन्नत के मुस्तहिक़ नहीं हो सकते बल्कि ये तो उसी का फ़ज़्लो करम होगा जिसकी वजह से तुम पर रहम किया जायेगा और जिस की वजह से उसकी जन्नत में तुम में से अ़द्ल पसंद लोग जायेंगे अल्लाह तआ़ाला हमको व तुमको तायेबीन (तौबा करने वालों) और आ़बदीन (इ़बादत करने वालों) में से बनाये। (हिल्यातुल औलिया–1/84-ह०-240)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के सामने एक शख़्स को दफ़न किया गया तो मय्यत के घर वालों पर शदीद गिरया तारी हो गई हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने उनसे फ़रमाया कि अगर तुम पर अहवाले बरज़ख़ मुन्कशिफ़ हो जायें जो तुम्हारी मय्यत पर मुन्कशिफ़ हैं तो तुम हवाश बाख़्ता हो जाओ और अपनी मय्यत को भूल जाओ और ऐ लोगो मौत तुम्हारे दर'वाज़े पर उस वक़्त तक दस्तक देती रहेगी जब तक तुम में से कोई एक भी बाक़ी रहेगा और तुम सबको इस दुनिया जाना है और तुम्हारी उ़म्रों के वक़्त मुताअ़य्यन हो चुके हैं और अच्छा व बुरा बदला तुम्हारे लिये मुक़र्रर हो चुका है ऐ अल्लाह के बन्दो अल्लाह से डरो और नेक अ़मल करने में जल्दी करो और नेअ़मतों व लज़्ज़तों को तोड़ने वाली मौत को हमेशा याद रखो दुनिया की सब नेअ़मतें हमेशा रहने वाली नहीं हैं ऐ अल्लाह के बन्दो इ़बरतों के साथ नसीहत पकड़ो मौत अपने पंजे तुम्हारे लिये गाढ़ चुकी है जो मिट्टी के घर में तुम्हें मिला देगी और सूर फूँकने के साथ हौलनाक उमूर तुम पर आने वाले हैं क़ब्रों के फटने व मैदाने महशर के लिये तैयार होने और हिसाब के लिये खड़े होने और जब्बार की कुदरत के इहाते में आने के वक़्त बड़े बड़े हौलनाक वाक़आ़त

पेश आने वाले हैं जिस दिन हर नफ़्स को महशर की तरफ़ एक हांकने वाला साथ होगा और उसके अ़मल का एक गवाह भी साथ होगा जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है "और ज़मीने (महशर) अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (हर एक आअ़माल की) किताब रख दी जायेगी और अम्बिया किराम को व गवाहों को लाया जायेगा और लोगों के दरमियान हक़ व इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा और उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया जायेगा और हर शख़्स को उसके आअ़माल का पूरा पूरा बदला दिया जायेगा और वो खूब जानता है जो कुछ वो करते हैं और जिन लोगों ने कुफ़्र किया है वो दोज़ख़ की तरफ़ गिरोह दर गिरोह हांके जायेंगे यहाँ तक कि जब वो उस दोज़ख़ के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिये जायेंगे और उसके दरोग़ा उनसे कहेंगे क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आये थे जो तुम पर तुम्हारे रब की आयात पढ़ कर सुनाते थे और तुम्हें इस दिन की पेशी से डराते थे वो (दोज़ख़ी) कहेंगे हाँ आये थे लेकिन काफ़िरों पर फ़रमाने अ़ज़ाब साबित हो चुका होगा उनसे कहा जायेगा दोज़ख़ के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ तुम उसमें हमेशा रहने वाले हो सो गुरुर करने वालों का ठिकाना कितना बुरा है और जो लोग अपने रब से डरते रहे तो उन्हें जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जायेगा यहाँ तक कि जब वो उस जन्नत के पास पहुँचेंगे और उसके दर'वाज़े (पहले ही) खोले जा चुके होंगे तो उनसे वहाँ के निगरान खुश आमदीद कहते हुये) कहेंगे तुम पर सलाम हो तुम खुश व खुर्रम रहो हमेशा इसमें रहने के लिये दाख़िल हो जाओ और वो (जन्नती) कहेंगे तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जिसने हमसे अपना वाअ़दा सच्चा कर दिखाया और हमें जन्नत का वारिस बना दिया कि हम

इस जन्नत में जहाँ पर चाहें वहाँ क़याम करें सो नेक अ़मल करने वालों के लिये बहुत अच्छा अज्र है और (ऐ हबीब) आप फ़रिश्तों को अ़र्श के इर्द गिर्द हल्क़ा बांधे हुये देखेंगे जो अपने रब की हम्द के साथ तस्बीह करते होंगे और सब लोगों के साथ हक़ व इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा और कहा जायेगा कि तमाम ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिये हैं जो तमाम जहानों का रब है। (सूरह–जुमर–39/69 ता 75)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि लोग तीन तरह के हैं 1-अ़ालिम 2-मुताअ़ल्लिम (तालिबे इ़ल्म) 3-गुमराह पस इ़ल्म माल से बेहतर है क्योंकि इ़ल्म तेरा मुहाफ़िज़ है और तू माल का मुहाफ़िज़ है इ़ल्म की इशाअ़त से इ़ल्म में इज़ाफ़ा होता है और ख़र्च से माल में कमी आती है अ़ालिम लोगों में महबूब होता है और इ़ल्म इताअ़ते इलाही का सबब होता है और दौलतमंद शख़्स का दुनिया से जाने के बाअ़द उसका नाम भी ज़ाइल हो जाता है जबकि अ़ालिम के दुनिया से जाने के बाअ़द लोगों के दिलों में बाक़ी रहता है।
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/85-ह०-243)

–: अ़ली की मुहब्बत ईमान है :–

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की मुहब्बत ईमान है और अ़ली से बुग़्ज़ मुनाफ़िक़त है और अ़ली की तरफ़ देखना और अ़ली से मुहब्बत करना इ़बादत है। (कंज़ुल उ़म्माल–6/291-ह०-32978)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/91-ह०-4000)

जो हज़रत अ़ली की मुहब्बत पर मरा वो ईमान पर मरा

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली मैं तुमसे खुश व राज़ी हूँ कि तुम मेरे भाई हो मेरे नवासों के बाप हो और मेरी सुन्नत के लिये लड़ते हो और जो शख़्स तुम्हारी मुहब्बत पर क़ायम रहते हुये फ़ौत होगा वो ईमान बिल ख़ैर पर फ़ौत होगा।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/370-ह०-1118)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/50)

➡ हज़रत इब्ने उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आप मेरे भाई हैं और मेरे वज़ीर हैं मेरे वाअ़दे पूरे करते हैं और मेरी ज़िम्मेदारी अदा करते हैं पस जो मेरी ज़िन्दगी में तुमसे मुहब्बत करे तो वो मन्ज़िल तक पहुँच गया और जो मेरे बाअ़द तुमसे मुहब्बत करे तो अल्लाह तआ़ाला अमन व ईमान पर उसका ख़ात्मा फ़रमायेगा और क़यामत के दिन मैं उसे अमन अ़ता फ़रमाऊँगा और ऐ अ़ली जिसकी मौत तेरी अ़दावत पर आये वो जाहलियत की मौत मरेगा और इस्लाम में जो उसने अ़मल किये होंगे तो अल्लाह तआ़ाला उसका मुहासिबा फ़रमायेगा।
(कंजुल उ़म्माल–6/289-ह०-32952)

अ़ली से मुहब्बत रसूलुल्लाह से मुहब्बत अ़ली से बुग्ज़ रसूलुल्लाह से बुग्ज़

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा तो उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह तआ़ाला से बुग्ज़ रखा।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/261-ह०-4648)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/474-ह०-940)
(कंजुल उ़म्माल–6/294-ह०-33024)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/76)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल उ़क़बा–1/122)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/45)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की क्योंकि बन्दा मेरा कुर्ब हासिल नहीं कर सकता मगर अ़ली की मुहब्बत के ज़रिये। (कंजुल उ़म्माल–6/294-ह०-33025)

➡ हज़रत इब्ने हारुन (रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं मैं हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) के साथ बैठा हुआ था कि अचानक–

नाफ़ेअ़ बिन अज़रक़ आया अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) के सर के पास खड़ा हो गया और कहने लगा कि खुदा की क़सम मैं अ़ली से बुग्ज़ रखता हूँ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने अपना सर उठाकर फ़रमाया कि अल्लाह भी तुझसे बुग्ज़ रखता है इसलिये तू ऐसे शख़्स से बुग्ज़ रखता जो सबक़त ले जाने वाला है और वो दुनिया और इसमें मौजूद तमाम चीज़ों से बेहतर है। (इब्ने अबी शैबा–9/521-ह०-32790)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/175-ह०-107)

➡ हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुमसे मुहब्बत करने वाला मुझसे मुहब्बत करने वाला है और तुमसे बुग्ज़ रखने वाला मुझसे रखने वाला है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/455-ह०-5973)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/239-ह०-6097)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/125-ह०-14754)
(मुस्नद बज़्ज़ार–6/488-ह०-2521)
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/207-ह०-8304)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला उस शख़्स से दुश्मनी रखता है जो अ़ली से दुश्मनी रखे।
(कंज़ुल उ़म्माल–6/285-ह०-32896)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने हज़रत अ़ली से हसद किया तो

उसने मुझसे हसद किया और जिसने मुझसे हसद किया तो उसने कुफ़्र किया (कंजुल ऊ़म्माल–6/296-ह०-33050)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली से मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा तो अल्लाह तआ़ला उसको अ़ज़ाब देगा।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/352-ह०-1066)

जो अ़ली से मुहब्बत करे तो अल्लाह उससे मुहब्बत करता है

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अल्लाह अ़ली की मदद फ़रमां और अ़ली पर रहम फ़रमां और ऐ अल्लाह उससे मुहब्बत फ़रमां जो अ़ली से मुहब्बत करे और उससे नाराज़ होजा जो अ़ली से बुग्ज़ रखे।
(कंजुल ऊ़म्माल–6/289-ह०-32951)

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत अ़ली से मुहब्बत करने का हुक्म फ़रमाया

➡ हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) मेरे पास आये और अ़र्ज़ की कि आपका रब आपके चार सहाबियों से बहुत मुहब्बत करता है और आपको भी उनसे मुहब्बत करने का हुक्म देता है तो सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु

तआ़ला अ़न्हुम) ने अ़र्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल हमको उनके नाम बतायें तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) उनमें से एक हैं ये जुमला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने तीन मर्तबा इरशाद फ़रमाया फिर फ़रमाया वो चार अफ़राद हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) और अबू ज़र गिफ़ारी व मिक़दाम बिन अस्वद व सलमान फ़ारसी (रज़ि़अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) हैं। (इब्ने माजा–सुनन–1/83-ह०-149) (तिर्मिज़ी–सुनन–2/1015-ह०-3718)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/444-ह०-7146)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/366-ह०-1103)

अ़ली की ताअ़ज़ीम व उनसे मुहब्बत करने का रसूलुल्लाह ने हुक्म फ़रमाया

➡ हज़रत इमाम हसन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो तुम्हारे सामने अ़ली मौजूद हैं पस मेरी मुहब्बत की वजह से इनसे मुहब्बत करो और मेरी इज़्ज़त की वजह से इनकी इज़्ज़त करो मुझे इस बात से जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने आगाह किया है और मैंने तुम्हें अल्लाह तआ़ला की जानिब से आगाह किया है (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/72)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि़अल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़ि़दमत में हाज़ि़र हुई उस वक़्त आप हज़रत उम्मे सलमा के घर में मौजूद थे तो आपने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक सबसे

ज़्यादा महबूब और सबसे ज़्यादा इ़ज़्ज़त वाले अ़ली हैं तो अ़ली की मन्ज़िलत को जानो और उनकी ताअ़ज़ीम किया करो। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/33)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जुमाअ़ के दिन खुत्बे में इरशाद फ़रमाया ऐ लोगो मैं तुम्हें वसीअ़त करता हूँ कि हज़रत अ़ली से मुहब्बत करो क्योंकि इनसे मुहब्बत मोमिन ही करता है और मुनाफ़िक़ इनसे बुग्ज़ रखता है पस जिसने इनसे मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने इनसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा तो अल्लाह तआ़ला उसको अ़ज़ाब देगा। (अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/352-ह०-1066)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने अ़ली से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा तो उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा। (कंजुल उ़म्माल–6/289-ह०-32950)

हज़रत अ़ली से मुहब्बत करने के सबब गुनाहों में तख़्फ़ीफ़ होती है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की मुहब्बत गुनाहों को इस तरह ख़त्म कर देती है जिस तरह आग लकड़ी को ख़त्म कर

देती है। (तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/181)

हज़रत मौला अ़ली से जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) मुहब्बत करते हैं

➡ हज़रत ज़ह्हाक अन्सारी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) जब ख़ैबर की तरफ़ निकले तो हज़रत अ़ली को आगे किया पस हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि जो खजूर के बाग़ में दाख़िल हुआ वो अमन वाला है फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत जिबरईल अ़लैहिस्सलाम को देखा हज़रत जिबरईल मुस्कुराये तो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने हज़रत जिबरईल से पूछा कि आप क्यों मुस्कुराये तो हज़रत जिबरईल ने अ़र्ज़ किया मैं हज़रत अ़ली से मुहब्बत करता हूँ फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली से कहा कि हज़रत जिबरईल कहते हैं कि मैं हज़रत अ़ली से मुहब्बत करता हूँ फिर हज़रत अ़ली ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे माअ़लूम है कि जिबरईल मुझसे मुहब्बत करते हैं फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अ़ली जो हज़रत जिबरईल से बेहतर हैं वो भी तुमसे मुहब्बत करते हैं। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/57-ह०-8070)

हज़रत अ़ली से मुहब्बत करने वालों के लिये खुशख़बरी

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ-अ़ली खुशख़बरी है उस शख़्स के लिये जो तुझसे मुहब्बत करे और तेरे बारे में सच बोले और हलाकत है उस शख़्स के लिये कि जो तुझसे बुग्ज़ रखे और तेरे बारे में झूट से काम ले।
(हाकिम-अल मुस्तदरक-4/269-ह०-4657)
(तबरानी-मुअ़जम औसत-2/85-ह०-2157)
(अबू यअ़ाला-अल मुस्नद-1/523-ह०-1602)
(अबू यअ़ाला-अल मुस्नद-2/118-ह०-1599)

अ़ली से बुग्ज़ और रसूलुल्लाह से मुहब्बत का दाअ़वा करने वाला झूटा है

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि खुदा की क़सम ऐ अ़ली जिस ने ये दाअ़वा किया कि वो मुझसे मुहब्बत करता है और वो तुझसे बुग्ज़ रखता है तो उसने झूट बोला है।
(इब्ने असाकर-तारीख़ मदीना दमिश्क़-42/268)

नेकबख़्त और सअ़ादतमंद वो है जो अ़ली से मुहब्बत करता है

➡ सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) फ़रमाती हैं कि अ़रफ़ा की रात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरे घर तशरीफ़ लाये और आपने फ़रमाया कि अल्लाह तअ़ाला आज के दिन तुम पर फ़ख़्र करता है और ऐ अ़ली तुम सबको बख़्श दिया है और यक़ीनन कामिल नेक बख़्त और हक़ीक़ी सअ़ादत मन्द वो शख़्स है जो ज़िन्दगी और मौत के बाअ़द भी

मुहिब्बे अ़ली हो यानी अ़ली से मुहब्बत करने वाला हो
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/371-ह०-1121)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने मुझे ख़बर दी है कि खुश बख़्त इन्सान वो है जो अ़ली से मुहब्बत करता है और बद बख़्त इन्सान वो है जो अ़ली से बुग्ज़ रखता है।
(कंजुल उ़म्माल–7/75-ह०-36458)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/182)

हज़रत मौला अ़ली से सच्ची मुहब्बत करने वाले जन्नती हैं

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से जो शख़्स सुर्ख़ शाख़ को थामना चाहता है जिसे अल्लाह तआ़ला ने जन्नत में अपने हाथों से लगाया है तो उसे चाहिये कि हज़रत अ़ली की मुहब्बत को मज़बूती से थाम ले।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/375-ह०-1132)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/181)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली जन्नत उस शख़्स के लिये है जो तुमसे सच्ची मुहब्बत करता है और तुम्हारे बारे में सच बोलता है और हलाकत है उसके लिये जो तुमसे बुग्ज़ रखता है और तुम्हारे बारे में झूट बोलता है
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/384-ह०-1162)

➡ हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स ये पसंद करता हो कि दायमी जन्नत उसका ठिकाना हो तो वो हज़रत अ़ली से मुहब्बत करे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/259-ह०-4642)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/646-ह०-4927)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/95-ह०-14639)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/289-ह०-32956)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स हज़रत अ़ली से मुहब्बत करता है तो वो मुझसे मुहब्बत करता है और जो शख़्स मुझसे मुहब्बत करता है वो अल्लाह तआ़ाला से मुहब्बत करता है और जो अल्लाह तआ़ाला से मुहब्बत करता है तो अल्लाह तआ़ाला उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा। (कंज़ुल उ़म्माल–7/60-ह०-36357)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तुम्हारे लिये खुश ख़बरी है कि तुम और तुम्हारा गिरोह जन्नती है। (तबरानी–मुअ़जम औसत–5/175-ह०-6605)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/369-ह०-1115)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली तुम मेरे साथ मेरे हौज़े कौसर पर होगे जिससे रोज़े क़यामत लोग सैराब होंगे–

और मेरे हौज़ पर सितारों की ताअ़दाद के बराबर बर्तन होंगे और मैं और तुम और हसन व हुसैन व फ़ातिमा और अ़क़ील व जाअ़फ़र (अ़लैहिमुस्सलाम) जन्नत में एक दूसरे के सामने होंगे और तुम मेरे साथ होगे और तुम्हारे चाहने वाले सब जन्नत में होंगे।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/717-ह०-7675)

➡हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली खुश ख़बरी है उसके लिये जो तुमसे मुहब्बत करे और तुम पर सच बोले और तुम्हारी तस्दीक़ करे तो वो जन्नत में तुम्हारे साथी और तुम्हारे घर के पड़ोसी और तुम्हारे रफ़ीक़ होंगे और हलाकत है उसके लिये जो तुमसे बुग्ज़ रखे और तुम पर झूट बोले और जो लोग तुमसे बुग्ज़ रखते हैं और तुम पर झूट बोलते हैं तो अल्लाह तआ़ला पर हक़ है कि उनको क़यामत के दिन झूटों के खड़े होने की जगह पर खड़ा करे। (इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/604)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/85-ह०-2157)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/126-ह०-14756)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को ये बात पसंद हो कि वो दायमी जन्नत में ठहरे जिसमें मेरे रब ने खुद दरख़्त लगाये हैं तो वो मेरे अह्ले बैत की इक़्तिदा करे इसलिये कि वो मेरी औलाद हैं वो मेरी ही मिट्टी से पैदा किये गये हैं और उन्हें मेरी समझ और मेरा इ़ल्म दिया गया सो उन लोगों के लिये हलाकत है जो मेरे अह्ले बैत की फ़ज़ीलत को झुटलाये ऐ अल्लाह

ऐसे लोगों का मेरी शफ़ाअ़त में हिस्सा न हो जो मेरे अह्ले बैत की फ़ज़ीलत को झुटलाये।
(कंजुल उ़म्माल–6/404-ह०-34198)

हज़रत अ़ली और सय्यदा फ़ातिमा रसूलुल्लाह को सबसे ज़्यादा महबूब हैं

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा व हज़रत बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान करते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) औ़रतों में सबसे ज़्यादा सय्यदा फ़ातिमा से मुहब्बत करते थे और मर्दों में सबसे ज़्यादा हज़रत अ़ली से मुहब्बत करते थे
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1141-ह०-3868,3874)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/303-ह०-4735,4744)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/403,404-ह०-1008,1009)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/507-ह०-7262)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/181-ह०-113)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/32)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि खुदा की क़सम हज़रत अ़ली के सिवा मैं किसी शख़्स को नहीं जानती कि जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को उनसे ज़्यादा महबूब हो और उनकी ज़ोजा सय्यदा फ़ातिमा से बढ़कर किसी और ख़ातून को नहीं जानती जो रुये ज़मीन पर उनसे ज़्यादा महबूब हो।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1142-ह०-3873)
(मिश्कात–3/553-ह०-6155)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/302-ह०-4741)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/180-ह०-111)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह आपको मेरे और फ़ातिमा में कौन ज़्यादा महबूब है तो सर'वरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फ़ातिमा मुझे तुमसे ज़्यादा प्यारी है और तुम मुझे उससे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हो।

(तबरानी-मुअ़जम औसत-7/717-ह०-7675)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-9/196-ह०-15016)
(अहमद बिन हम्बल-फ़ज़ाइले सहाबा-1/379-ह०-1076)
(कंज़ुल उ़म्माल-7/64-ह०-36379)
(कंज़ुल उ़म्माल-6/407-ह०-34225)
(मनावी-फ़ैज़ुल क़दीर-4/422-ह०-583)
(नसाई-ख़साइसे अ़ली-1/217-ह०-146)

➡ ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से मर'वी है हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं खुदा की क़सम हज़रत अ़ली हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के बहुत क़रीब थे चुनांचा जिस दिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) दुनिया से रुख़सत हुये तो उस वक़्त आप आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) घर में थे और हम आपकी तीमारदारी के लिये हाज़िर थे और आप बार बार फ़रमाते थे कि क्या अ़ली आ गये हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि मेरा ख़्याल था कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली को किसी काम से भेजा था फिर थोड़ी देर बाअ़द हज़रत अ़ली वापस लौट आये हम समझे कि रसूलुल्लाह को हज़रत अ़ली से कोई ज़रुरी काम है इसलिये हम बाहर निकल आये और दर'वाज़े पर बैठ-

गये मैं दूसरों की निस्बत रसूलुल्लाह और हज़रत अ़ली के ज़्यादा क़रीब बैठी थी तो मैंने देखा कि हज़रत अ़ली रसूलुल्लाह पर झुके हुये हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली से सरगोशी करना शुरु की फिर उसी दिन आपकी वफ़ात हो गई इस ऐतबार से हज़रत अ़ली रसूलुल्लाह के सबसे ज़्यादा क़रीब थे।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/276-ह०-4671)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/100-ह०-14662)
(कंजुल उ़म्माल–7/75-ह०-36459)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/78)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि सबसे आख़िर में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से जिसने गुफ़्तगू करने का शरफ़ हासिल किया वो हज़रत अ़ली हैं।

(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/231-ह०-154)

अहले बैत अत्‌हार के बारे में नेकी की वसीअ़त

➡ हज़रत अ़ब्दुर्ररहमान बिन औफ़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं तुम्हें अपने अह्‌ले बैत के साथ नेकी और भलाई करने की वसीअ़त करता हूँ और मेरी तुमसे मुलाक़ात हौज़े कौसर पर होगी नीज़ फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम कि जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है तुम ज़रुर नमाज़ क़ायम करोगे और तुम ज़रुर ज़कात अदा करोगे वरना मैं तुम पर अपनी तरफ़ से एक ऐसा आदमी भेजूँगा कि जो तुम्हारे

जंगजुओं की गरदनें मारेगा अ़ब्दुर्रहमान फ़रमाते हैं कि हम लोग ये समझे कि अबू बक्र या ड़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) हैं लेकिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि वो ये हैं। (हाकिम–2/614-ह०-2559)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/183-ह०-14960)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/258-ह०-1050)

अ़ली की मदद करना गोया रसूलुल्लाह की मदद करना है

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं उस शख़्स को वसीअ़त करता हूँ जो मेरे ऊपर ईमान लाया और मेरी तस्दीक़ की कि वो हज़रत अ़ली की मदद करे पस जिसने हज़रत अ़ली की मदद की उसने मेरी मदद की और जिसने मेरी मदद की तो उसने अल्लाह की मदद की और जिसने अ़ली से मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की तो उसने अल्लाह से मुहब्बत की और जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने मुझसे बुग्ज़ रखा उसने अल्लाह तआ़ला से बुग्ज़ रखा।
(कंज़ुल ड़म्माल–6/289-ह०-32950)

जिसने अ़ली को तकलीफ़ दी उसने रसूलुल्लाह को तकलीफ़ दी

➡ हज़रत मुस्अ़ब बिन साअ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने हज़रत अ़ली को तकलीफ़ पहुंचाई उसने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/356-ह०-1078)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/453-ह०-766)
(कंज़ुल उ़म्माल–6/285-ह०-32898)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/420)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/44)

➡ हज़रत अम्र बिन शास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) सुलह हुदैबिया वालों में शुमार होते हैं आप फ़रमाते हैं कि हम हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के साथ यमन की तरफ़ र'वाना हुये तो दौराने सफ़र हज़रत मौला अ़ली की तरफ़ से मुझे कुछ ज़्यादती महसूस हुई तो जब हम वापस आये तो मैंने मस्जिद में बाअ़ज़ सहाबा किराम के सामने हज़रत अ़ली की शिकायत का इज़हार किया जब ये बात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) तक पहुंची तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने नाराज़गी के साथ मुझे देखा और मुझसे फ़रमाया कि ऐ अम्र खुदा की क़सम तूने मुझे तकलीफ़ पहुंचाई है फिर मैंने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ इस बात से कि आपको तकलीफ़ पहुंचाऊँ फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने अ़ली को तकलीफ़ दी उसने मुझे तकलीफ़ दी।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/248-ह०-4619)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/324-ह०-981)
(इब्ने अबी शैबा–9/516-ह०-32771)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/109-ह०-6923)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/73-ह०-36445)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/44)

➡ एक शख़्स हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) की मौजूदगी में हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शान में गुस्ताख़ी करने लगा तो हज़रत उ़मर ने फ़रमाया कि क्या तुम हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) और हज़रत अ़ली को जानते हो सिवाए ख़ैर व भलाई के हज़रत अ़ली का तज़किरा मत करो क्योंकि अगर तुमने हज़रत मौला अ़ली को अज़्ज़ियत पहुंचाई तो गोया तुमने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को अज़्ज़ियत पहुंचाई।
(कंजुल उ़म्माल–7/66-ह०-36394)

➡ हज़रत अम्र बिन शास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली को दोस्त रखा उसने मुझे दोस्त रखा जिसने अ़ली से बुग्ज़ रखा तो उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने अ़ली को अज़्ज़ियत दी उसने मुझे अज़्ज़ियत दी और जिसने मुझे अज़्ज़ियत दी उसने अल्लाह तआ़ला को अज़्ज़ियत दी।
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/45)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने मुए मुबारक पकड़े हुये थे और फ़रमां रहे थे कि जिसने मेरे बालों में एक बाल को भी तकलीफ़ पहुंचाई तो उस पर जन्नत हराम है।
(कंजुल उ़म्माल–6/518-ह०-35351)

➡ हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिमस्सलाम) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) अपने मुए मुबारक पकड़े

हुये थे और आपने फ़रमाया कि ऐ अ़ली जिसने तुझे मेरे एक बाल के बराबर भी अज़्ज़ियत दी उसने मुझे अज़्ज़ियत दी और ऐसे शख़्स पर अल्लाह तआ़ला ने ज़मीनो आसमान के बराबर लाअ़नत फ़रमाई है और अल्लाह तआ़ला ऐसे शख़्स का राहे खुदा में माल ख़र्च करना कुबूल नहीं फ़रमाता है और न ही उसका इंसाफ़ करना कुबूल फ़रमाता है जो हज़रत अ़ली को अज़्ज़ियत पहुंचाये। (कंजुल उ़म्माल–6/518-ह०-35352)
(कंजुल उ़म्माल अ़रबी–12/349-ह०-35352)

जो अ़ली से जुदा हुआ वो अल्लाह से जुदा हुआ

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली जो तुमसे जुदा हुआ वो मुझसे जुदा हुआ और जो मुझसे जुदा हुआ वो अल्लाह से जुदा हुआ।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/288-ह०-4703)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/48)

जिसने अ़ली को बुरा कहा तो उसने अल्लाह व उसके रसूल को बुरा कहा

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली को बुरा भला कहा उसने मुझे बुरा भला कहा और जिसने मुझे बुरा भला कहा तो उसने अल्लाह तआ़ला को बुरा भला कहा। (मिश्कात–3/538-ह०-6101)

(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/332–ह०–1011)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/156-ह०-91)
(कंजुल उ़म्माल–6/285-ह०-32900)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/421)

➡ नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली को बुरा न कहो क्योंकि वो अल्लाह तआ़ाला की ज़ात में ग़र्क़ इन्सान हैं और हज़रत अ़ली के सीने में ज़ाते बारी तआ़ाला का इ़रफ़ान मौजज़न है यानी हज़रत मौला अ़ली को हक़ सुबहानहू व तआ़ाला की कामिल माअ़रिफ़त हासिल है।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–19/148-ह०-324)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/123-ह०-14743)
(कंजुल उ़म्माल–6/294-ह०-33017)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/77-ह०-215,225)

➡ हज़रत उर्बाह बिन जुबैर रहमतुल्लाहि तआ़ाला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) के सामने एक शख़्स ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुरा भला कहा तो हज़रत उ़मर ने फ़रमाया कि तुम हज़रत अ़ली को बुरा भला न कहो बल्कि उनका ज़िक्र ख़ैर के साथ करो अगर तुम इस तरह हज़रत अ़ली के बारे में बदजुबानी करोगे तो तुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को तकलीफ़ दोगे।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/360-ह०-1089)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/48)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली की बुराई न करो क्योंकि अ़ली मुझसे है और मैं अ़ली से हूँ और मेरे बाअ़द अ़ली हर मोमिन के वली है।
(कंजुल उ़म्माल–6/288-ह०-32939)

जिसने अ़ली को गाली दी तो उसने अल्लाह व उसके रसूल को गाली दी

➡ हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने अ़ली को गाली दी उसने मुझे गाली दी और जिसने मुझे गाली दी उसने अल्लाह को गाली दी।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/246-ह०-4616)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/266,267,533)

➡ हज़रत इब्ने अबी मुलैका रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं शाम का रहने वाला एक शख़्स आया और वो हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) के सामने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को गालियाँ देने लगा तो हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने उसको कंकरी मारकर फ़रमाया ऐ अल्लाह के दुश्मन तूने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को तकलीफ़ पहुंचाई है फिर आपने ये आयत तिलावत फ़रमाई 'बेशक जो लोग जो अल्लाह व उसके रसूल को तकलीफ़ देते हैं उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह की लाअ़नत है और उनके लिये दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है'। (सूरह–अहज़ाब–33/57)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/247-ह०-4618)

➡ हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह जदली (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो उन्होंने मुझसे कहा कि क्या रसूलुल्लाह (सल्ल ल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को गालियाँ दी जाती हैं तो मैंने कहा कि ये कैसे हो सकता है कि कोई रसूलुल्लाह को गालियाँ दे तो हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) ने कहा क्या हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गालियाँ नहीं दी जातीं और उनको भी जो अ़ली से मुहब्बत करते हैं फिर हज़रत उम्मे सलमा ने फ़रमाया कि मैं गवाही देती हूँ कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हज़रत अ़ली से मुहब्बत करते थे और मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जो अ़ली को गाली देता है वो मुझे गाली देता है और जिसने अ़ली को गाली दी तो उसने मुझे गाली दी। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/296-ह०-4615)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–7/252-ह०-9364)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–1/254-ह०-344)
(तबरानी–मुअ़जम सग़ीर–1/518-ह०-889)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/123-ह०-14740)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/75-ह०-36460)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/267)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/47)

➡ हज़रत इस्हाक़ बिन काअ़ब बिन उज्राह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अ़ली को गाली न दो क्योंकि वो अल्लाह तअ़ाला की पहचान की दलील हैं। (तबरानी–मुअ़जम औसत–7/251-ह०-9361)

➡ हज़रत इमाम हुसैन (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को फ़रमाते हुये सुना कि अबू बक्र व उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) को बुरा न कहो और हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) को बुरा न कहो और अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुरा न कहो क्योंकि जिसने अ़ली को बुरा भला कहा या गाली दी उसने मुझे गाली दी और जिसने मुझे गाली दी तो उसने अल्लाह को गाली दी और जिसने अल्लाह को गाली दी तो अल्लाह तआ़ला उसे अ़ज़ाब देगा।
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–14/131,132)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) का एक रास्ते से गुज़र हुआ वहाँ कुछ लोग हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को गालियाँ दे रहे थे तो आपने फ़रमाया कौन अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल को गालियाँ दे रहा है तो इस पर लोगों ने कहा कि कौन अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल को गालियाँ दे सकता है और अल्लाह व रसूल को गालियाँ देने वाला काफ़िर व मुशरिक़ है तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली को कौन गालियाँ दे रहा था तो लोगों ने कहा हाँ ये काम हो रहा था तो आपने फ़रमाया कि मैं अल्लाह तआ़ला को गवाह बनाकर ये कहता हूँ कि मैंने हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये फ़रमाते हुये सुना कि जिसने अ़ली को गाली दी तो उसने मुझे गाली दी और जिसने मुझे गाली दी उसने अल्लाह को गाली दी और जिसने अल्लाह को गाली दी तो अल्लाह तआ़ला उसे नथुनों के बल दोज़ख़ में डालेगा।
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/46)

रसूलुल्लाह का फ़रमान कि हज़रत अ़ली की शिकायत न किया करो

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) फ़रमाते हैं कि बारगाहे मुस्तफ़ा में हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की शिकायत की गई तो रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) खुत्बा देते हुये इरशाद फ़रमाया कि ऐ लोगो हज़रत अ़ली की शिकायत न किया करो खुदा की क़सम हज़रत अ़ली अल्लाह तबारक व तअ़ाला की ज़ात व अहकामे इलाही की इजराई में बड़ी ख़शीयत रखने वाले हैं और जिहाद के मुताअ़ल्लिक़ बड़े सख़्त हैं और सुस्ती व काहिली से बहुत दूर हैं और अल्लाह तअ़ाला के रास्ते में बहुत ही सख़्त हैं।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/268-ह०-4654)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/384-ह०-1161)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/423)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/211)

हज़रत मौला अ़ली से बुग्ज़ रखने के सबब बादशाहत छीन ली जायेगी

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) बयान करते हैं कि अल्लाह तअ़ाला ने बनी इसराईल से उनकी बादशाहत अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) के साथ उनके बुरे सुलूक की वजह से छीन ली और बेशक अल्लाह तअ़ाला इस उम्मत से उसकी बादशाहत को अ़ली के साथ बुग्ज़ रखने की वजह सें छीन लेगा।
(देलमी–अल फ़िरदौस–1/421-ह०-1380)

हज़रत अ़ली का मुख़ालिफ़ बाग़ी गिरोह शैतान का गिरोह है

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि हम शरीफुन्नसब हैं हमारी नस्ल अम्बिया की नस्ल है और हमारा गिरोह अल्लाह का गिरोह है और हमारा मुख़ालिफ़ गिरोह यानी बाग़ी गिरोह शैतान का गिरोह है और जो हमें और हमारे दुश्मनों को बराबर समझता हो वो भी हममें से नहीं।
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/383-ह०-1160)

रसूलुल्लाह का अ़ली के मुख़ालिफ़ीन बाग़ी गिरोहों के बारे में ख़बर देना

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि मेरे बाअ़द मेरी उम्मत तुम्हारे ख़िलाफ़ बग़ावत करेगी और तुम मेरे दीन पर क़ायम रहोगे और तुम मेरे तरीक़े पर जिहाद करोगे और जो तुमसे मुहब्बत करेगा वो मुझसे मुहब्बत करेगा और जिसने तुमसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और ऐ अ़ली तुम्हारी ये दाढ़ी खून से रंगीन हो जायेगी।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/282-ह०-4676,4686)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मौला अ़ली से फ़रमाया कि तुम मेरे बाअ़द मशक़्क़त में मुब्तिला होगे तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अ़र्ज़ की कि क्या उन हालात–

में मेरा ईमान सलामत होगा तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम अपने दीन पर सलामत रहोगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/278-ह०-4677)
(अबू यअ़ाला–अल मुस्नद–1/361-ह०-561)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/279)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि ज़रुर बिल ज़रुर कुछ लोग मुझसे इतनी मुहब्बत करेंगे यहाँ तक कि वो लोग मेरी मुहब्बत की वजह से दोज़ख में जायेंगे और ज़रुर बिल ज़रुर कुछ लोग मुझसे बुग्ज़ रखेंगे हत्ता कि वो लोग मुझसे बुग्ज़ रखने की वजह से दोज़ख में जायेंगे।
(इब्ने अबी शैबा–9/523-ह०-32796)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह तू लाअ़नत फ़रमां हर उस शख़्स पर जो हमसे बुग्ज़ रखे और हर उस शख़्स पर कि जो हमसे मुहब्बत करने में गुलू करे यानी हद से बढ़ जाने वाला बहुत ज़्यादा मुबालग़ा करने वाला।
(इब्ने अबी शैबा–9/524-ह०-32801)

➡ एक मर्तबा मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम को एक ख़त लिखा जिसका मज़मून ये है ऐ अबुल हसन (हज़रत अ़ली) मेरे बहुत से फ़ज़ाइल हैं मेरा बाप दौरे जाहलियत में सरदार था और मैं इस्लाम में बादशाह हो गया हूँ और मेरा हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के साथ रिश्ता है मैं मोमिनीन का मामू हूँ और कातिबे वही हूँ (जबकि–

मुआ़विया कातिबे वही नहीं था बल्कि मुन्शी था और वो भी बहुत थोड़े वक़्त के लिये था और कातिबे वही तो हज़रत ज़ैद बिन साबित (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) थे (मुअ़जम औसत–1/241-ह०-315)(हाकिम–5/87-ह०-5778) और मुआ़विया मुन्शी था मुआ़विया के बारे में मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में लफ़्ज़े कातिबे वही नहीं लिखा हुआ है बल्कि सिर्फ़ कातिब लिखा है और कातिब के माअ़ने मुन्शी होता है) (मुस्लिम–हदीस-6409) पस हज़रत अ़ली ने जवाब में लिखा कि ऐ जिगर चबाने वाली के बेटे मुझ पर फ़ख़्र करता है जबकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जो नबी व रसूल हैं वो मेरे भाई और ससुर हैं जबकि हम्ज़ा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सय्यदुश्शुहदा मेरे चचा हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की बेटी सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) मेरी ज़ोजा हैं और उसकी जान मेरी जान से मिली हुई है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के दोंनों नवासे हसन व हुसैन (अ़लैहिमस्सलाम) मेरे बेटे हैं और तुममें से कौन है कि जिसका हिस्सा मेरे हिस्से जैसा हो फिर मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान ने कहा कि इस ख़त को कहीं छुपादो कि कहीं अह्ले शाम इस ख़त को पढ़कर हज़रत अ़ली की तरफ़ माइल न हो जायें।
(कंज़ुल उ़म्माल–7/61-ह०-36366)

जंगे जमल व जंगे सिफ़्फ़ीन के बारे में रसूलुल्लाह की पेशीनगोई

➡ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को

नाकिसीन (बैअ़त को तोड़ने वालों यानी असहाबे जमल तल्हा, जुबैर व आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) व क़ासितीन (बग़ावत करने वालो यानी अह्ले सिफ़्फ़ीन मुआ़विया वग़ैराह व मारिक़ीन (दीन से निकल जाने वालो यानी ख़्वारिज) से जिहाद करने का हुक्म दिया था। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/277-ह०-4674)

➡ हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया कि ऐ अ़ली तुम नाकिसीन व क़ासितीन और मारिक़ीन से गुज़र गाहों में और दरियाई रास्तों में और पहाड़ी रास्तों में जिहाद करोगे।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/277-ह०-4675)

रसूलुल्लाह का फ़रमान कि अ़ली कुरान की तावील पर क़िताल करेंगे

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि हम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के हमराह थे कि आपका जूता मुबारक टूट गया तो हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम उन जूतों को पैबन्द लगाने लगे इसलिये वो ज़रा पीछे रह गये और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) थोड़ा चले फिर फ़रमाया कि तुममें से एक शख़्स ऐसा है जो कुरान की तावील पर इस तरह लड़ेगा और क़िताल करेगा जिस तरह से मैंने कुरान के नुजूल पर क़िताल किया था तो लोग अपने अपने सर ऊँचे करने लगे उनमें हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ भी थे उन्होंने अ़र्ज़ किया कि क्या वो आदमी मैं हूँ तो हुजूर–

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं फिर हज़रत ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने अ़र्ज़ किया क्या वो आदमी मैं हूँ तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया नहीं फिर हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वो जो जूतों को पैबन्द लगाने वाला है यानी अ़ली हैं फिर हमने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को ये खुश ख़बरी सुनाई लेकिन उन्होंने इस बात पर सर न उठाया और ज़रा सी भी खुशी का इज़हार न किया बल्कि यूँ लगता था जैसे वो ये बात पहले ही हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से सुन चुके थे।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/248-ह०-4621)
(इब्ने अबी शैबा–9/507-ह०-32745)
(फ़ज़ाइले सहाबा–1/354-ह०-1071,1083)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/123-ह०-6937)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/233-ह०-156)
(कंजुल ऊ़म्माल–6/290-ह०-32964,32965)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/278)
(अबू नुऐम–हिल्यातुल औलिया–1/76-ह०-209)
(तबरी–ज़ख़ाइरुल ऊ़क़बा–1/139)

➡हज़रत अबू ज़र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है तुम्हारे दरमियान में एक ऐसा शख़्स मौजूद है जो मेरे बाअ़द लोगों से तावीले कुरान पर क़िताल करेगा जैसे मैंने मुश्रिक़ीन से तन्ज़ीले कुरान पर क़िताल किया और वो हज़रत अ़ली हैं और वो लोग लाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही देने वाले होंगे उस वक़्त उनको क़त्ल करना लोगों पर शाक़ (मुश्किल,

दुश्वार, नागवार) गुज़रेगा हत्ता कि वो अल्लाह के एक वली पर ताअ़न करेंगे और हज़रत अ़ली के फ़ेअ़ल पर नाराज़ होंगे जैसे मूसा (अ़लैहिस्सलाम) कश्ती तोड़ने के मुआ़मले में और गुलाम को क़त्ल करने व दीवार को सीधा करने में ख़िज़्र (अ़लैहिस्सलाम) से नाराज़ हुये थे हालांकि सारे काम अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की मर्ज़ी के मुताबिक़ होंगे। (कंजुल उ़म्माल–6/290-ह०-32966)
(कंजुल उ़म्माल–7/59-ह०-36347)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/176)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/421)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/111)

बाग़ी फ़िरक़े का रसूलुल्लाह से कोई तअ़ाल्लुक़ नहीं

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली अ़नक़रीब एक बाग़ी फ़िरक़ा तुमसे क़िताल करेगा जबकि तुम हक़ पर होगे और उस वक़्त जो तुम्हारी मदद न करे तो उसका मुझसे कोई तअ़ाल्लुक नहीं।
(कंजुल उ़म्माल–6/290-ह०-32967)

रसूलुल्लाह के नज़दीक अ़ली का वो मक़ाम था जो किसी को हासिल न था

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के नज़दीक मेरा ऐसा मक़ाम था जो मख़्लूक़े खुदा में किसी को हासिल न था मैं रोज़ाना सहरी के–

वक़्त रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर होता जब मैं इजाज़त तलब करता अगर आप नमाज़ पढ़ रहे होते तो आप सुबहान अल्लाह कह देते ये अल्फ़ाज़ मेरे लिये इजाज़त हुआ करते थे अगर आप नमाज़ नहीं पढ़ रहे होते तो आप मुझे इजाज़त दे देते थे।

(इब्ने माजा–सुनन–3/191-ह०-3708)
(नसाई–सुनन–3/73-ह०-1212)
(मुस्नद अहमद–1/410-ह०-570)
(मुस्नद अहमद–1/445-ह०-647)
(मुस्नद बज़्ज़ार–3/98-ह०-879)
(इब्ने अबी शैबा–5/242-ह०-25676)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/183-ह०-5,118)

रसूलुल्लाह ने जो कुछ अपने लिये मांगा वो अ़ली के लिये भी मांगा

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैं बीमार था तो हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरी अ़यादत के लिये मेरे पास तशरीफ़ लाये मैं उस वक़्त लेटा हुआ था आपने मुझे कपड़े से ढांप दिया तो मुझे सुकून हो गया और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिये तशरीफ़ ले गये फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाअ़द आप फिर मेरे तशरीफ़ लाये और फ़रमाया ऐ अ़ली उठ जाओ अब तुम बीमारी से अज़ाद हो फिर मैं उठा तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे मुझे पहले कोई बीमारी थी ही नहीं फिर सर‘वरे कायनात सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अपने रब से नमाज़ में जिस चीज़

का सुवाल किया वो मुझे अ़ता की गईं और ऐ अ़ली जो कुछ मैंने अपनी ज़ात के लिये अपने रब से मांगा तो तुम्हारे लिये भी वही मांगा है।
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/219-ह०-147)
(कंजुल उ़म्माल–7/62-ह०-36368)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/169)

रसूलुल्लाह से गुस्से की हालत में सिर्फ़ अ़ली गुफ़्तगू करते थे

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) जब गुस्से की हालत में होते तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम से सिवाए हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के कोई भी गुफ़्तगू करने की जुर्रात नहीं करता था।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/260-ह०-4647)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–3/395-ह०-4314)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/106-ह०-14683)

रसूलुल्लाह से सबसे आख़िरी गुफ़्तगू करने का शरफ़ अ़ली को हासिल हुआ

➡ ख़ातूने जन्नत सय्यदा फ़ातिमा (सलामुल्लाह अ़लैहा) से मर'वी है हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं खुदा की क़सम हज़रत अ़ली हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के बहुत क़रीब थे चुनांचा जिस दिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) दुनिया से रुख़सत हुये तो उस वक़्त आप आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा के घर

में थे और हम आपकी तीमारदारी के लिये हाज़िर थे और आप बार बार फ़रमाते थे कि क्या अ़ली आ गये हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि मेरा ख़्याल था कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली को किसी काम से भेजा था फिर थोड़ी देर बाअ़द हज़रत अ़ली वापस लौट आये हम समझे कि रसूलुल्लाह को हज़रत अ़ली से कोई ज़रुरी काम है इसलिये हम बाहर निकल आये और दर'वाज़े पर बैठ गये मैं दूसरों की निस्बत रसूलुल्लाह और हज़रत अ़ली के ज़्यादा क़रीब बैठी थी तो मैंने देखा कि हज़रत अ़ली रसूलुल्लाह पर झुके हुये हैं और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली से सरगोशी करना शुरु की फिर उसी दिन आपकी वफ़ात हो गई तो इस ऐतबार से हज़रत अ़ली रसूलुल्लाह के सबसे ज़्यादा क़रीब थे। (हाकिम–4/276-ह०-4671)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/100-ह०-14662)
(कंजुल उ़म्माल–7/75-ह०-36459)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/78)

➡ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि सबसे आख़िर में हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से जिसने गुफ़्तगू करने का शरफ़ हासिल किया वो हज़रत मौला अ़ली हैं (नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/231-ह०-154)

कुरान में एक आयत ऐसी जिस पर सिर्फ़ अ़ली ने अ़मल किया

➡ हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि

कुरान में एक आयत ऐसी है कि न मुझसे पहले इस पर अ़मल किया और ना ही मेरे बाअ़द इस पर कोई अ़मल करेगा कि मेरे पास एक दीनार था मैंने उसको दस दिरहम के ऐवज़ बेच दिया पस जब भी मैं हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से सरगोशी करता तो मैं एक दिरहम सद्क़ा कर देता यहाँ तक कि वो सब दिरहम ख़त्म हो गये फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ये आयत तिलावत फ़रमाई 'ऐ ईमान वालो जब तुम रसूल से कोई राज़ की बात तन्हाई में अ़र्ज़ करना चाहो तो अपनी बात अ़र्ज़ करने से पहले कुछ सद्क़ा व ख़ैरात कर लिया करो ये अ़मल तुम्हारे लिये बेहतर व पाकीज़ा तर है' (सूरह–मुजादला–58/12)
(इब्ने अबी शैबा–9/521-ह०-32788)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/140)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि जब ये आयत उतरी 'ऐ ईमान वालो जब तुम रसूल से कोई राज़ की बात तन्हाई में अ़र्ज़ करना चाहो तो तुम अपनी बात अ़र्ज़ करने से पहले कुछ सद्क़ा व ख़ैरात कर लिया करो ये अ़मल तुम्हारे लिये बेहतर व पाकीज़ा तर है' पस रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया ऐ अ़ली आपकी क्या राय है क्या एक दीनार काफ़ी है तो मैंने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह लोग इतने की ताक़त नहीं रखते तो फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने पूछा तो कितना होना चाहिये तो मैंने अ़र्ज़ किया कि थोड़े से जौ मुक़र्रर कर दिये जायें कि इतने में दूसरी आयत उतरी ''क्या तुम इस बात से डर गये हो कि (रसूलुल्लाह से) सरगोशी यानी तन्हाई में बात करने से पहले सद्क़ात देने होंगे तो तुमने जब ऐसा न किया तो

अल्लाह ने तुम्हें इस सद्क़ात को अदा करने से मुआ़फ़ फ़रमां दिया तो अब नमाज़ क़ायम रखो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त बजा लाते रहो और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे कामों से खूब आगाह है'' (सूरह-मुजादला-58/13) फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया पस मेरी वजह से अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत पर आसानी फ़रमाई।
(इब्ने हिब्बान-सहीह-8/127-ह०-6941,6942)
(इब्ने अबी शैबा-9/521-ह०-32789)
(नसाई-ख़साइसे अ़ली-1/226-ह०-152)

हज़रत अ़ली ने रसूलुल्लाह के कांधों पर चढ़कर काअ़बे का बुत गिराया

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाते हैं कि जिस रात हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझे अपने बिस्तर पर सोने का हुक्म दिया और खुद हिजरत करके तशरीफ़ ले गये उस रात आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे काअ़बा में मौजूद बुतों के पास ले गये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने वहाँ पहुँचकर मुझसे फ़रमाया कि बैठ जाओ तो मैं काअ़बे की एक दीवार के साथ बैठ गया फिर आप मेरे कन्धों पर चढ़ गये फिर आपने मुझसे कहा कि खड़े हो जाओ तो मैं उठकर खड़ा हो गया लेकिन जब आपने मेरी कमज़ोरी पर तवज्जो की तो फ़रमाया कि तुम बैठ जाओ फिर आप सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम मेरे कन्धों से उतर गये और खुद नीचे बैठकर मुझसे फ़रमाया ऐ अ़ली मेरे कन्धों पर बैठ जाओ पस-

में आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के कन्धों पर चढ़ गया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उठकर खड़े हो गये उस वक़्त मैं अपने आपको इतनी ऊँचाई पर महसूस कर रहा था कि अगर मैं चाहता तो आसमान को छू सकता था और फिर मैं काअ़बा के ऊपर चढ़ गया और आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) नीचे से हट गये पस मैंने उन कुफ़्फ़रों का सबसे बड़ा बुत गिरा दिया ये बुत तांबे का बना हुआ था और फिर मैं काअ़बे से नीचे उतर आया।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/45-ह०-4265)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/188-ह०-122)
(अबू यआ़ाला–अल मुस्नद–1/229-ह०-287)
(कंज़ुल उ़म्माल–7/85-ह०-36516)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/141)

हिजरत की रात रसूलुल्लाह की चादर ओढ़कर उनके बिस्तर पर अ़ली लेटे

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने अपनी जान की बाज़ी लगा दी कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की चादर ओढ़कर उनके बिस्तर पर उनकी जगह लेट गये इससे क़ब्ल मुश्रिकीने मक्का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम को अज़्ज़ियत दिया करते थे हिजरत की रात हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली को अपनी चादर उढ़ा दी जबकि कुरैश हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को माअ़ज़ अल्लाह शहीद करना चाहते थे चुनांचा उन

लोगों ने हज़रत मौला अ़ली को रसूलुल्लाह समझते हुये उनको अज़्ज़ियत देना शुरु की (उनकी ईज़ा रसानियों की वजह से) हज़रत अ़ली पेच व ताब खाने लगे यानी गुस्सा व बेक़रारी और बल खाने लगे तो हज़रत मौला अ़ली की इस कैफ़ियत की वजह से उन मुश्रिकीन को अन्दाज़ा हुआ कि ये रसूलुल्लाह नही हैं बल्कि ये तो अ़ली है तब वो बोले कि हमें तो अस्ल दुश्मनी तुम्हारे साथी यानी रसूलुल्लाह से है।

(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/44-ह०-4263)
(मुस्नद अहमद–2/364-ह०-3062)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/386-ह०-1168)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/599)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/154)

➡ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जब हिजरत का इरादा फ़रमाया तो मक्का मुर्करमा में फ़र्ज़ अदा करने के लिये और उन अमानतों को वापस करने के लिये हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को मक्का मुर्करमा में छोड़ा जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास थीं और जिस शब को आप ग़ार की तरफ़ चले हैं तो उसी शब मुशरिकों ने आपके घर को घेर लिया था उसी शब को हजरत अ़ली को हुक्म दिया कि तुम मेरे बिस्तर पर सो जाना और मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ लेना इन्शा अल्लाह तुम्हें कोई भी तकलीफ़ उन लोगों से न पहुंच सकेगी चुनांचा हज़रत मौला अ़ली ने ऐसा ही किया तो अल्लाह तआ़ला ने हज़रत जिबरईल व हज़रत मीकाईल (अ़लैहिमस्सलाम) पर वही भेजी कि मैंने तुम दोंनों के दरमियान में मुआख़ात करा दी यानी भाई चारा करा दिया और एक की उ़म्र बा निस्बत दूसरे के तवील कर

दी है अब तुम दोंनों फ़रिश्तो बताओ तुम दोंनों में से कौन ऐसा है जो अपने साथी को अपनी ज़िन्दगी दे दे मगर हर एक ने अपनी ज़िन्दगी को तरजीह दी फिर अल्लाह तआ़ला ने उन पर वही भेजी क्या तुम फ़रिश्ते अ़ली बिन अबू तालिब (अ़लैहिमस्सलाम) के मिस्ल भी नहीं हो मैंने अ़ली और अपने नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के दरमियान में मुआख़ात कराई है जिसका नतीजा ये हुआ कि अ़ली मुहम्मद सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम के बिस्तर पर लेटे हैं और वो अपनी जान को मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर फ़िदा करते हैं और उनकी ज़िन्दगी को अपनी ज़िन्दगी पर तरजीह देते हैं

पस तुम दोनों फ़रिश्ते ज़मीन पर जाओ और दुश्मनों से उनकी हिफ़ाज़त करो चुनांचा वो दोंनों ज़मीन पर आये हज़रत जिबराईल हज़रत अ़ली के सिर के पास खड़े हुये हज़रत मीकाइल हज़रत अ़ली के पांव के पास खड़े हुये हज़रत जिबराईल ये निदा कर रहे थे मुबारक हो ऐ अ़ली तुम्हारा मिस्ल कौन है कि अल्लाह तआ़ला मलाइका के सामने तुम पर फ़ख़्र करता है तो अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल पर जब वो मदीना की तरफ़ जा रहे थे हज़रत अ़ली की शान में ये आयत नाज़िल की ''और लोगों में कोई शख़्स ऐसा भी होता है जो अल्लाह तआ़ला की रज़ा हासिल करने के लिये अपनी जान का भी सौदा कर देता है''।

(सूरह–बक़राह–2/207)

(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/606)

रसूलुल्लाह का हज़रत अ़ली के लिये दुआ़-ए-आ़फ़ियत करना

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैं बीमार हो गया तो नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मेरे पास तशरीफ़ लाये तो मैं उस वक़्त ये कह रहा था ''ऐ अल्लाह अगर मेरी मौत का वक़्त आ चुका है तो मुझे राहत अ़ता फ़रमां और अगर मेरी मौत का वक़्त दूर है तो मुझे शिफ़ा अ़ता फ़रमां और अगर ये आज़माइश है तो मुझे सब्र अ़ता फ़रमां तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझसे फ़रमाया ऐ अ़ली तुम क्या कह रहे थे तो मैंने ये कलिमात सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के सामने दोहराये फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अल्लाह अ़ली को शिफ़ा अ़ता फ़रमां और आ़फ़ियत अ़ता फ़रमां हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि फिर उसके बाअ़द मुझे दर्द के हवाले से कभी कोई भी शिकायत नहीं हुई।

(इब्ने हिब्बान–सहीह–8/126-ह०-6940)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–2/327)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/186)

➡ हज़रत अबू लैला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि ऐसी क्या बात कि आप गर्मियों वाले कपड़े सर्दियों में पहनते हैं और सर्दियों वाले कपड़े गर्मियों में पहनते हैं तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने मुझे–

ख़ैबर के दिन बुलाया उस वक़्त मेरी आँखें दुख़्तीं थीं तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी आँखों में बहुत तकलीफ़ है तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरी आँखों में अपना लुआ़बे दहन लगाया फिर फ़रमाया ऐ अल्लाह इनसे गर्मी और सर्दी को दूर फ़रमादे हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि उस दिन के बाअ़द मैंने गर्मी व सर्दी महसूस नहीं की और नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला व आलिहि अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मैं ऐसे शख़्स को बुलाऊँगा जो अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल को महबूब रखता है और अल्लाह तआ़ला व उसका रसूल भी उसको महबूब रखते हैं और वो लड़ाई से भागने वाला नहीं है तो लोग इश्तियाक़ से इन्तिज़ार करने लगे फिर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला व आलिहि अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को बुलाया और उनको झन्डा अ़ता फ़रमाया।

(इब्ने माजा–सुनन–1/72-ह०-117)
(मुस्नद अहमद–1/502-ह०-778)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–2/153-ह०-2286)
(अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/333-ह०-950)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/46-ह०-14)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/224-ह०-151)
(कंजुल उ़म्माल–7/65-ह०-36388)
(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/104)

रसूलुल्लाह को हज़रत अ़ली ने गुस्ल दिया

➡ हज़रत अ़ब्दुल वाहिद बिन अबू औन (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि रसूले अकरम हुज़ूर–

सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपने उस मर्ज़ में जिसमें आपने विसाल फ़रमाया तो उस वक़्त आपने हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया ऐ अ़ली मुझे तुम ही गुस्ल देना तो हज़रत अ़ली ने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मैंने कभी किसी मय्यत को गुस्ल नहीं दिया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अ़नक़रीब तुम इसके लिये तैयार हो जाओगे या तुम्हें आसान कर दिया जायेगा हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि मैंने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को गुस्ल दिया। (इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/234)

➡ हज़रत आमिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) को हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने गुस्ल दिया और आप गुस्ल देते जाते थे और ये कहते जाते थे कि मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों और आप हयात में भी पाकीज़ा थे और वफ़ात में भी पाकीज़ा हैं।
(इब्ने साअ़द–तबक़ातुल कुबरा–2/232)

ग़दीरे खुम के दिन रसूलुल्लाह ने हज़रत अ़ली के इ़मामा बाँधा

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाते हैं कि ग़दीरे खुम के दिन हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने ऐसे इ़मामे से मेरी दस्तारबन्दी की जिसका शमला पीछे लटका दिया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने बदर व हुनैन में जिन फ़रिश्तों के ज़रिये मेरी मदद फ़रमाई उन्होने इसी हैबत के इ़मामे–

बाँध रखे थे फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक ये इमामा कुफ़्र व ईमान के दरमियान फ़र्क़ करने वाला है।
(कंज़ुल उ़म्माल–8/213-ह०-41911,41909)
(तबरी–रियाज़ुन्नज़रा–1/189)
(अल मवाहिबुल लदुनिया–6/272)

रसूलुल्लाह ने सूरह तौबा के अहकाम पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अ़ली को दी

➡ हज़रत अम्र बिन मैमून (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सूरह तौबा में मौजूद अहकाम का ऐअ़लान करने के लिये मक्का मुकर्रमा की जानिब भेजा फिर हज़रत अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को उनके पीछे भेजा हज़रत अ़ली ने हज़रत अबू बक्र से वो अहकाम का सहीफ़ा ले लिया और फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस पैग़ाम को ले जाने का हक़ सिर्फ़ वही रखता है कि जो मुझसे है मैं उससे हूँ यानी हज़रत अ़ली हैं।
(मुस्नद अहमद–3/331-ह०-3062)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/263-ह०-4652)
(नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/139-ह०-76)
(तबरी–रियाज़ुन्नज़रा–1/66)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने सूरह तौबा के अहकाम देकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मक्का की–

तरफ़ भेजा फिर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मुझे यानी हज़रत मौला अ़ली को उनके पीछे र‘वाना किया और फ़रमाया कि मक्का के रास्ते की तरफ़ निकलो और जहाँ पर भी तुम्हारी मुलाक़ात हज़रत अबू बक्र से हो जाये तो उनसे किताब को ले लेना और अह्ले मक्का के सामने उन आयात को तिलावत करना पस मैं उनसे जा मिला और उनसे किताब ले ली तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ वापस लौटे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझे ये हुक्म दिया गया कि इस ज़िम्मेदारी को मैं खुद अदा करूँ या मेरे अह्ले बैत में से कोई इसको पहुँचाये (नसाई–ख़साइसे अ़ली–1/139-ह०-75,76)

रसूलुल्लाह का फ़रमान अगर अ़ली न होते तो मोमिन पहचाने न जाते

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ली अगर तुम न होते तो मेरे बाअ़द मोमिन पहचाने न जाते।
(कंजुल उ़म्माल–7/77-ह०-36477)

रसूलुल्लाह का फ़रमान कि हज़रत अ़ली की पनाह लो

➡ हज़रत सफ़िया (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह औ़रतों में हर एक औ़रत का कोई न कोई–

घर वाला है कि उनसे पनाह ली जाये मगर मेरा कोई घर वाला नहीं है तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हज़रत अ़ली से पनाह लो। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–3/252-ह०-4097)

हज़रत अ़ली से अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल और जिबरईल राज़ी हैं

➡ हज़रत अबू राफ़ेअ़ (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को एक जगह भेजा जब वो वापस आये तो रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अ़ली अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल और जिबरईल तुम से राज़ी हैं। (तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/319-ह०-946)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–9/124-ह०-14748)
(कंजुल उ़म्माल–7/59-ह०-36349)

➡ हज़रत सईद बिन मुसय्यब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान करते हैं कि ग़ज़वा–ए–उहद के दिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) को सोलह (16) के क़रीब ज़ख़्म लगे थे और हर ज़ख़्म उनको ज़मीन पर गिरा देता था फिर उनको जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) उठाते थे।
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/601)

हज़रत अ़ली की वालिदा रसूलुल्लाह के साथ अच्छा सुलूक करती थीं

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) बयान करते हैं कि जब हज़रत अ़ली बिन अबू तालिब

(अ़लैहिमस्सलाम) की वालिदा का विसाल हुआ तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी कमीस उतारकर उनको पहनाई और उनकी क़ब्र में लेटे जब मिट्टी डाल दी गई तो बाअ़ज़ हज़रात ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह हमने आपको इनके अ़लावा किसी के साथ ऐसा करते हुये नहीं देखा तो हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने अपनी कमीस पहनाई ताकि उनको जन्नती लिबास पहनाया जाये और मैं उनकी क़ब्र में लेटा ताकि उन्हें क़ब्र में आसानी हो और ये ख़ातून हज़रत अबू तालिब अ़लैहिस्सलाम के बाअ़द मुझसे अच्छा सुलूक करती थीं (तबरानी–मुअ़जम औसत–5/340-ह०-6935)

सिवाए रसूलुल्लाह व अ़ली के सबकी रुहें निकालने का हुक्म दिया गया

➡ हज़रत अबू ज़र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि शबे मेअ़राज मेरी मुलाक़ात हज़रत इज़राइल अ़लैहिस्सलाम से हुई तो उन्होंने मुझसे पूछा कि आपके चचाज़ाद भाई का क्या हाल है तो मैंने कहा क्या आप उन्हें जानते हैं तो हज़रत इज़राइल ने जवाब दिया कि मैं उनको क्योंकर न जानू कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे तमाम मख़्लूक़ की रुहें उनके मुक़र्ररा वक़्त पर निकालने का हुक्म दिया गया है मगर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की रुह व हज़रत अ़ली की रुह निकालने का मुझे हुक्म नहीं दिया गया और आप दोंनों की रुहें अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी मशय्यत से निकालेगा।

(तबरी–रियाजुन्नज़रा–1/43)

कुरान में हज़रत अ़ली के लिये ख़ैर ही ख़ैर है

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि कुरान मजीद में जो सूरत नाज़िल हुईं हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) उसके मुअ़ामले में अमीर व शरीफ़ साबित हुये हैं चुनांचा अल्लाह तअ़ाला ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के असहाब पर इताब नाज़िल फ़रमाया लेकिन हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) के लिये ख़ैर का ही हुक्म आता रहा। (कंजुल ज़ुम्माल–7/59-ह०-36353)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/363)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुम) से रिवायत है कि एक मर्तबा हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने किसी साइल को अपनी अंगूठी सद्क़ा की फिर हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) नमाज़ पढ़ने लगे कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने साइल से पूछा कि ये अंगूठी तुम्हें किसने दी है साइल ने कहा कि उस रुकूअ़ करने वाले ने दी है कि अल्लाह तअ़ाला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई 'बेशक तुम्हारा (हक़ीक़ी मददगार और) दोस्त तो अल्लाह और उसका रसूल ही है और वो ईमान वाले हैं जो इस तरह नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं कि वो दिल से अल्लाह के आगे झुकने वाले होते हैं' (सूरह–मायदा–5/55) पस आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने ये आयत तिलावत फ़रमाई फिर फ़रमाया कि जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है और ऐ अल्लाह जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तो तू

भी उससे दुश्मनी रख।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/651-ह०-6232)
(हेसमी–मजमउज़्ज़वाइद–7/55-ह०-10978)
(कंज़ुल ड़म्माल–7/59-ह०-36354)

सूरह मायदा की आयत हज़रत अ़ली की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई

➡ हज़रत इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) कुरान मजीद की सूरह मायदा की आयत "ऐ-रसूल जो कुछ आपकी तरफ़ आपके रब की जानिब से नाज़िल किया गया (वो सारा लोगों को) पहुँचा दीजिये" (सूरह–मायदा–5/67) का शाने नुजूल बयान करते हुये फ़रमाते हैं कि ये आयते मुबारका हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की फ़ज़ीलत में नाज़िल हुई है जब ये आयते मुबारका नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली का हाथ पकड़कर फ़रमाया जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है और ऐ अल्लाह जो इससे दोस्ती रखे तू भी उससे दोस्ती रख और जो इससे दुश्मनी रखे तो तू भी उससे दुश्मनी रख इसके फ़ौरन बाअ़द हज़रत ड़मर ने मौला अ़ली से मुलाक़ात की और फिर कहा कि ऐ मौला अ़ली आपको मुबारक हो अब आप मेरे और हर मोमिन व मोमिना के मौला क़रार पाये हैं
(इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी–तफ़्सीर कबीर–12/51)
(इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/237)
(इब्ने अबी हातिम–तफ़्सीर कुरानुल अ़ज़ीम–42/237)
(इमाम जलालुद्दीन सयूती–दुर्रे मन्सूर–2/817)
(इमाम आलूसी–रुहुल मआ़नी–7/318)
(इमाम शौकानी फ़त्हुल क़दीर–2/86)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से फ़रमाते हैं कि ग़दीरे खुम का दिन था जब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) का हाथ पकड़ कर फ़रमाया कि क्या मैं मोमिनो का वाली नहीं हूँ उन्होंने कहा क्यों नहीं या रसूलुल्लाह फिर आपने फ़रमाया जिसका मैं मौला हूँ उसका अ़ली मौला है इस पर हज़रत ऊ़मर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा ऐ मौला अ़ली आपको मुबारक हो आप मेरे और हर मुसलमान के मौला ठहरे पस इस पुर मुबारक मौक़ेअ़ पर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल फ़रमाई 'अल्यौमा अक्मल्तु लकुम दीनकुम' कि आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया (सूरह–मायदा–5/3) (अल विदाया वन निहाया–5/297) (इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी–तफ़्सीर कबीर–11/139) (इब्ने असाकर–तारीख़ मदीना दमिश्क़–42/233, 237) (इमाम जलालुद्दीन सयूती–दुर्रे मन्सूर–2/708)

रसूलुल्लाह ने हज़रत अ़ली की शहादत की पेशीनगोई फ़रमाई

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने मेरे मुताअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि मेरे बाअ़द मेरी उम्मत तुम्हारे ख़िलाफ़ बग़ावत करेगी और तुम मेरे दीन पर क़ायम रहोगे और तुम मेरे तरीक़े पर जिहाद करोगे और ऐ अ़ली तुम्हारी ये दाढ़ी खून से रंगीन हो जायेगी। (हाकिम–अल मुस्तदरक–4/282-ह०-4676,4686)

➡ हज़रत अम्मार बिन यासिर व हज़रत जाबिर (रज़ि अल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह–

(सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से फ़रमाया ऐ अ़ली तुम ख़लीफ़ा बनाये जाओगे और तुम क़त्ल किये जाओगे हत्ता कि तुम्हारी दाढ़ी खून से रंगी जायेगी और तुम्हें इस इस मक़ाम पर ज़ख़्म आयेंगे फिर वहाँ से खून बहेगा और तुम्हें शहीद करने वाला उम्मत का सबसे बड़ा बदबख़्त होगा जैसे ऊँटनी की कौंचें काटने वाला क़ौमे समूद का सबसे बड़ा बदबख़्त था।

(मुस्नद अहमद–1/1294-ह०-18321)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/279-ह०-4679)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/232-ह०-4590)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/170-ह०-171)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–2/106-ह०-2006)
(तबरानी–मुअ़जम औसत–5/534-ह०-7318)
(अबू यआ़ला–अल मुस्नद–1/327-ह०-481, 565, 586)
(कंजुल उ़म्माल–7/71-ह०-36428, 36429)
(सयूती–ख़साइसुल कुबरा–2/252)
(सयूती–तारीख़े खुल्फ़ा–1/177)
(इब्ने असीर–उस्दुल ग़ाबा–2/616)
(इब्ने हजर मक्की–सवाइकुल मुहर्रिका–1/422)

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) फ़रमाते हैं कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) फ़रमाया ऐ अ़ली मेरे बाअ़द मेरी उम्मत तुमसे गद्दारी करेगी और तुम मेरे दीन पर क़ायम रहोगे और तुम मेरी सुन्नत पर क़ायम रहते हुये शहीद किये जाओगे और ऐ अ़ली तुम्हारी दाढ़ी ज़ख़्म की वजह खून से तर हो जायेगी और जिसने तुमसे मुहब्बत की तो उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने तुमसे बुग्ज़ रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा। (कंजुल उ़म्माल–6/292-ह०-32997)

हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम इब्ने मुल्जिम के वार से ज़ख़्मी हुये थे जब आप 21 रमज़ानुल मुबारक की नमाज़े फ़ज्र अदा करने के लिये जा रहे थे तो इब्ने मुल्जिम ने हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) पर जान से मारने के इरादे से वार किया जिससे आप शदीद ज़ख़्मी हो गये तो लोगों ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन हम उस क़ातिल और उसके क़बीले को क़त्ल कर देंगे न कभी उनका कोई लीडर होगा और न रिआ़या तो हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) ने इब्ने मुल्जिम के बारे में फ़रमाया उसे क़त्ल न करना बल्कि तुम उसको गिरफ़्तार करलो अगर मैं फ़ौत हो गया तो उसको क़त्ल कर देना अगर मैं बच गया तो ज़ख़्मों का क़िसास होगा (अहमद बिन हम्बल–फ़ज़ाइले सहाबा–1/312-ह०-944)

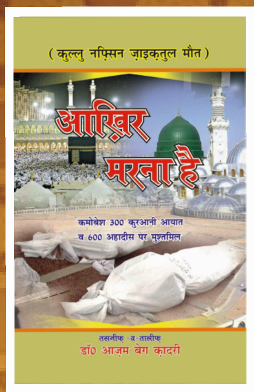
हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के बाअ़द सबसे ज़्यादा फ़ज़ाइल व मनाक़िब और ख़साइस के हामिल हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) की ज़ाते पाक है कुरान मजीद में मौला अ़ली की फ़ज़ीलत में सबसे ज़्यादा आयात नाज़िल हुईं व कुतुबे अहादीस में मौला अ़ली की फ़ज़ीलत में सबसे ज़्यादा अहादीस वारिद हुईं इस एतबार से रसूलुल्लाह के बाअ़द सबसे अफ़ज़ल मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम हैं जैसे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) सबसे ज़्यादा फ़ज़ाइल व मनाक़िब व ख़साइस की वजह से तमाम अम्बियाकिराम (अ़लैहिमुस्सलाम) से अफ़ज़ल व आअ़ला हैं।

★★★★★

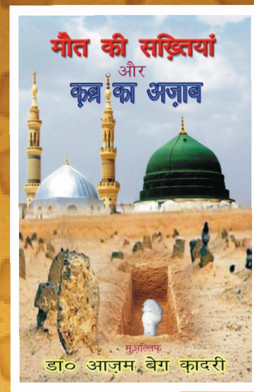
अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तआ़ला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ से और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत और रहमो करम और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलियाकिराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से इस फ़क़ीर ने इस किताब की तालीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे और मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर और मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये- **आमीन**

और इस किताब को बराये ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रुह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये व अपने हबीब के सद्क़े उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये-**आमीन**

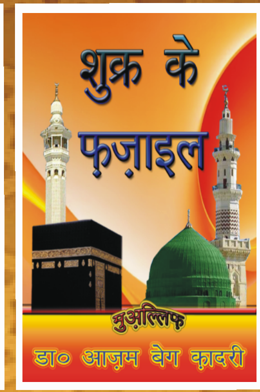
नोट- जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें। 9897626182, 9045442223

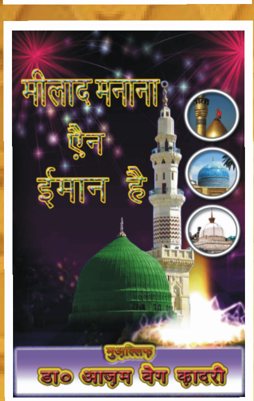

(कुल्लु नफ़्सिन ज़ाइक़तुल मौत)
आख़िर
मरना है
कमोबेश 300 क़ुरआनी आयात
व 600 अहादीस पर मुश्तमिल
डॉ० आज़म बेग क़ादरी

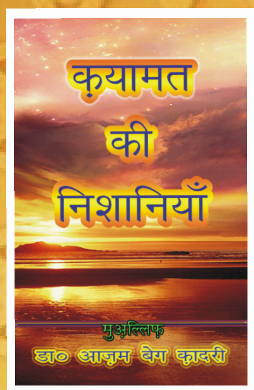

इज़ा ज़ुल्ज़िलतिल अर्दु ज़िल्ज़ालहा
अहवाले
क़यामत
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


मौत की सख़्तियां
और
क़ब्र का अज़ाब
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

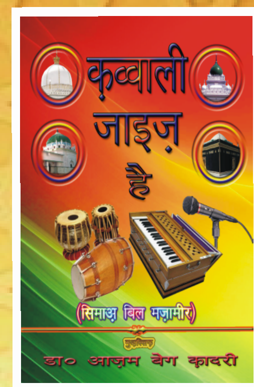

शाने औलिया
व
ज़ियारते क़ुबूर
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी


शुक्र के
फ़ज़ाइल
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


मीलाद मनाना
ऐन
ईमान है
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


क़यामत
की
निशानियाँ
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


तीन तलाक़
का
शरई हल
• क़ुरान व अहादीस की रोशनी में
• एक मजलिस की तीन तलाक़ें हराम हैं
• एक वक़्त में तीन तलाक़ें देने पर
एक ही वाक़ेअ होती है
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

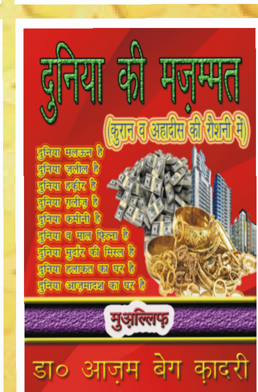

क़व्वाली
जाइज़
है
(सिमाअ बिल मज़ामीर)
डा० आज़म बेग क़ादरी


वब्तग़ू इलैहिल वसीला
वसीला
वाजिब
है
ख़्वातीन का ज़ियारते क़ुबूर जाइज़ है
नियाज़ व फ़ातिहा देना सुन्नत है
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

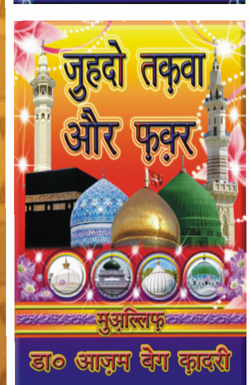

वुस्अते इल्मे मुस्तफ़ा
और
अक़ीदा इल्मे ग़ैब
क़ुरान व अहादीस की रोशनी में
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी


रसूलुल्लाह के मुअजिज़ात
व इख़्तियारात
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

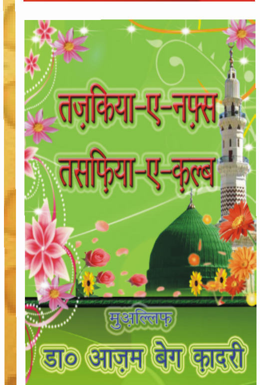

बरेलवी फ़िरक़ा जहन्नमी
और
अहमद रज़ा की कुफ़्रिया इबारात
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

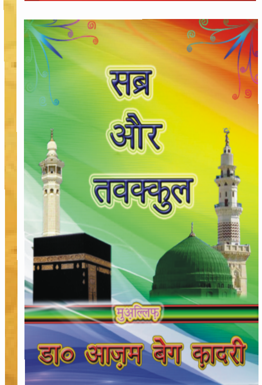

दुनिया की मज़म्मत
(क़ुरान व अहादीस की रोशनी में)
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी

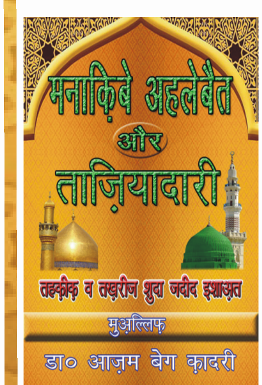

हयाते सय्यदुल अम्बिया
और
अक़ीदा हाज़िर व नाज़िर
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


ज़ुहदो तक़्वा
और फ़क़्र
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


शाने मुस्तफ़ा
क़ुरान व
अहादीस में
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


तज़किया-ए-नफ़्स
तसफ़िया-ए-क़ल्ब
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


सब्र
और
तवक्कुल
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी


मनाक़िबे अहलेबैत
और
ताज़ियादारी
तहक़ीक़ व तख़रीज शुदा जदीद इशाअत
मुअल्लिफ़
डा० आज़म बेग क़ादरी